आज़ादी का अमृत महोत्सव

सेन्ट्रलाइट

केवल आंतरिक परिचालन के लिए

CENTRALITE

खंड/vol. 45 अंक-04

दिसंबर/December-2023

हमारे बैंक की यात्रा

1911 से आपके लिए ''केंद्रित''...

हमारे बैंक के 113वें स्थापना दिवस के अवसर पर बैंक के संस्थापक के फोटो पर माल्यार्पण करते हुए बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव तथा कार्यपालक निदेशकगण.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया एवं आईआईएम मुम्बई के बीच वास्तविक वैश्विक मुद्दों पर अध्ययन के लिए प्रयोगशालाओं का निर्माण हेतु एक समझौता ज्ञापन आदान प्रदान करते हुए बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी. राव एवं आईआईएम मुम्बई के प्रतिनिधि.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका

A Quarterly House - Journal of Central Bank of India

प्रकाशन तिथि - 05.02.2024 • खंड / Vol. 45 - 2023 • अंक - 4 • दिसंबर / December 2023

.. न हि ज्ञानेन सदृशं ..

संपादक
पॉपी शर्मा

संपादक मंडल
वास्ती वेंकटेश
एस. के. गुप्ता
एस. एच. अय्यूबी
राजीव वार्ष्णेय

संपादकीय सहायक
संजय भट्ट
अनिता धुर्वे

Editor
Poppy Sharma

Editorial Board
Vasti Venktesh
S. K. Gupta
S. H. Ayubi
Rajiv Varshney

Editorial Assistant
Sanjay Bhatt
Anita Dhurve

ई-मेल / E-mail
centralite1982@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

Articles Published in this magazine does not necessarily contain views the Bank.

विषय-सूची / CONTENTS

माननीय प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश 4
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश 5
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश 6
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे का संदेश 7
संपादकीय 8
भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास यात्रा @ 5 ट्रिलियन डॉलर 9
चाय की चुस्की वाले किस्स 12
देश के नव निर्माण में युवाओं की भूमिका 15
पर्यावरण संरक्षण में बैंक की भूमिका 18
पर्यावरण संरक्षण 20
भारतीय संस्कृति में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम 21
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया - पर्यावरण संरक्षण 23
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की यात्रा.... 24
THE TIME 28
आंतरिक्ष में भारत की नवीनतम उपलब्धियां 30
हमारे बैंक की यात्रा 33
सेवानिवृत्ति 35
पदोन्नति 35
स्वाभिमान और गर्व की भाषा है हिंदी ! 37
विश्व ओजोन दिवस का इतिहास 40
Operation Risk reduction and Fraud Prevention!! 43
पर्यावरण संरक्षण 45
कविता - हाँ मैं नारी हूँ 47
पर्यावरण व प्राकृतिक संपदाओं का संरक्षण 48
नये साल का पहला दिन 50
समय के माध्यम से एक यात्रा : सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया का 112-वर्षीय गौरवमयी इतिहास 52
दिनांक 21.12.2023 को केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित बैंक के 113वें स्थापना दिवस की कुछ झलकियां.. 54
सतर्कता जागरुकता सप्ताह 55
अन्य गतिविधियाँ 57

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : सुश्री पॉपी शर्मा, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, चन्दरमुखी, नरीमन पॉईंट, मुंबई - 400 001 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

Designed, Edited and Published by Ms. Poppy Sharma for Central Bank of India, Chandermukhi, Narimanpoint, Mumbai - 400 001
Designed and Printed by him at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd. 65, Ideal Industrial Estate, Mathuradas Mills Compound, Senapati Bapat Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013.

माननीय प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं आप सभी को नव वर्ष 2024, मकर संक्राति, पोंगल एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं. इसके साथ-साथ हमारे बैंक द्वारा दिसंबर 2023 तिमाही (क्यू 3) में दर्शाए गए बेहतर कार्य प्रदर्शन के लिए भी मैं आप सबको बधाई देता हूं.

भारत के पहले स्वदेशी बैंक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने विगत 21 दिसंबर 2023 को अपनी यात्रा के 113वें वर्ष में प्रवेश कर लिया है. इस एक सदी से अधिक लंबी यात्रा में हमारे महान बैंक ने अनेकानेक उपलब्धियां प्राप्त की है. बहुत से मील के पत्थर स्थापित किए हैं.

प्रत्येक को यह ध्यान रखना चाहिए कि बैंक का व्यवसाय बढ़ाने के लिए आप अपने ग्राहकों को सदैव सर्वश्रेष्ठ सेवा प्रदान करें. आप अपने शाखा परिसर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाकर रखें जिससे वहां आनेवाले ग्राहक एवं अन्य जन सुखद अनुभव करें. आप प्रत्येक व्यक्ति द्वारा की जा रही हर प्रकार की पूछताछ का सदैव संतोषजनक उत्तर दें. जो हमारे ग्राहक हैं उन्हें अपने साथ निरंतर जोड़कर रखें तथा जो हमारे ग्राहक नहीं है उन्हें बैंक का ग्राहक बनाने का हर संभव प्रयास करें.

उच्च कार्यालयों से आनेवाले सभी प्रकार के परिपत्रों, पत्रों अन्य संप्रेषणों को ध्यानपूर्वक संज्ञान में लाएं जिससे आपकी जानकारी अद्यतन बनी रहे. इनके माध्यम से व्यक्ति के ज्ञान में पर्याप्त वृद्धि होती है, जो अच्छा कार्य करने एवं बेहतर ग्राहक सेवा देने में सहायक होती है.

हमारी हर योजना अपने ग्राहकों की आवश्यकता के अनुसार बनायी जा रही है तथा उन पर लागू ब्याज दरें प्रतिस्पर्धी होती हैं. ऋण प्रस्तावों की त्वरित स्वीकृति के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में ऋण स्वीकृति के संबंध में विशेष कक्ष बनाए गए हैं. इनकी सेवाओं का लाभ उठायें और अपने व्यवसाय को तीव्र गति से बढ़ाएं.

ध्यान रखिये सफलता के शिखर पर पहुंचने के लिए सेवा में निरंतर श्रेष्ठता आवश्यक है.

आगामी पर्वों हेतु हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम.वी. राव)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

नववर्ष 2024 आप सभी के लिए शुभ हो. साथ ही गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं. इसके साथ-साथ मैं बैंक द्वारा इस वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही के शानदार परिणाम के लिए भी आपको बधाई देता हूं.

हमारा प्रिय सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया एक महान संस्था है. दूरदर्शी बैंकर सर सोराबजी पोचखानावाला जी द्वारा स्थापित एवं दीर्घकाल से राष्ट्र की सेवा में समर्पित देश के प्रथम स्वदेशी बैंक में कार्यरत होना सभी सेन्ट्रलाइटों के लिए गर्व की बात है. मैं सर पोचखानावाला जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं साथ ही हमारे प्यारे बैंक द्वारा अपनी 112 वर्षों की गौरवमयी यात्रा पूर्ण करने के लिए आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

वर्तमान दौर परिवर्तन का दौर है. इसमें व्यक्ति की आवश्यकताएं भी निरंतर बदल रही है. अतः नए वित्त वर्ष में आप अपना पूरा ध्यान ग्राहकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने पर रखिये. आज हमारे बैंक के पास समाज के सभी वर्गों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के अनुरुप जमा और ऋण उत्पाद उपलब्ध हैं. इसके साथ ही हमारी ब्याज दरें भी पूर्णतः प्रतिस्पर्धी हैं. संस्था के सतत विकास के लिए आवश्यक है कि सेन्ट्रलाइट अपने ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा प्रदान करें. शाखा में आने वाले ग्राहकों एवं नागरिकों को मित्रतापूर्ण वातावरण की अनुभूति कराएं. उन्हें उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप जानकारी प्रदान करें. उल्लेखनीय है कि उत्कृष्ट ग्राहक सेवा ही आपके लिए विकास का पथ प्रशस्त करेगी.

आप सब अपना ध्यान जमा वृद्धि पर केन्द्रित कीजिए. आप सभी अपनी कासा जमाओं को अधिक से अधिक बढ़ाने पर ध्यान दीजिए. फील्ड में कार्यरत स्टाफ, निकटवर्ती स्कूलों कॉलेजों तथा आवासीय क्षेत्रों में जन सम्पर्क करें. जहां आवश्यक हो वहां शिविर लगाकर कासा खाते खोलने के प्रयास किए जायें. व्यापारिक संघों के साथ बैठकें करके चालू खाते खुलवाए जाएं. आप अपनी शाखा के आस पास के व्यापारियों के चालू खाते अवश्य अपने यहां खुलवाइये.

विभिन्न संस्थाओं से सेवानिवृत होने वाले कर्मचारियों से पर्याप्त समय पूर्व संपर्क करें, उनके सेवांत लाभ अपने यहां जमा करवाने सहित उनके पेंशन खाता भी खुलवाइये.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(विवेक वाही)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम आप सभी को नव वर्ष 2024 एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं. इसके साथ-साथ मैं आपको दिसंबर 2023 तिमाही के अच्छे कार्यकारी परिणामों के लिए भी बधाई देता हूं.

हमारा प्रिय सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया एक सदी से अधिक की यात्रा पूरी कर अब अपने 113वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है. किसी भी व्यवसायिक बैंक के लिए इतनी लंबी सफल यात्रा यह दर्शाती है कि इसने अपने ग्राहकों का पूरा ध्यान रखा है. परिणामस्वरुप उसके ग्राहकों ने उस बैंक के साथ निरंतर अच्छा संबंध बनाकर रखा है.

उतार-चढ़ाव, लाभ-हानि किसी भी संस्था की जीवन यात्रा में होने वाली सामान्य घटनायें है. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने भी कई बार दृढ़ता पूर्वक ऐसी घटनाओं का सामना किया है. हमारा बैंक हर बार विषम परिस्थियों से निकलकर और अधिक सुदृढ़ बना है. बैंक ने हर दौर में अपने ग्राहकों के हित में कार्य किया है. हर वर्ग के नागरिकों की प्रगति के लिए कार्य किया है तथा करता रहेगा. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने राष्ट्र की प्राथमिकताओं का भी सदैव ध्यान रखा है. सरकारी योजनाओं को प्रचारित एवं क्रियान्वित किया है. बैंक प्रारंभ से ही नवोन्मेष योजनाओं को लागू करता रहा है. वर्तमान में इमर्जिंग बिजनेस एवं को-लेंडिंग इनके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं.

आज सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के पास समाज के हर वर्ग की आवश्यकताओं के अनुरुप ऋण और जमा योजनाएं हैं जो प्रतिस्पर्धी ब्याज दरों पर उपलब्ध हैं. हमारा प्रिय बैंक देश के कोने-कोने में अपनी शाखाओं के विशाल नेटवर्क के साथ अपने करोड़ों ग्राहकों के लिए सेवा प्रदान कर रहा है.

एक व्यवसायिक वाणिज्यिक बैंक की सफल यात्रा में उसके कार्मिकों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है. अपने सभी ग्राहकों को उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करने के माध्यम से संस्था की प्रगति में उनकी भूमिका की मैं सराहना करता हूं. यदि सेन्ट्रलाइट अपने सभी ग्राहकों को निरंतर उत्कृष्ट सेवा प्रदान करे तो हमारे प्रिय बैंक की यह सफल यात्रा सदैव इसी तरह आगे बढ़ती रहेगी.

ध्यान रखिए कोई भी व्यवसायिक संस्था अपने ग्राहकों के सहयोग से ही आगे बढ़ती है. ग्राहकों का सहयोग उत्कृष्ट ग्राहक सेवा का ही परिणाम होता है. इसलिए उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान कीजिए और बैंक की प्रगति की यात्रा में योगदान दीजिए.

आगामी पर्वों हेतु हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम वी मुरली कृष्णा)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

नव वर्ष एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं. इसके अतिरिक्त क्यू 3 में बैंक के शानदार परिणामों हेतु हार्दिक बधाई.

देश के प्रथम स्वदेशी बैंक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने भारत राष्ट्र की सेवा करते हुए 112 वर्षों की अपनी यात्रा सफलतापूर्वक कर ली है. 21 दिसंबर 1911 को महान दूरदर्शी बैंकर सर सोराबजी पोचखानावाला जी द्वारा मुंबई में स्थापित हमारा प्रिय बैंक आज देश के कोने-कोने में कार्यरत है. तीस हजार से अधिक सेन्ट्रलाइट देशभर में फैली हुई शाखाओं के लगभग 6 करोड़ ग्राहकों की सेवा के माध्यम से देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान दे रहे हैं.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया परंपरागत बैंकिंग से प्रारंभ करते हुए आज की नवीनतम तकनीकी को अपनाकर देश की युवा पीढ़ी सहित आज हर वर्ग के लोगों को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है.

स्वदेशी की भावना के अनुरुप सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की लगभग दो तिहाई शाखा में देश के ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों में कार्यरत है.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया आधुनिक तकनीक का प्रयोग करने के साथ-साथ भारत सरकार द्वारा अपेक्षित/ निर्धारित कृषि क्षेत्र, एमएसएमई क्षेत्र, रिटेल क्षेत्र और डिजिटल बैंकिंग क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है. बैंक आर्थिक रुप से पिछड़े और कमजोर वर्गों को भी पर्याप्त महत्व प्रदान करता है.

अब सभी सेन्ट्रलाइट यह संकल्प ले कि वे अपने ग्राहकों एवं संभावित ग्राहकों को सदैव सर्वश्रेष्ठ सेवा प्रदान करेंगे तथा इस बैंक को सफलता के सर्वोच्च शिखर पर स्थापित करेंगे.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

(महेंद्र दोहरे)
कार्यपालक निदेशक

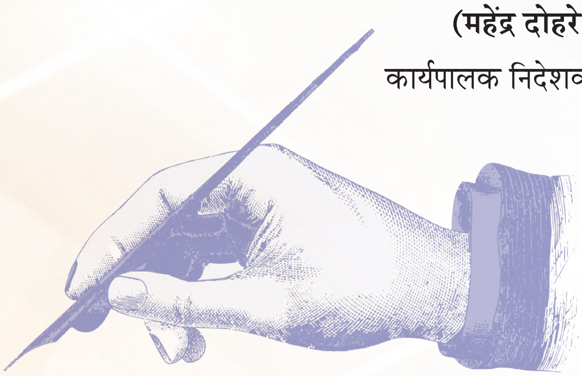

संपादकीय

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियों,

सर्वप्रथम नववर्ष 2024 एवं भारत राष्ट्र के गणतंत्र दिवस की ढ़ेरों शुभकामनाएं. इस पत्रिका के माध्यम से मैं वर्तमान वित्त वर्ष 2023-24 की तीसरी तिमाही के अच्छे परिणामों के लिए आप सभी को हार्दिक बधाई देती हूं.

हमारे प्रिय सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने अपनी स्थापना के 113वें वर्ष में सफलतापूर्वक प्रवेश किया है. यह हम सबके लिए अत्यंत गर्व का विषय है. एक व्यवसायिक संस्था की निरंतर जारी यह अथक यात्रा देशवासियों द्वारा इसे दिए गए दीर्घकालीन सहयोग का ही सुखद परिणाम माना जा सकता है.

भारत में बैंकिंग प्रणाली के लिए कई नवोन्मेष उत्पाद प्रस्तुत करने वाले सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने विभिन्न अवसरों पर बंद होने की स्थिति में पहुंच चुकी कई अन्य बैंकों को भी सहारा देकर उन्हें नया जीवन दिया है. 1969 में राष्ट्रीयकरण होने के बाद बैंक ने और अधिक तेजी के साथ प्रगति करते हुए अपने नेटवर्क का व्यापक विस्तार किया. देश के पहले पूर्ण स्वदेशी बैंक के रुप में प्रसिद्ध सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया अब नवीन प्रौद्योगिकी के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने सदैव अपने सम्माननीय ग्राहकों की आवश्यकताओं का पूरा-पूरा ध्यान रखा है. इसलिए सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया अपने ग्राहकों के विकास और उनकी उन्नति के लिए तो कार्यरत है ही साथ ही अपने कर्मचारियों की प्रगति के लिए भी प्रतिबद्ध बना हुआ है.

इस वित्तीय वर्ष में भी बैंक अपने कर्मचारियों को सभी संवर्गों के लिए पदोन्नति प्रक्रिया प्रारंभ कर चुका है. बैंक अपने ग्राहकों को बेहतर सेवा प्रदान करने के लिए निरंतर नई भर्तियां भी कर रहा है. यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है.

मैं आशा करती हूं कि आप सभी लगातार अच्छा एवं परिणाम दायक कार्य करते रहेंगे.

(पॉपी शर्मा)
महाप्रबंधक - राजभाषा

यदि तुम में सहनशक्ति है तो तुम में किसी बात की कमी नहीं - नारायण दास

भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास यात्रा @ 5 ट्रिलियन डॉलर

भारत विश्व में विकास की अपार संभावनाओं के मामले में पहले स्थान पर दिखता है. अब अगले 10 साल यानी 2033 तक देश में क्या-क्या बदलाव आ सकते हैं और आर्थिक मोर्चे पर भारत कहां पहुंच सकता है, इसके बारे में एक स्पष्ट सी तस्वीर बन रही है. इसके आधार पर कहा जा सकता है कि ये 10 साल भारत को वैश्विक स्तर पर नए शिखर पर पहुंचा सकते हैं. भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है और अपने मजबूत लोकतंत्र और मजबूत साझेदारियों के दम पर अगले 10-15 वर्षों में दुनिया की शीर्ष तीन आर्थिक शक्तियों में से एक बनने की उम्मीद है. भारत की जीडीपी बहुत बढ़ गई है. 2023 में, यह 3.75 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गई, जो 2014 में 2 ट्रिलियन डॉलर के मुकाबले बड़ी वृद्धि है. इसका मतलब है कि भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है, जो पहले 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी. इस अद्भुत प्रगति के कारण लोग अब भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था में "ब्राइट स्पॉट" कह रहे हैं.

कोविड-19 के तीन लहरों तथा रूस-यूक्रेन संघर्ष के बावजूद एवं फेडरल रिजर्व के नेतृत्व में विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं के केन्द्रीय बैंकों द्वारा महंगाई दर में कमी लाने की नीतियों के कारण अमेरिकी डॉलर में मजबूती दर्ज की गई है और आयात करने वाली अर्थव्यवस्थाओं का चालू खाता घाटा (सीएडी) बढ़ा है. दुनियाभर की एजेंसियों ने भारत को सबसे तेजी से बढ़ने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था माना है, जिसकी विकास दर वित्त वर्ष 2023 में 6.5 - 7.0 प्रतिशत रहेगी. राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के नवीनतम आंकड़ों से पता चलता है कि भारत की जीडीपी वित्तीय वर्ष 2022-23 के आखिरी तीन महीनों में 6.1% बढ़ी . पूरे वित्तीय वर्ष 23 के लिए, विकास दर 7.2% थी, जो अपेक्षा से अधिक है. यह अच्छी खबर है क्योंकि इससे पता चलता है कि देश की अर्थव्यवस्था अच्छा कर रही है और मजबूत हो रही है. देश की इस रफ्तार को सहारा देने के लिए अलग अलग राज्यों में एक ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी बनने की होड़ मची है.

भारतीय अर्थव्यवस्था को लेकर भरोसा लगातार मजबूत हो रहा है. एक ताजा अनुमान में कहा गया है कि भारत साल 2030 तक जापान को पीछे छोड़ देगा और एशिया में दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा. फिलहाल भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है. एक अनुमान लगाया जा रहा है कि 2028 तक भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा. भारतीय अर्थव्यवस्था के तीसरे स्थान पर आने की उम्मीदें विश्व की प्रमुख आर्थिक संस्थाओं ने भी जताई है. ग्लोबल संस्था गोल्डमैन सैश ने कहा है कि वित्त वर्ष 2030 में ही भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा. 2075 तक चीन 57 ट्रिलियन डॉलर के साथ दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगा, तो दूसरे स्थान पर 52.5 ट्रिलियन डॉलर के साथ भारत काबिज हो जाएगा. यानी भारतीय अर्थव्यवस्था यूएस, जापान, जर्मनी को आर्थिक विकास की रफ्तार में पीछे छोड़ देगी. इसके अलावा मॉर्गन स्टैनली और एसएंडपी ग्लोबल ने भी आशा जताई है कि साल 2030 तक भारत के आगे केवल अमेरिका और चीन होंगे. इतना ही नहीं साल 2075 तक भारत दूसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बन जाएगा और यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका यानी यूएसए को भी पीछे धकेल देगा. *भाषा की खबर के मुताबिक, भारत के साल 2030 तक 7.3 ट्रिलियन इकोनॉमी के साथ दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की संभावना है. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष यानी आईएमएफ ने भी कहा है कि वित्त वर्ष 2026-27 तक भारत की अर्थव्यवस्था 5 ट्रिलियन डॉलर की हो जाएगी.

आरबीआई गवर्नर श्री शक्तिकांत दास ने हाल ही में कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था और वित्तीय क्षेत्र मजबूत हैं और चुनौतियों का सामना कर सकते हैं. पिछली तिमाही में, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि को बुनियादी ढांचे में निवेश और वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात में वृद्धि से मदद मिली. उन्होंने यह भी कहा कि आगामी वर्ष में अर्थव्यवस्था की वृद्धि लगभग 6.5% रहने की उम्मीद है. आने वाले वित्त वर्ष में देश के भीतर स्थितियां आर्थिक वृद्धि के अनुकूल हैं. ऐसा इसलिए है क्योंकि लोग खरीदारी और व्यवसायों में निवेश करने पर अधिक पैसा खर्च कर रहे हैं. नतीजतन, यह उम्मीद की जा रही है कि अर्थव्यवस्था का विकास जारी रहेगा. यह क्रय प्रबंधकों के सूचकांक जैसे विभिन्न संकेतकों द्वारा इंगित किया गया है, जो विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों के प्रदर्शन को मापता है. विनिर्माण के लिए यह सूचकांक मई में उच्च स्तर पर था, जबकि सेवाओं के लिए सूचकांक अप्रैल और मई में 13 साल

के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया था. इसके अतिरिक्त, घरेलू हवाई यात्रा, माल के परिवहन और ईंधन की खपत जैसी गतिविधियों में वृद्धि हुई है. ये सभी अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक संकेत हैं.

भारत के मुख्य आर्थिक सलाहकार वी अनंत नागेश्वरन ने एक कार्यक्रम में कहा था कि साल 2026-27 तक भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकता है, वहीं साल 2033-34 तक देश की अर्थव्यवस्था 10 ट्रिलियन डॉलर की हो सकती है. अर्थव्यवस्था में सरकार के भविष्य के पूंजीगत व्यय को कर उछाल, कम दरों के साथ सुव्यवस्थित कर प्रणाली, टैरिफ संरचना का गहन मूल्यांकन और युक्तिकरण और कर दाखिल करने के डिजिटलीकरण जैसे कारकों द्वारा समर्थित होने की उम्मीद है. मध्यम अवधि में, बुनियादी ढांचे और परिसंपत्ति-निर्माण परियोजनाओं पर बढ़े हुए पूंजीगत व्यय से विकास गुणक में वृद्धि होगी, और मानसून और खरीफ की बुआई में सुधार के साथ, कृषि भी गति पकड़ रही है.

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जिक्र किया कि भारत की अर्थव्यवस्था इतनी बढ़ी है कि यह दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की रैंकिंग में ऊपर चली गई है. यह 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हुआ करती थी, लेकिन अब यह 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है. भारत ने पिछले साल यूके को पीछे छोड़ते हुए दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का तमगा हासिल किया था. अब भारत से बड़ी अर्थव्यवस्था सिर्फ चार देशों की है. ये देश हैं अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी. इस अद्भुत प्रगति के कारण लोग अब भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था में “ब्राइट स्पॉट” कह रहे हैं.

5 ट्रिलियन डॉलर और 2033-34 तक 10 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है देश:

- मैन्यूफैक्चरिंग का महाराजा बनेगा भारत :

  इस दिशा में हाल ही में एक बड़ा मुकाम आया जब एप्पल ने अपने आईफोन्स की 25 फीसदी मैन्यूफैक्चरिंग भारत से करने की योजना बनाई. हाल ही में कर्नाटक में एप्पल की पार्टनर फॉक्सकॉन के नए निवेश की खबरों ने लोगों को आकर्षित किया है. देश में एप्पल के दो स्टोर खुले जिसमें से एक भारत की राजधानी दिल्ली में और एक आर्थिक राजधानी मुंबई में ओपन हुआ है. माना जा सकता है कि अगले 10 सालों में मैन्यूफैक्चरिंग के पावरहाउस के रूप में भारत नई ऊंचाइयों को छू सकता है. मैन्यूफैक्चरिंग के क्षेत्र में भारत के लिए सेमीकंडक्टर चिप के निर्माण का स्वदेशी रास्ता साफ हो रहा है क्योंकि देश में इसी साल जम्मू-कश्मीर में लीथियम का विशाल भंडार मिला है. लीथियम का इस्तेमाल मुख्य रूप से सेमीकंडक्टर चिप के लिए किया जाता है और बैटरी बनाने के लिए ये महत्वपूर्ण कच्चा माल है. देश में सेमीकंडक्टर चिप के निर्माण का ढांचा मजबूत होने का मतलब है कि भारत तकनीकी सेक्टर में नई ऊंचाइयों को हासिल करने में आगे रहेगा.

- रक्षा क्षेत्र में भारत की बढ़ती साख :

  पिछले कुछ सालों में देश के डिफेंस एक्सपोर्ट में मजबूत बढ़ोतरी देखी गई है. अगले 17 सालों में यानी साल 2040 तक भारत शीर्ष रक्षा निर्यातकों की सूची में टॉप 5 में शामिल हो सकता है. फिलहाल की परिस्थितियों में केंद्र सरकार का 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर के सैन्य हार्डवेयर का एक्सपोर्ट करने के लक्ष्य के करीब पहुंचने का प्रयास जारी है. इस क्षेत्र में भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है. देश में नए डिफेंस इक्विपमेंट की जरूरत भी बढ़ रही है और इनका उत्पादन भी किया जा रहा है. देश की कई डिफेंस मैन्यूफैक्चरिंग कंपनियां रक्षा क्षेत्र के बिचौलियों के चंगुल से निकलकर नई संभावनाओं और नए कारोबारी आयामों को देख पा रही हैं.

- जीएसटी से भरेगा देश का खजाना :

  जुलाई 2023 में देश का जीएसटी (गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स) कलेक्शन 1.65 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रहा था. जीएसटी कानून के लागू होने के बाद ये पांचवा मौका है कि जब देश का जीएसटी कलेक्शन 1.6 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रहा हो. साल 2033 तक ये जीएसटी टैक्स मौजूदा स्थिति से कई गुना आगे बढ़ सकता है और इस टैक्स के जरिए सरकारी कार्यों को पूरा करने के लिए भारी राशि का इंतजाम सरकार के पास हो सकता है. देश में टैक्सेशन की व्यवस्था मजबूत होने से रोड, इंफ्रास्ट्रक्चर, शिपिंग पोर्ट्स, एयरपोर्ट्स और शैक्षिक संस्थानों के लिए सरकार के पास भरपूर रकम रहेगी और इसका असर देश के हर एक क्षेत्र पर सकारात्मक रूप में देखा जा सकता है.

- स्टॉक मार्केट छुएगा नई बुलंदी :

  भारतीय शेयर बाजार हाल ही में अपने ऑलटाइम हाई लेवल को छूकर आगे बढ़ता दिखा है और माना जा सकता है दुनिया का सबसे तेजी से बढ़ता बाजार होगा. भारतीय शेयर बाजार में विदेशी निवेशकों की बढ़ती रुचि के साथ-साथ घरेलू रिटेल निवेशकों की बढ़ती संख्या इसके पीछे का

कारण है. देश में डीमैट अकाउंट खुलने की रफ्तार सबको चकित कर रही है और ये दिखाता है कि स्टॉक मार्केट में निवेश करने वालों की संख्या में हर महीने रिकॉर्ड बढ़ोतरी हो रही है. 18 महीने से जितने डीमैट खाते खुल रहे थे, बीती जुलाई में ये सर्वोच्च स्तर पर खोले गए हैं. जुलाई में डीमैट अकाउंट में रिकॉर्ड बढ़ोतरी से यह संख्या 12.35 करोड़ की नई ऊंचाई पर पहुंच गई है. देश में कमाने वाली लगभग 100 करोड़ जनसंख्या के सामने ये आंकड़ा बेहद छोटा लग सकता है लेकिन ये दिखाता है कि नए निवेशक लगातार स्टॉक मार्केट से जुड़ रहे हैं. स्टॉक मार्केट के जानकारों का मानना है कि भारतीय शेयर बाजार में तेजी जारी रहेगी और अगले 10 सालों में सेंसेक्स 80,000 से 90,000 के लेवल पर भी जा सकता है.

- एयरलाइंस और रेलवे सेक्टर लिखेंगे विकास की नई इबारत:

देश का रेलवे सेक्टर और एयरलाइंस सेक्टर दोनों विकास की नई राह पर आगे बढ़ रहे हैं. एयरलाइंस सेक्टर में प्रमुख कंपनियां बड़े ऑर्डर दे रही हैं. इसका उदाहरण एयर इंडिया का 470 विमानों का बोइंग को ऑर्डर और इंडिगो का 500 नए एयरबस ए320 विमानों का ऑर्डर हैं. इन विमानों का आयात 2023 से 2035 के बीच प्रस्तावित है और माना जा सकता है कि साल 2033 तक कई विमानों का आयात पूरा हो सकता है. एयरलाइंस सेक्टर में हुई इस बड़ी डील का असर देश के पूरे ट्रांसपोर्ट सिस्टम को एडवांस बनाएगा और इसके जरिए भारत की आर्थिक प्रगति किस उच्च स्तर पर जा सकती है, ये अंदाजा लगाकर ही देशवासियों को खुशी होगी.

भारतीय रेलवे की बात करें तो रेलवे मंत्रालय जहां भारत में बुलेट ट्रेन के सपने को साकार करने में जुटा हुआ है, वहीं देश में हाई स्पीड और सेमी हाई स्पीड ट्रेनों का विस्तार तेजी से किया जा रहा है. बुलेट ट्रेन को देश में लाने का सपना भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और जापान के दिवंगत प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे ने मिलकर साकार करने का सोचा था. रेलवे देश की लाइफलाइन है और इसे मॉडर्न बनाने की दिशा में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 508 रेलवे स्टेशनों की आधारशिला रखी है जिन्हें वर्ल्ड क्लास सुविधाओं से जोड़ा जाएगा. ये देश के इंफ्रास्टक्चर, संस्कृति को भी बढ़ावा देंगे.

श्री राजीव अग्रवाल
प्रबंधक - परिचालन
क्षेत्रीय कार्यालय, हुबली

हिन्दी में प्रवीणता

यदि किसी कर्मचारी ने-

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है;या

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

(ग) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है.

चाय की चुस्की वाले किस्से

आज के दौर में बैंकिंग क्षेत्रों में स्टाफ के बीच काम का तनाव बहुत बढ़ता जा रहा है, इसके लिए दिमाग की बत्ती को जलाना पड़ेगा. तो आइये हम, आप और चाय की चुस्की का मजा लेते लेते हमारी शाखाओं में घटित होने वाले छोटे-बड़े किस्सों का आनंद लेते हैं :-

तो बात ऐसी है कि घर जैसी है. नई ब्रांच के नये महकमे में नई बहुरिया की तरह हम वहाँ के राजो रिवाज़ सीख रहे थे और मोटी-मोटी फाइल्स में छुपे हज़ारो लोगों के सपने हमें झाँकते हुए दीख रहे थे. कोई अपना बिजनेस ज़माने, तो कोई पापा का बिजनेस आगे बढ़ाने की उम्मीदें लेकर आया था. किसी के बच्चे की बुलेट इन फाइलों मे उधारी थी, तो किसी गर्भवती महिला की डिलीवरी तक उनका आशियाना उन्हें मिल जाये आदि की बड़ी ज़िम्मेदारी बैंक के हमारे काबिल अफसरों पर थी.

इसी बीच हमारे पास एक पाइरेटेड बॉलीवुड बाला का आगमन हुआ. ज़ुल्फ़ों की बेल बलखा कर गौ माता की पूँछ को मात दे रही थी, पर रक्तवर्ण की लिपस्टिक अधरों पर खूब जँच रही थी. कागराज की कालिमा सरीखा टॉप बदन की लिखावट की हर वर्तनी को पूर्णत: परिभाषित कर रहा था और हाई वेस्टेड जींस के तो कहने ही क्या? मोहतरमा पूरे रौब और रूआब में ब्रांच में पधारी थीं और आबो अंदाज़ में समूचे ब्रह्माण्ड की विश्व सुंदरियों पर भारी थीं. आते ही उन्होंने लिए गए ऋण को बंद करने का फ़रमान हमारे सामने पेश कर दिया. देखते ही हम पर मानसून की बिजली की तरह बमबारी की, “यू नीड टू क्लोज़ माई लोन इमेजिएटली. पे इट एंड क्लोज इट.”

सुनकर हमारा सर्व-ज्ञानी अस्थाई स्टाफ चकराया और हमसे पहले ही बोल पड़ा, “मैडम योर लोन, यू पे, यू क्लोज, व्हाई मैडम पे एंड क्लोज !”

हम वैसे तो लोन डिपार्टमेंट में तैरना सीखने वाली नई मछली हैं, पर इतना ब्रह्म ज्ञान तो हमें था ही कि जिसका लोन है वही भरेगा. हमने ट्रक की स्पीड से जुबान चलाते अस्थाई स्टाफ को समझाया कि मैडम पूरी तैयारी करके पेमेंट करके लोन बंद कराने आई हैं और उनकी फरियाद पूरी करने के लिए हमने पूरे संयम से उनसे पूछा,

“मैडम आप का कौन सा लोन है? उसका अकाउंट नंबर बताइये, हम अभी क्लोज़ करते हैं.”

“देखिये ये सब मुझे नहीं पता.. आप बस लोन बंद कर दीजिये.”

“चलिए लोन का अकाउंट नंबर ना सही, अपना पैन, आधार या रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर बताइये.. हम डिटेल्स और फ़ाइल निकलवा देते हैं ..”

अब तो मैडम कोप भवन में जाने को तैयार!ऐसे कैसे भाई! तमककर बोली, “एक तो मै आप लोगों को पैसे दे रही हूँ और आप धन्यवाद देने की बजाय मुझसे सौ सवाल कर रहीं हैं. दिस इ.ज रिडीकुलस !”

अब हमारे अंतर्मन की वाकपटुता हमारे कस्टमर सर्विस वाले रूप पर सवार होने लगी थी क्योंकि मैडम की शब्द भेदी बाणों की खेप अब हमारे मस्तिष्क के आर पार होने लगी थी. पहले हमने उनको पास की कुर्सी पर बिठाया और बड़े प्यार से समझाया,

“मैडम आप मुझे या बैंक को पैसे देने नहीं आई हैं, आपने बैंक से उधार लिया है उसे चुकाने आई हैं.. और वैसे आपने दिखने में माधुरी दीक्षित ज़रूर लगती हैं.. पर ये मुआ सिस्टम!ये रूप रंग की भाषा कहाँ जानता है? ये तो बस अक्षर और नंबर वाले कागज़ पत्तर ही पहचानता है. तो आपसे अनुरोध है कि आपके इतने बड़े बैग में कुछ तो कागज़, आपकी पहचान जताने वाले ज़रूर होंगे. इस तिलिस्मी पर्स की ज़िप खोलिये और जल्दी से अपना पैन या आधार नंबर बोलिये !”

मैडम को जाने मेरा शायरी वाला अंदाज़ भा गया या फ़िर उधार चुकाने वाला फलसफा समझ में आ गया. उन्होंने तुरत ही डॉक्यूमेंट निकाल कर हमारे हवाले कर दिये.

मैडम के अप्रतिम सौंदर्य का गर्व उनकी सूक्ष्म बुद्धि पर भारी था. अत: उनके ऋण को चुकाने के लिए भी डिटेल्स निकलवाने तक के लिए हमें करनी पड़ी बड़ी मगज़मारी. ख़ैर, जैसे तैसे हमने खाता नबंर निकालकर मैडम को उनका बही खाता समझाया और कितनी धनराशि जमा करने पर खाता बंद हो सकेगा ये गणित समझाया. हमें लगा मैडम अब फटाफट से अपना बोरिया बिस्तरा समेटेंगी और हमारे लंच काल की आधी वेला डकार लेने के बाद अब तो हमें दो दाने अन्न के चुगने देंगी. परन्तु विधि के विधान को कौन टाल सका है आज तक! डब्बे में पड़े जीरा आलू और छोलों को अभी इंतजार करना था क्योंकि हमें माधुरी मैडम के अग्नि बरसाते सवालों का दरिया तैर कर पार करना था. हम फरमाए,

“मैडम आपके गोल्ड लोन का रू 1,53,460/- आउटस्टैंडिंग बैलेंस है. आप कैश या चेक से इसका भुगतान करके अपना खाता बंद कर सकती हैं.”

सुनते ही मानो वज्रपात हुआ! उनके कोमल वक्ष स्थल पर हृदयाघात हुआ. आहत मन और कठोर वाणी तान कर

माधुरी नाम के माधुर्य ने पूरी तरह प्रस्थान कर हम पर प्रत्यँचा चढ़ा दी,

“अरे! हमने तो बस एक लाख चालीस हज़ार लिये थे आपसे. ये रु13,460/- और किस बात के? हम बस डेढ़ लाख भरेंगे और आप इत्ते में ही हमारा लोन क्लोज़ करेंगे. पुराने ग्राहक को डिस्काउंट दीजिए.. हम हमेशा यहीं से लोन लेते हैं.. इसका तो लिहाज़ कीजिए.”

सुनकर हमारी बुध्दि ने लंच त्यागकर इस जड़मति महिला के लिये काउंटर पर वापस बैठने का पश्चाताप किया और हम बैंक मे बैठे हैं या साड़ी की दुकान में, यह सवाल हम पर थोप दिया. फ़िर भी, हमने समझने समझाने का व्यर्थ प्रयास किया, “मैडम, ये अमाउंट आपके लोन की राशि और बैंक के ब्याज को जोड़कर बताई गई है. अगर आप सिर्फ डेढ़ लाख भरेंगी, तो लोन बंद नहीं हो पायेगा.”

बड़े हील हवाले और हुज़्ज़त के बाद उनको बैंक और किराने की दुकान का फर्क समझ आया और उन्होने हमारे सामने एक अन्य बैंक का ब्लेंक चेक लहराया. बोली “इसमें से पैसे निकाल लीजिये और जल्दी से हमारे ऊपर से यह ऋण बंधन काट दीजिए.”

देखकर हमें यह भान हो चला था कि अब युद्ध और घमासान हो जाएगा. अभी तक का दृश्य तो आने वाले तूफ़ान की झाँकी था. मैडम को क्लियरिंग और ट्रांसफर का फर्क समझना समझाना अभी बाकी था.

धीरज धर के हमने अपनी वाणी मे मिश्री घोली, “मैडम ये चेक तो फलाने बैंक का है. आपको इसे क्लियरिंग के लिए भेजना होगा या फ़िर एनईएफटी कराइये. ज़ब पेमेंट क्लियर हो जाये तो आकर अपना सोना ले जाइये. एक बात और, आगे दो दिन छुट्टी है तो चेक क्लियर होने में शायद मंगलवार तक का वक़्त लगे, बुधवार को आइये और उस दिन तक का ब्याज चुकाकर आप अपना लोन बंद कराइये. ध्यान रहे कि तब तक रकम आज से कुछ बढ़ जाएगी, क्यूंकि उस दिन तक के ब्याज की राशि खाते मे चढ़ जाएगी.”

मैडम अब रौद्र रूप धरने को तैयार थी और यहाँ क्षुधा पिपासा हमारे सर पर सवार थी. जैसे तैसे मैडम ने दूसरे बैंक जाकर एनईएफटी करने का प्रण लिया और हमने थोड़ा सा अन्न जल ग्रहण किया. जैसा कि आप जानते होंगे कि शायद हमारी कहानी की नायिका के पास सौंदर्य अपार है, परन्तु उनकी नादानियाँ उन्हें बैंक मे खींच लाती हैं बार बार. तो क्या आज उनका खाता बंद होगा? चलिए जानते हैं.

पिछले दिनों की थकान पर मुट्ठी भर मिट्टी डाल और अपनी उनींदी आँखों को ऑयलाइनर की वक्र रेखा के पीछे सम्हाल अगले दिन हम ब्रांच पहुँचे. हमने अभी अपना बोरिया बिस्तरा जमाया ही था, अपने डेस्क पर विराजित बाल गणेश के सामने शीश नवाया ही था कि माधुरी मैडम का सुमधुर स्वर हमारे कानों मे गूँजा. पता चला मैडम ने हमें शाखा में पौने दस बजे ही दाखिल होते देख लिया था. बस फ़िर क्या, गनमैन भैया और उनकी बन्दूक को अपने नैनो के हथियार से आहत करती हुई हमारे पीछे पीछे आ गईं वो. हमारे शीश उठाते ही मैडम ने अपना आई फ़ोन आगे बढ़ा दिया, “ये देखिये हमारे फलाने अकाउंट से पैसा कट चुका है, अब आप हमारा लोन बंद करके सोना लौटा दीजिए इसी वक़्त तुरंत.”

हमने उन्हें सामने के आसन पर बिठाया और फटाफट फिनेकल देव का आवाहन किया. पासवर्ड का मंत्र फूँक के फ़ारिग हुए और दो चार मेनूज़ की आहुतियाँ देने के बाद अकाउंट बैलेंस का प्रसाद देखकर हमें पता चला कि अभी चेक क्लियरिंग मे है. तुरंत ही मैडम को बताया, “मैडम! अभी आपका चेक आपके इस बैंक की शाखा वाले अकाउंट मे क्रेडिट नहीं हुआ है. आपको थोड़ा इंतज़ार करना होगा. सुनते ही मैडम का माधुर्य करेले की भांति कड़वा होने लगा था.

“अरे! ऐसे कैसे! मैंने अभी तो दिखाया आपको मैसेज. फ़िर देखिये आप. मेरे फलाने अकाउंट से कट गए हैं पैसे. आप बस मेरा लोन अभी के अभी बंद करो! मैं नहीं जानती कुछ. अगर वहाँ से पैसे कट गए तो यहाँ आने ही चाहिए ना तुरंत! बोलते बोलते एप्पल का फ़ोन हमारे मुख मंडल के उतने ही समीप धर दिया जितना आप लोग सुबह उठते ही ठंड के मौसम मे रजाई को अपने पास रखते हैं.

मैसेज मे लिखा था कि उनके अकाउंट का चेक संख्या पिछत्तर अंडर क्लीयरिंग है..जिसे क्लियर होने मे तीन कार्यदिवस का समय लगेगा, साथ ही मनुहार की गई थी कि खाते में वांछनीय राशि रखने की कृपा करें.

हमें पता था कि मैडम बिना मैसेज की पढ़ाई किये हम पर चढ़ाई करने को आमादा हो चुकी हैं. तो हमने एक मार्ग निकाला, हमने वाणी मे मिठास घोली और उनको ज्ञान की कुछ यूँ दी गोली, “मैडम आप एकदम सही कह रहीं हैं, उधर के खाते से पैसे कटने के बाद यहाँ जमा होने ही चाहिए. पर एक बात बताइये!ज़ब आज आप इतनी सुंदर बनकर घर से निकली थीं, तो कितना समय लगा बैंक पहुँचने मे आपको? ”

“यही कोई आधा घंटा!पर आप ये क्यों पूछ रहीं है? अ..आप मेरे लोन को बंद कीजिए बस ...”

हमने शब्दों की कमान सम्हाल कर उनके खाता बंद करो नामक तार सप्तक मे गाये जा रहे राग को बीच मे ही विराम दिया और

फरमाया, "मैडम जैसे आपको घर से निकल कर यहाँ आने में आधे घंटे का समय लगा ना. ऐसे तो हुआ नहीं कि आप ने घर से कदम बाहर निकाला और सीधा बैंक में दाखिल. ठीक वैसे ही, एक बैंक से चेक क्लियर होकर दूसरे बैंक मे पहुँचने तक की प्रक्रिया में एक निर्धारित समय लगता है. जैसा इस मैसेज मे लिखा है."

"अब आप ठहरी एकदम सुपरफास्ट शताब्दी! तो आप एकदम दनदनाते हुए पहुँच गई हैं बैंक में! पर दुर्भाग्यवश एक दिन मे हज़ारों चेक क्लियर होते हैं और उनकी स्पीड आपकी स्पीड से ज़रा सी कम होती है तो पैसे को आते आते ज़रा वक़्त लगता है. तो यूँ समझिये कि वहाँ से आपका चेक निकल चुका है और यहाँ तक के सफ़र मे है. बीच मे कोई स्पीड ब्रेकर ना आया तो आ जायेगा आपकी इस मंजिल तक. जैसे ही चेक यहाँ पहुँचेगा, आपको मैसेज आ जायेगा हमारे बैंक की तरफ से. मैडम विस्फारित नेत्रों से मेरी ओर देख रहीं थीं मानो मैं दुनिया का एक सौ आंठवा अजूबा हूँ. ख़ैर, हमने आगे समझाया, ". जब क्रेडिट का मैसेज आये तब आप तुरंत हमें बताइयेगा हम आपका खाता उसी समय बंद कर देंगे और आपकी अमानत आपके हाथ मे धर देंगे."

जैसे ही पूरा हमारा ये एक्सप्लनेटरी बंद हुआ, मैडम का तार सप्तक का स्वर अब थोड़ा मंद हुआ. गुच्ची के बैग की चमकार और मैडम के कजरे की धार दोनों ने वहाँ से जैसे ही प्रस्थान किया मानो आती हुई बला.. अर्थात बाला के टल जाने पर हमने ख़ुद की किस्मत पर ज़रा सा गुमान किया. हाँ, पता है आज भी खाता बंद नहीं हुआ आप सबकी माधुरी मैडम का. पता है, बड़ी ही निष्ठुर बैंकर हूँ मैं. अब आपको इतनी ही सहानुभूति है तो अगले भाग का कीजिए इंतजार.. अब की बार पक्का माधुरी मैडम की बनेगी सरकार.

सुश्री सोनिया आनंद,
सहायक प्रबन्धक,
आंचलिक कार्यालय,
चंडीगढ़

देश के नव निर्माण में युवाओं की भूमिका

युवाओ के महत्व को समझने के लिए प्रसिद्ध कवि साहिर लुधियानवी द्वारा रचित गीत की पंक्ति बडी सटीक लगती हैं -

''फौलादी हैं सीने अपने, फौलादी हैं बाहें, हम चाहें तो पैदा कर दें चट्टानों पर राहें।''

आज जब हम आजादी के अमृत काल में प्रवेश कर चुके हैं तो यह पिछले 75 वर्षो में देश के संकल्पों को पूरा करने वाले सभी लोगों के योगदान का स्मरण करने का अवसर है। साथ ही अमृत काल के आने वाले 25 वर्षो पर अपनी शक्ति और सामर्थ्य को केंद्रित भी करना है। तभी वर्ष 2047 में एक शक्तिशाली और विकसित राष्ट्र का सपना साकार होगा। यह तभी सम्भव है जब हम युवाओ को पर्याप्त महत्व दे.

स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिन पर प्रतिवर्ष 12 जनवरी को नेशनल यूथ डे मनाया जाता ,उन्होने कठोपनिषद का एक मंत्र कहा था **'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।'**

अर्थात, **''उठो, जागो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य ना प्राप्त हो जाये।''**

स्वामी विवेकानन्द ने एक बार कहा था, **'मेरा विश्वास युवा पीढ़ी, आधुनिक पीढ़ी में है और उनमें से ही मेरे कार्यकर्ता आएंगे।'** यह उद्धरण युवाओं के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन करता है।

एक युवा मन प्रतिभा और रचनात्मकता से भरा हुआ है। यदि वे किसी मुद्दे पर अपनी आवाज उठाते हैं, तो परिवर्तन लाने में सफल होते हैं। भारत के नव निर्माण में युवा शक्ति का महत्वपूर्ण योगदान है। युवा न केवल देश के भविष्य का हितगामी होता है, बल्कि उसकी सक्रिय भागीदारी राष्ट्र को सुदृढ़, समृद्ध, और सामर्थ्यपूर्ण बना सकती है।

जिस तरह से इंजन को चालू करने के लिए इंधन जिम्मेदार होता है. ठीक उसी तरह युवा राष्ट्र के लिए है। यह राष्ट्र की प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करता है। युवा वर्ग को शिक्षा, सृजनात्मकता, और नैतिक मूल्यों की समझ रखने का दायित्व होता है। वे नए और उन्नत विचारों के साथ समस्याओं का समाधान निकालने के लिए सक्षम होते हैं, जिससे विकास की गति बढ़ती है। युवाओं को निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने और उनकी आवाज़ सुनने का अवसर दिया जाना चाहिए। उन्हें सक्रिय नागरिक बनने के लिए सशक्त बनाया जाना चाहिए जो अपने देश के भविष्य को आकार देने में सक्षम हों।

युवा ताकतवर समाज निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, उन्हें सामाजिक जिम्मेदारियों का आदान-प्रदान करने का मौका मिलता है। वे सामूहिक उत्थान के लिए आवश्यक संरचनाओं की ऊर्जा और उत्साह से भरे होते हैं।

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। वे जो काम करते हैं और जिन विचारों को सामने लाने में मदद करते हैं, वे देश को सफलता की राह पर ले जाएंगे। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के बावजूद भारत अभी भी वह आर्थिक सफलता हासिल करने में पीछे है जो दुनिया में अपनी पहचान बनाने में मदद करेगी। हमारे देश को आज़ाद हुए 77 साल हो गए हैं, और इन सभी वर्षों में, भारत भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गरीबी, कुपोषण, उचित स्वास्थ्य सेवाओं की कमी और पुरुषों और महिलाओं के खिलाफ अपराध जैसी कुछ बीमारियों से संक्रमित रहा है। विश्व प्रसन्नता सूचकांक में , लिंग विकास सूचकांक में और वैश्विक बोझ सूचकांक में भारत का स्थान बहुत पीछे हैं। पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न विकास सूचकांकों में भारत की रैंक में सुधार नहीं हुआ है। इन सभी सूचकांकों में रैंक में सुधार करने का एकमात्र तरीका देश के युवाओं को सशक्त बनाना है। युवाओं को जिम्मेदारी संभालने और बेहतर कल के लिए लड़ने के लिए आगे आने की जरूरत है, और यह तभी किया जा सकता है जब युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में उचित अवसर प्रदान किए जाएं।

विज्ञान, तकनीक, और उद्यमिता के क्षेत्र में नवाचार करके युवा ताकत भारतीय अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा सकती है । सरकार को चाहिए कि वह युवा को सही दिशा में मार्गदर्शन करे और विभिन्न क्षेत्रों में उनका समर्थन करे ताकि उनकी ऊजा का सही उपयोग किया जा सके।

राष्ट्र निर्माण या विकास में युवाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है और ऐसा इसलिए है क्योंकि किसी भी राष्ट्र का विकास उसकी भावी पीढ़ी में निहित होता है। लोकतंत्र, अर्थव्यवस्था, प्रौद्योगिकी और चिकित्सा विज्ञान में सुधार सभी युवाओं के हाथों में हैं। गरीबी, बेरोजगारी, ग्लोबल वार्मिंग और कई तरह के प्रदूषण ऐसी समस्याएं हैं जिनका सामना आज दुनिया कर रही है। इन सभी

समस्याओं के समाधान का उत्तर अगली पीढ़ी के पास है।इतिहास गवाह है कि अगली पीढ़ी ही भविष्य की समस्याओं का समाधान है। जैसे-जैसे समय बीतता है, परिवर्तनों के अनुरूप ढलने और समाज में बदलाव लाने की आवश्यकता होती है।

युवा शक्ति को सही दिशा दे करके, हम भारत को विकसित, अग्रणी, और सामर्थ्यपूर्ण बना सकते हैं। इस प्रकार, युवा शक्ति भारत के नव निर्माण में नेतृत्व और सकारात्मक परिवर्तन की ओर कदम बढ़ा सकती है।युवा शक्ति देश के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह समझना जरूरी है कि युवा न केवल एक आवश्यक संसाधन है, बल्कि वह एक सकारात्मक बदलाव की ऊर्जा भी है। युवाओं में दुनिया को बदलने की ताकत है। जब युवा एकजुट होते हैं, तो दुनिया को रहने के लिए एक बेहतर जगह बना सकते हैं,

युवाओं को अच्छे नेता, आविष्कारक और नवप्रवर्तक बनने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि उन्हें समर्थन दिया जाए और भविष्य को बदलने के लिए अच्छा स्वास्थ्य, प्रशिक्षण और शिक्षा प्रदान की जाए। जब युवा किसी पर निर्भर रहने के बजाय काम करेंगे और कमाएंगे तो देश की अर्थव्यवस्था में तेजी आएगी।जैसा कि हम सभी जानते हैं कि दुनिया की आधी आबादी अब 25 वर्ष से कम आयु की है, और 1.8 बिलियन लोग 11-25 वर्ष की आयु के बीच हैं। इसे अब तक की सबसे बड़ी युवा पीढ़ी माना जाता है। स्वीडन, जापान और जर्मनी जैसे कई देशों ने पहले ही युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में अवसर प्रदान करके लाभ उठाना शुरू कर दिया है। जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर बमबारी को 80 साल से अधिक समय हो गया है। उस दौरान हुई जान-माल की हानि और विनाश से कोई भी देश तबाह हो जाएगा, लेकिन जापान नहीं रुका और दशकों से, जापान की सरकार ने युवाओं में निवेश करना शुरू कर दिया है और उस दौरान उन्होंने युवाओं में जो निवेश किया है। वह समय अब उन्हें लाभ दे रहा है। जापान में 80% से अधिक युवा देश की आर्थिक वृद्धि के लिए जिम्मेदार हैं। हाल के वर्षों में, दुनिया भर में युवा सक्रियता में वृद्धि हुई है। अरब स्प्रिंग से लेकर ऑक्युपाई वॉल स्ट्रीट तक, युवा लोग हमारे समय के कुछ सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक आंदोलनों में सबसे आगे रहे हैं। कई मायनों में, ये आंदोलन युवा लोगों की यथास्थिति से हताशा और एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज की उनकी इच्छा से प्रेरित थे।

युवा पीढ़ी आदर्श नागरिकों की निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे उनमें सामाजिक और राष्ट्रीय जिम्मेदारियों का संचारण होता है। युवा शक्ति को समर्थन, प्रेरणा और संबोधन का सही माध्यम प्रदान करना आवश्यक है ताकि वे अपनी अहमियत को समझ सकें और सकारात्मक क्रियाएँ कर सकें।विद्या, विकास, और तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में युवा अपनी ऊर्जा और उत्साह से देश को नए ऊँचाइयों तक पहुँचा सकता है। साथ ही, उन्हें समर्पित, सही दिशा में मार्गदर्शन करने के लिए मेंटरशिप और उच्च शिक्षा का समर्थन प्रदान करना भी महत्वपूर्ण है।

युवाओं का योगदान राष्ट्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी ऊर्जा, उत्साह, नवाचारी दृष्टिकोण और सामर्पण से ही राष्ट्र नए आयाम छू सकता है और विकास की राहों में मदद कर सकता है। इसलिए, हमें युवाओं को समर्पित और निष्कलंक ढंग से प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि वे राष्ट्र के निर्माण में अपने योगदान को सजीव रूप से प्रस्तुत कर सकें। युवा शक्ति आगे बढ़ते हुए, सामाजिक न्याय, समरसता, और विकास के मूल्यों को बनाए रखने में मदद कर सकते हैं। वे नए विचारों के साथ समस्याओं का समाधान निकालने में सक्षम होते हैं, जिससे समाज समृद्ध हो सकता है।

नेल्सन मंडेला ने कहा है कि, **''आज के युवा कल के नेता हैं''** युवा राष्ट्र के किसी भी विकास की नींव रखता है।उनकी ऊर्जा, उत्साह और प्रतिबद्धता से ही हमारे राष्ट्र का भविष्य निर्मित होता है। युवा वर्ग को समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर मिलता है और वे इसे सजीव रूप से निभाने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं । राष्ट्र का सर्वोत्तम विकास हो सकता है जब युवाओं को सही मार्गदर्शन और संरचनित तरीके से मार्गदर्शित किया जाता है और उन्हें समाज की सेवा में जुटाने का अवसर प्रदान किया जाता है।

यदि युवाओं को कोई उपयुक्त कार्य नहीं दिया गया, तब मानव संसाधनों का भारी राष्ट्रीय क्षय होगा. उन्हें किसी सकारात्मक कार्य में भागीदार बनाया जाना चाहिए. यदि इस मानव शक्ति की क्रियाशीलता को देश की विकास परियोजनाओं में प्रयुक्त किया जाए, तो यह अद्भुत कार्य कर सकती है. जब भी किसी चुनौती का सामना करने के लिए देश के युवाओं को पुकारा गया, तो वे पीछे नहीं रहे. प्राकृतिक आपदाओं के समय युवा आगे बढ़कर अपना योगदान देते हैं, चाहे भूकंप हो या बाढ़, युवाओं ने सदैव पीड़ितों की सहायता में दिन-रात परिश्रम किया.

राष्ट्र निर्माण और आर्थिक विकास में युवाओं को शामिल करने का दूसरा तरीका रोजगार के अवसर हैं। कई युवा अपने समुदायों में योगदान देने के लिए उत्सुक हैं लेकिन ऐसा करने के लिए उनके पास संसाधनों या अनुभव की कमी है। युवाओं के लिए नौकरियाँ पैदा करके, हम उन्हें अपने कौशल और प्रतिभा का उपयोग करने का मौका दे सकते हैं और साथ ही हमारे समुदायों के निर्माण में

भी मदद कर सकते हैं।युवा पीढ़ी के जहाँ समाज के प्रति दायित्व हैं, वहीं अपने जीवन निर्माण के प्रति उसे कुछ सावधानी बरतना अपेक्षित हैं.

इस प्रकार, देश के नव निर्माण में युवाओं को सही मार्गदर्शन, सुझाव, और समर्थन के साथ एक अद्भुत भूमिका निभाने का आदान-प्रदान हो सकता है। आत्मनिर्भर भारत अभियान की सफलता राष्ट्र के युवाओं द्वारा राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों को आत्मसात् करते हुए स्वदेशी व कौशल के मार्ग पर चलकर ही प्राप्त की जा सकती है। हमें हर हाल में वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ-साथ भारतीय व प्राचीन परंपरागत विभिन्न कौशलयुक्त विधाओं को भी समन्वित रूप से साथ लेकर आगे बढ़ना होगा जिससे विकराल होती समस्या का उचित व उपयोगी समाधान मिल सके। युवा शक्ति का सही रूप से उपयोग करना, समृद्धि की सामर्थ्यपूर्ण दिशा देने में मदद कर सकता है और एक सशक्त राष्ट्र की दिशा में कदम बढ़ा सकता है।

और अंत में आशुतोष राणा की प्रसिद्ध पंक्तिया युवाओ का समुचित आह्वाहन करती हैं कि-

''हे भारत के राम जगो, मैं तुम्हे जगाने आया हूँ,
सौ धर्मों का धर्म एक, बलिदान बताने आया हूँ ।''

राकेश कुमार सिंह
क्षेत्रीय प्रमुख,
क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर

पर्यावरण संरक्षण में बैंक की भूमिका

पर्यावरण संरक्षण का इतिहास मानव सभ्यता से शुरू होता है. भारत में प्राचीन काल से ही पर्यावरण की रक्षा के लिये अनेक उपाय किए जा रहे है. ऊर्जा के श्रोत सूर्य को देवता तथा जीवनदायिनी नदियों को देवी माना गया है. भारतीय संस्कृति में पेड़ पौधे व पशुओं की पूजा की जाती है. ये सभी सम्मिलित क्रिया कलाप पर्यावरण संरक्षण को बल देते है. आर्थिक विकास की गति ने यद्यपि पर्यावरण को हानि पहुँचाई. मुद्रा का अविष्कार हुआ. धीरे-धीरे बैंको का विकास हुआ. बैंको के स्वरूप में परिवर्तन हुआ. सार्वजनिक बैंको के साथ-साथ अर्थव्यवस्था में निजी बैंक भी कार्य करने लगी. वाणिज्य बैंक जमा स्वीकार करती है और ऋण प्रदान करती है. जब वाणिज्य बैंक हरित परियोजनाओं के संरक्षण वाली योजनाओं को मुद्रा प्रदान करती है तो यह माना जाता है कि वाणिज्य बैंके भी पर्यावरण संरक्षण के पवित्र कार्य को सम्पादित कर रही है. पर्यावरण संरक्षण में वाणिज्यक बैंको की भूमिका वर्तमान समय में बढ़ गयी है.

किसी भी देश की आर्थिक व्यवस्था में बैंकों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान होता है. चाहे शेयर बाज़ार हो या बीमा क्षेत्र, निर्माण क्षेत्र या कृषि क्षेत्र, इन सभी क्षेत्रों में बैंकों की भूमिका महत्वपूर्ण है. अगर हम इतिहास के पन्नों को पलटे तो उसमें भी यही पाएंगे कि बैंकों ने आर्थिक अवस्था को सुधारने में बहुत ही अहम भूमिका निभाया है. आज भी सरकार की किसी भी महत्वपूर्ण योजना का कार्यान्वयन बैंकों के थ्रू ही किया जाता है. बात चाहे किसी बड़े परियोजना क्रियान्वयन की हो या फिर निधि प्रबंधन की हो, बैंकिंग व्यवस्था सबसे आगे इस कार्य को अंजाम देते हैं. वर्तमान समय में विज्ञान काफ़ी आगे निकल चुका है और मानव काफ़ी विध्वंसकारी बन चुका है इसीलिए अब भी पर्यावरण संरक्षण एक अहम मुद्दा है और इसके ऊपर विकसित, विकाशशील और अविकसित देश बहस कर रहे हैं. तो अब सवाल ये आता है कि क्या आज के इस ज्वलंत समस्या में भी बैंकों का कोई योगदान या फिर अहम भूमिका हो सकता है? इसका साधारण सा जवाब है, हाँ आज के दिन में पर्यावरण संरक्षण के इस ज्वलंत समस्या को समाधान करने में भी बैंकों की अहम भूमिका है. इससे ड्रीम बैंकिंग कहा जाता है.

सभी कार्य धैर्य से होते हैं, जल्दबाज मनुष्य सिर के बल गिरता है - शेख सादी

ग्रीन बैंकिंग एक ऐसी व्यवस्था है जिसके द्वारा बैंकिंग व्यवस्था से कार्बन फुटप्रिंट को कम किया जा सकता हैं. इस ग्रीन बैंकिंग व्यवस्था के भीतर जब भी किसी विकल्प को फाइनेंस किया जाता है तो इस बात पर भी विचार किया जाता है कि इस फाइनेंस से समाज और पर्यावरण के ऊपर क्या असर होगा और क्या इससे हमलोग पर्यावरण और जीव जाति को समान तरीक़े से सतत विकास कर सकते हैं? ग्रीन बैंकिंग व्यवस्था के कुछ उदाहरण हैं:- ग्रीन बॉन्ड, ग्रीन ऋण, ग्रीन उत्पाद और ग्रीन सेवाएँ. ग्रीन बॉण्ड के माध्यम से आर्थिक अवस्था में निवेशकों से पैसों को निवेश किया जाता है किसी ऐसे विकल्प में जिसके माध्यम से कहा पर्यावरण के संरक्षण में वृद्धि हो. उदाहरण के तौर पर अगर ग्रीन बॉण्ड के माध्यम से निवेशकों से पैसा उठाया जाता है और इसके द्वारा एक ऐसे ही पवन चक्की परियोजना की स्थापना की जाए जहाँ से विद्युत उत्पादन हो सके तो इससे पर्यावरण संग्रह क्षण भी किया जा सकता है और साथ ही मनुष्य की आवश्यकता भी पूरी हो सकती है. उसी तरह ग्रीन लोन के माध्यम से ऐसे विकल्पों की स्थापना की जाती है जिससे कि पर्यावरण संरक्षण में सहायक हो सके. उदाहरण के तौर पर अगर वो बैटरी चलित बस को ख़रीदने के लिए लोन दिया जाए तो उसे पेट्रोल और डीज़ल का ख़र्चा भी नहीं होता और आख़िरकार पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है. इसी तरह ग्रीन पदार्थ और ग्रीन सेवाएँ भी जारी किए जा सकते हैं क्योंकि ग्राहकों को उनकी सुनो आवश्यकता को पूरा कर सके और साथ ही साथ पर्यावरण का संरक्षण भी हो सकता हैं .

इन सब के अलावा बैंक अपनी आंतरिक नैतिक कार्यों में भी ग्रीन बैंकिंग के विकल्पों का इस्तेमाल करते हैं. मुख्य रूप से पहले जब भी किसी ग्राहक को कोई ऋण की आवश्यकता होती थी तो वो है लोन एप्लीकेशन फ़ॉर्म को कागज के माध्यम से किसी भी बैंक की शाखा में जमा करते थे लेकिन अब यह ऋण निवेदन पत्र जो है वो ऑनलाइन माध्यम से किया जा सकता है जिससे की किसी भी कागज का इस्तेमाल नहीं होता और इससे पर्यावरण का संरक्षण किया जा सकता है. उसी तरह लोगों को उनके खाते में हुए लेन देन का स्टेटमेंट जानने के लिए कागज़ पर प्रिंट करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वो इंटरनेट बैंकिंग या मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से अपने खाते में लेन देन की पूरी जानकारी पा सकते हैं. उसी तरह पहले जब एटीएम मशीन या पीसी मशीन में कोई भी लेन देन का प्रकाशन किया जाता था तो उसके सबूत के तौर पर छोटे काग़ज़ के टुकड़ों में प्रिंट दिया जाता था परंतु अभी की यही चीज़ मैसेज के माध्यम से. उसी प्रकार कई सरकारी योजना है जो कि बैंकों के माध्यम से अपने आप चलाया जाता है वो भी अभी ऑनलाइन पोर्टल पर काम करना शुरू कर दिए हैं जिससे की एक कागज़ का इस्तेमाल पूरी तरह से बंद हो जाता है और इससे पर्यावरण का संरक्षण होता है. अब मोबाइल बैंकिंग और इंटरनेट बैंकिंग का इस्तेमाल करने के कारण ग्राहकों की संख्या शाखाओं में कम हो गई है जिससे कि बैंकों में लंबी धाराएँ नहीं लगती और इससे बिजली का भी बचत होता है. अभी तो सोलर ATM का भी कॉन्सेप्ट आया है जिसमें कि ATM मशीन को सोलर पैनल और बैटरी के द्वारा प्रचलित किया जा सकता है और इसमें विद्युत की आवश्यकता नहीं होती.ग्राहक के मोबाइल फ़ोन में चला जाता है जिससे वो अपने खाते में लेन देन की पूरी जानकारी और साथ ही भूत, वर्तमान का बैलेंस भी देख सकते हैं .

इन सब के अलावा ग्रीन बैंकिंग को अब प्रचलित करने और लोगों के बीच में पर्यावरण संरक्षण का विचार जागृत करने के लिए कुछ ग्रीन बैंकिंग के अवधारणा भी इस्तेमाल किए जाते हैं जैसे की ग्रीन एटीएम पिन, ग्रीन कस्टोमर काउंटर, ग्रीन टोकन और ग्रीन निवेदन पत्र. कई ग्राहक सेवा केंद्रों पर आपको अगर किसी सेवा का लाभ उठाना है तो आपको एक निवेदन पत्र जो कि कागज से बना हुआ रहता है उसको भर के वहाँ पे जमा करना पड़ता है और साथ ही आप के निवेदन के अनुसार जो भी आपको सेवा दिया जाता है वो भी एक कागज़ के पन्ने पर आपको दिया जाता था. परंतु अब जब भी आप किसी ग्राहक सेवा केंद्र या बैंक काउंटर पर जाते हैं अपनी कोई सेवा के बारे में पूछताछ करने के लिए तो आप ग्रीन टू किल या फिर मोबाइल बैंकिंग के ज़रिए अपना निवेदन जमा कर सकते हैं और सेवा केन्द्र आपको मोबाइल मैसेज के माध्यम से वही सेवा और जानकारी आपको उपलब्ध करा देती है. इन सब से यही सीख मिलती है कि कागज का इस्तेमाल कम करना मतलब पेड़ों को बचाना जिससे कि पर्यावरण का संरक्षण हो सकता है. उसी प्रकार ग्राहकों का शाखाओं में कम आना मतलब बिजली की बचत हो जिससे भी पर्यावरण का संरक्षण होता है. इसलिए हम यह कह सकते हैं कि बैंकों का पर्यावरण संरक्षण में एक अहम भूमिका है. ठीक उसी प्रकार जिस तरह से उनका किसी भी अर्थव्यवस्था में मुख्य भूमिका होती है. इससे यही सीख मिलती है कि जिन लोगों का अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका होता है उन लोगों को पृथ्वी के जीव जन्तु और पर्यावरण का सुरक्षा की भी ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए.

अनादि विश्वास
क्षेत्रीय प्रमुख
क्षेत्रीय कार्यालय, भुबनेश्वर

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण वह आस-पास का वातावरण है जिसमें जीवित प्राणी रहते हैं और कार्य करते हैं. एक जीव द्वारा जीवित रहने के लिए आवश्यक हर चीज पर्यावरण द्वारा प्रदान की जाती है. इसमें शारीरिक, रासायनिक और प्राकृतिक बल शामिल हैं, जो जीवित प्राणियों के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं.

पर्यावरण समय की शुरुआत से मानव जाति की सेवा कर रहा है, और ऐसा करना जारी रखा है.लेकिन पिछले कुछ दशकों से, प्रकृति मानव जाति के हाथों पीड़ित है और इसके लिए भुगतान पहले ही शुरू हो गया है. हाल के शोधों ने यह साबित कर दिया है कि अगर इस असंतुलन के कारण को सही नहीं किया गया तो प्रतिपूर्ति आ जाएगी. इस कयामत को केवल जल्द से जल्द अपने पुनरुद्धार के लिए किए गए प्रभावी उपायों से ही दूर किया जा सकता है.

हमारा पूरा मानव अस्तित्व प्रकृति पर ही निर्भर है. हम सबसे जटिल निर्माणों से लेकर एक छोटे पिन के लिए प्रकृति पर निर्भर हैं. मनुष्यों द्वारा पारिस्थितिक तंत्र में अनावश्यक रुकावट के कारण विभिन्न जानवरों और पौधों की प्रजातियां विलुप्त हो गई हैं या विलुप्त होने के कगार पर हैं.

ओजोन परत जो हमारे वातावरण में प्रवेश करने से सूरज की पराबैंगनी किरणों को रोकती है, पर्यावरण में प्रदूषण पैदा करने वाली हानिकारक गैसों में वृद्धि के कारण नष्ट हो रही है. बढ़ती मानव आबादी की बढ़ती मांगों के कारण प्रदूषण बढ़ रहा है. पहली आग लगने के बाद से मनुष्य ने पर्यावरण को प्रदूषित करना शुरू कर दिया. तब से लेकर अब तक, मनुष्य विकास के नाम पर पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है. ओजोन रिक्तीकरण और ग्रीनहाउस प्रभाव के संचयी प्रभाव के कारण पृथ्वी पर तापमान लगातार बढ़ रहा है जिसके परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग हो रही है.

जिसके परिणामस्वरूप ध्रुवों पर ग्लेशियर पिघल रहे हैं और समुद्र के स्तर में वृद्धि में योगदान दे रहे हैं. मनुष्यों द्वारा बसे कई प्रमुख शहरों में अगले कुछ दशकों में पानी में डूबने की भविष्यवाणी की जाती है. इस पर्यावरणीय क्षरण के बाद के प्रभाव हमारी कल्पना से परे हैं. समय की आवश्यकता है कि हम अपने पर्यावरण को सर्वोत्तम तरीके से संरक्षित करें, न केवल इसलिए क्योंकि ऐसा करना हमारा नैतिक कर्तव्य है, बल्कि इसलिए कि नुकसान से बचे रहने का हमारा एकमात्र तरीका है.

औद्योगीकरण के साथ-साथ जनसंख्या में वृद्धि के कारण पर्यावरण को क्षति पहुंच रही है. पर्यावरण के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है कि मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का सततपोषणीय उपयोग करें ताकि भविष्य कि पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध रहे.

भारत की संसद द्वारा पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण के प्रयास में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 में पारित किया गया. इस अधिनियम की स्थापना का उद्देश्य लोगों को मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के निर्णयों को लागू करना था. यह पर्यावरण की सुरक्षा और सुधार और पर्यावरणीय खतरों की रोकथाम के लिए था.

दूसरों की तुलना में बेहतर बनने की दौड़ में पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने से रोकने के लिए पर्यावरण संरक्षण अधिनियमों को लागू किया गया है. व्यक्ति सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं. ये कृत्य उन्हें एहसास दिलाने का एक तरीका है कि हम पर्यावरण क्षरण के कगार पर खड़े हैं.

हालाँकि, ये सभी प्रयास तब तक व्यर्थ जाएंगे जब तक कि लोग पर्यावरण को बचाने की अपनी ज़िम्मेदारी नहीं समझते. हम सभी को, अपने पर्यावरण को बचाकर, अपने ग्रह को बचाने के लिए व्यक्तिगत रूप से एक साथ आना होगा.

विवेक कुमार
मुख्य प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय गया

भारतीय संस्कृति में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम

भारतीय संस्कृति भारत में एमएसएमई के लिए रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य करती है. बदले में, इन सूक्ष्म और लघु व्यवसायों का हमारी अर्थव्यवस्था में दोहरा महत्व है पहला, ये उद्यम स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक सामान-आधारित एमएसएमई स्थानीय समुदायों को हर मौसम में रोजगार प्रदान करके स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करते हैं.

एमएसएमई, सांस्कृतिक वस्तुओं का प्रावधान करते हुए, संस्कृतियों, आर्थिक विकास और टिकाऊ प्रथाओं के समामेलन को प्रदर्शित करता है. जनसंख्या का विशाल आकार, विश्वासों और परिणामी रुचियों और प्राथमिकताओं संदर्भ में इसकी विविधता भारत में सांस्कृतिक वस्तुओं की बढ़ती मांग को बढ़ावा देती है. ऐसी माँगों से उत्पन्न रोजगार के अवसरों की एक श्रंखला स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे माल की निकासी, सांस्कृतिक वस्तुओं के निर्माण और उन्हें स्थानीय खुदरा बाजारों और मेलों में बेचने की ओर ले जाती है. इस भूमि मे हर किसी को देने के लिए कुछ न कुछ है. सर्वोत्कृष्ट सांस्कृतिक संपत्तियों और क्षेत्रीय विशिष्टताओं की प्रचुरता का उपयोग करते हुए, भारत में छोटे पैमाने के व्यवसाय स्थायी रूप से अत्यधिक विभेदित और अति स्थानीयकृत बाजारों को लक्षित करके फलते-फूलते हैं.

सबसे पहले, संस्कृति की शक्ति केवल जीवन जीने और जश्न मनाने के लिए एक साझा विश्वास और अभ्यास प्रदान करने में निहित नहीं है, यह आर्थिक प्रणालियों में भी प्रचुर योगदान देता है. भारत में एमएसएमई के पास एक मजबूत क्षेत्रीय और सांस्कृतिक अंतर्निहितता है. संस्कृति की विविधता को देखते हुए, भारत में प्रत्येक क्षेत्र का अपना विशिष्ट भोजन, कपड़ा और शिल्प है, जो अत्यधिक विभेदित उत्पादों की मांग पैदा करता है जिन्हें उन क्षेत्रों से संबंधित सूक्ष्म और लघु व्यवसायों द्वारा पूरा किया जा सकता है. उदाहरण के लिए, उत्तर-पूर्वी राज्य नागालैंड में मनाए जाने वाले हॉर्नबिल उत्सव में, भाग लेने वाली प्रत्येक जनजाति की अपनी अलग-अलग सांस्कृतिक वस्तुएँ होती हैं, जो कई छोटे उद्यमों को व्यवसाय के अवसर प्रदान करती हैं.

दूसरा, ऐसे महाद्वीपीय आकार के देश में विशेष रूप से पालन की जाने वाली संस्कृतियाँ और परंपराएँ जटिल और सूक्ष्म हैं. केवल अति-स्थानीयकृत सूक्ष्म आर्थिक गतिविधियाँ ही अति-स्थानीयकृत संस्कृतियों द्वारा बनाई गई वस्तुओं की मांगों को पूरा कर सकती हैं.

- उत्तराखंड में पिसी लून, मसालों और स्थानिक हिमालयी जड़ी-बूटियों के साथ पिसा हुआ विभिन्न प्रकार का स्वादयुक्त नमक, उत्तराखंड के समस्त घरों में लोकप्रिय रूप से खाया जाता है. इसकी क्षमता और इसके स्वाद को देखते हुए, उत्तराखंड में कुछ महिला-उन्मुख छोटे व्यवसायों और गैर-लाभकारी संगठनों ने अब पहाड़ी व्यंजन सामग्री और इसके विभिन्न प्रकारों को देश के अन्य हिस्सों में भी बेचना शुरू कर दिया है.
- मध्य भारत में जाने पर, हम देखते है कि छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले की गोंड जनजाति ने शरीर पर टैटू गुदवाने की अपनी सदियों पुरानी प्रथा गोदाना में नवीनता ला दी है. जनजाति ने कपड़ों और परिधानों पर टैटू डिज़ाइन लागू करके गोदना कला को बदल दिया है, जिससे उनकी अनूठी पारंपरिक कला को संरक्षित करते हुए नए छोटे पैमाने के कपड़ा उद्यमों का उदय हुआ है.
- नीचे दक्षिण की ओर जाने पर, केरल के अरनमुला गांव में, किसी को स्थानीय कारीगर तथाकथित जादुई दर्पण बनाने में लगे हुए मिलेंगे, जो प्रतिबिंब के लिए बिना किसी चांदी की कोटिंग के मिश्र धातु से बना होता है. ये कई स्थानीय रीति-रिवाजों और परंपराओं का एक अंश मात्र हैं जो भारत में लाखों लोगों को सूक्ष्म, लघु और मध्यम(एमएसएमई) व्यवसाय और रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं.

एक आकर्षण देने के लिए, दिल्ली के महरौली क्षेत्र में, 'फूल वालों की सैर' नामक फूल विक्रेताओं का एक गूढ़ वार्षिक जुलूस आयोजित किया जाता है, जिसमें बड़े पुष्प पंखे (पंख) को एक प्राचीन हिंदू मंदिर से मध्ययुगीन सूफ़ी दरगाह तक ले

जाया जाता है. जुलूस की यह विरासत न केवल क्षेत्र की गंगा-जमुना तहज़ीब का सांस्कृतिक प्रमाण है, बल्कि केवल इस आयोजन के लिए उपयोग किए जाने वाले दुर्लभ पुष्प पंखों के निर्माताओं के लिए एक अनूठा व्यावसायिक अवसर भी प्रदान करती है. यह उत्सव में सांप्रदायिक सद्भाव, भारतीय संस्कृति की विशिष्टता को भी प्रदर्शित करता है.

देश के दूरदराज के इलाकों में केवल विशिष्ट और अक्सर समुदायों द्वारा मनाए जाने वाले दुर्लभ उत्सवों की ऐसी सूक्ष्म आवश्यकताएं असेंबली लाइनों और उत्पाद मानकीकरण द्वारा विशेषता वाले बड़े पैमाने पर विनिर्माण प्रणालियों द्वारा पूरी नहीं की जा सकती हैं. यद्यपि भारत एक मजबूत बड़े पैमाने पर उत्पादन की ताकत भी विकसित कर रहा है, अत्यधिक विभेदित सांस्कृतिक वस्तुओं की पूर्ति करने वाले सूक्ष्म और लघु उद्यमों की उपस्थिति लोगों की सांस्कृतिक जरूरतों को पूर्ण करती है.

स्थानीय सूक्ष्म और लघु व्यवसायों द्वारा सांस्कृतिक वस्तुओं के उत्पादन की आर्थिक प्रणाली महत्वपूर्ण आत्मनिर्भरता और स्थिरता द्वारा चिन्हित है. ऐसी वस्तुओं के उत्पादन में उपयोग किया जाने वाला कच्चा माल अक्सर स्थानीय रूप से प्राप्त किया जाता है, और निष्कर्षण प्रक्रिया पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ होती है. उत्पादन अत्यधिक श्रम गहन है, इसमें स्थानीय श्रम की आवश्यकता होती है और इसमें भी उच्च स्तर की महिला कार्यबल शामिल होती है.

उदाहरण के लिए, ओडिशा, बिहार और राजस्थान क्षेत्रों में पट्टचित्र, मधुबनी और फड़ कला रूपों के लोक कलाकार रंगों और जैविक पेंटिंग सतहों के लिए स्थानीय रूप से प्राप्त प्राकृतिक रंगों पर भरोसा करते हैं. ये व्यवसाय बड़े रोजगार के अवसरों और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के साथ आत्मनिर्भर टिकाऊ अर्थव्यवस्था बनाने में योगदान देते हैं.

सूक्ष्म और लघु उद्यमों का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू अपने उत्पादों के विपणन में उनकी गतिशीलता है. जैसा कि उल्लेख किया गया है, आदिवासी उद्यमियों ने अपनी पारंपरिक कला में नवीनता लाई है, जैसा कि कपड़ा आधारित गोदना कला के उपयोग के मामले में हैं. इसी तरह, उत्तराखंड में, उद्यम बड़े उपभोक्ता आधार को पूरा करने के लिए पिसी लून के विभिन्न स्वाद बना रहे हैं.

- इन उद्यमों के दोहरे महत्व को समझते हुए, 2023-24 के हालिया बजट में, भारत सरकार ने ओडीओपी (एक जिला, एक उत्पाद), जीआई उत्पादों और अन्य राज्यों के पारंपरिक उत्पादों के प्रचार और बिक्री के लिए हर राज्य में 'यूनिटी मॉल' स्थापित करने का कदम उठाया है. आत्मनिर्भर भारत की सुविधा के लिए, शिल्पकारों को एमएसएमई के साथ एकीकृत करने के लिए पीएम विकास योजना के तहत एक पैकेज की घोषणा की गई है. मूल्य श्रंखलाएं, उनकी गुणवत्ता, पैमाने और बाजार पहुंच को बढ़ाना.

- इसके अलावा, भारतीय शिल्प परिषद, ट्राइब्स इंडिया, ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा सरस और राज्य एम्पोरियम जैसे संगठन हमेशा सार्वजनिक जागरूकता फैलाने, कुटीर उद्योगों को बड़े बाजार प्रदान करने और उन्हें उभरती जरूरतों के अनुकूल बनाने में मदद करने के लिए मौजूद रहे हैं.

- 'मेक इन इंडिया' का दर्शन और 'आत्मनिर्भर भारत' के सिद्धांत सदियों पुराने गूढ़ ज्ञान, कौशल सेट और स्थानीय श्रम आपूर्ति के साथ उत्पादित स्थानीय सांस्कृतिक वस्तुओं में व्यवस्थित रूप से सन्निहित हैं. जनता की अति स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने की निरंतरता में, इन सूक्ष्म-आर्थिक गतिविधियों में से कई का भविष्य का लक्ष्य नवप्रवर्तन करना और एक बाहरी दृष्टिकोण रखना है.

इन सबसे यह निष्कर्ष निकलता है कि अपनी संस्कृति को छोड़े बिना भी हम अपने देश को उन्नति के मार्ग पर ले जा सकते हैं. अपनी सभ्यता और संस्कृति को अपनाए रहने से हमारा कद कहीं ऊँचा हो जाता है.

तारा चंद मीना
उप क्षेत्रीय प्रमुख/सहायक महाप्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

न कोई किसी का मित्र है और न शत्रु. संसार में व्यवहार से ही लोग मित्र ओर शत्रु होते रहते हैं - नारायण पंडित

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया - पर्यावरण संरक्षण

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की शताब्दी-लंबी यात्रा में पर्यावरण संरक्षण के प्रति उल्लेखनीय प्रतिबद्धता के साथ एक परिवर्तनकारी विकास देखा गया है. जो इसे स्थायी बैंकिंग प्रथाओं के एक प्रतीक के रूप में अलग करता है. यह निबंध बैंक की पर्यावरणीय अनिवार्यताओं की प्रारंभिक मान्यता, इसकी अग्रणी हरित बैंकिंग पहल, हरित वित्तपोषण और निवेश के लिए सहयोग, टिकाऊ प्रथाओं को आंतरिक रूप से अपनाने, पर्यावरणीय प्रभाव के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने और डेटा-संचालित परिणामों की पड़ताल करता है जो हरित भविष्य के क्षेत्र में इसके ठोस योगदान को उजागर करते हैं.

1970 के दशक में, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने अपनी ऋण देने की प्रथाओं में पर्यावरणीय विचारों को शामिल करके दूरदर्शिता का प्रदर्शन किया. संभावित परियोजना प्रभावों का आकलन करने के लिए समर्पित पर्यावरण विभागों की स्थापना ने एक सक्रिय दृष्टिकोण को चिह्नित किया जिसने बैंक को अपने समय से आगे रखा. इस प्रारंभिक मान्यता ने पर्यावरणीय प्रबंधन के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता की नींव रखी.

अपनी प्रारंभिक पहचान के आधार पर, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया हरित बैंकिंग पहल में अग्रणी बन गया. 2021 में, ग्रीन डिपॉजिट्स की शुरूआत की जिसके तहत् 1111 दिन, 2222 दिन और 3333 दिन के सावधि जमा ग्राहक घर बैठे अपने मोबाईल बैंकिग से व इंटरनेट बैंकिग से कर सकते है और ऐसे सावधि जमा पर बैंक ग्राहकों को कार्ड से अतिरिक्त व्याज दर दे रहा है. इस तरह के उत्पादों ने ग्राहकों को संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) का सहयोग करने वाली परियोजनाओं में निवेश करने का सीधा रास्ता प्रदान किया. इस नवोन्वेषी दृष्टिकोण ने पर्यावरणीय परियोजनाओं के लिए महत्वपूर्ण संसाधन जुटाए,जिससे बैंक की स्थायी भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता पर जोर दिया गया.

बैंक ने नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं, ऊर्जा-कुशल प्रौद्योगिकियों और टिकाऊ कृषि प्रथाओं के वित्तपोषण के लिए योजनाओं का भी नेतृत्व किया. अपने वित्तीय उत्पादों को हरित उद्देश्यों के साथ जोड़कर, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने में सक्रिय रूप से योगदान दिया है.

हरित वित्तपोषण के प्रति सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की प्रतिबद्धता उसकी व्यक्तिगत पहलों से कहीं आगे तक फैली हुई है. सेंट ग्रीन वाहन, सेंट इनर्जी एफीसिंयेंसी योजना जिसके तहत् क्रमश: इलेक्ट्रिक वाहन हेतु ऋण एवं बैंक सरकारी एजेंसियों, उर्जा संरक्षण हेतु ऋण दिया जाता है. बैंक ने ऋण बांटने में पर्यावरण के विषेष ध्यान रखने के लिए बैंक के कर्मचारियों को रामानुजम कालेज से एम.ओ.यू. कर बेहद कम खर्च पर पर्यावरण स्थिरता लक्ष्य संबंधी पाठ्यक्रम करवाया. इस तरह बैंक पर्यावरण विकास संस्थानों और गैर-सरकारी संगठनों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग करता है. विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ साझेदारी ने अतिरिक्त संसाधनों और विशेषज्ञता तक पहुंचने के लिए बैंक की क्षमता को बढ़ाया है,जिससे हरित परियोजनाओं पर इसका प्रभाव बढ़ गया है.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के लिए स्थिरता बाहरी पहल तक ही सीमित नहीं है. बैंक ने अपनी शाखाओं और कार्यालयों में ऊर्जा-बचत उपायों को लागू किया है, जिससे उसके कार्बन पदचिह्न में काफी कमी आई है. कागज रहित बैंकिंग और अपशिष्ट कटौती पहल आंतरिक पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं के प्रति बैंक की प्रतिबद्धता को और अधिक रेखांकित करती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि इसका परिचालन पदचिह्न इसके पर्यावरणीय उद्देश्यों के साथ संरेखित हो.

प्रौद्योगिकी की परिवर्तनकारी क्षमता को पहचानते हुए, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने ग्राहकों को हरित बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं के बारे में शिक्षित करने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित किया है. इसके अलावा, बैंक अपनी वित्तीय गतिविधियों के पर्यावरणीय प्रभाव की निगरानी और ट्रैक करने, नियमों और उद्योग की सर्वोत्तम प्रथाओं का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करता है.

31 मार्च, 2023 तक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया का ग्रीन लोन पोर्टफोलियो रुपये से अधिक हो गया. 25000 करोड़ रुपये, विविध नवीकरणीय ऊर्जा और टिकाऊ बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का वित्तपोषण. ऊर्जा-बचत उपायों के माध्यम से पिछले पांच वर्षों में ऊर्जा खपत में 15 प्रतिशत की कमी से बैंक की प्रतिबद्धता और भी रेखांकित होती है. ये मात्रात्मक उपलब्धियाँ सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया के पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव को प्रमाणित करती हैं.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की पर्यावरण यात्रा वैश्विक स्तर पर वित्तीय संस्थानों के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य करती है. पर्यावरणीय विचारों को अपनी मूल रणनीतियों में एकीकृत करके, बैंक कॉर्पोरेट जिम्मेदारी का उदाहरण देता है और सकारात्मक बदलाव में महत्वपूर्ण योगदान देता है. जैसे-जैसे संस्था अपनी यात्रा जारी रखती है, पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता अधिक टिकाऊ और लचीले भविष्य की ओर ले जाने के लिए तैयार है.

सचिन दहीवले
वरिष्ठ प्रबंधक (विधि)
क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की यात्रा....

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना सर सोराबजी पोचखानावाला द्वारा 21 दिसंबर 1911 को की गई थी.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना की कहानी बड़ी ही रोचक है. वर्ष 1910 की बात है. सर सोराबजी पोचखानावाला तत्कालीन बैंक ऑफ इंडिया में असिस्टंट अकाउंटंट थे. सर सोराबजी पोचखानावाला जी की आयु 28 वर्ष थी और एक बैंकर के रूप में उन्हें 12 वर्ष का अनुभव हासिल था. इन्स्टिट्युट ऑफ बैंकर, लंदन के सर्टिफाईड असोसिएट का सम्मान प्राप्त करने वाले वे पहले भारतीय थे. श्री एच. पी. स्ट्रिंगफेलो बैंक ऑफ इंडिया के तत्कालीन मैनेजर ने 'No Indian is competent to manage a bank' कहते हुए उन्हें पदोन्नति से वंचित रखा. तब पूरे देश में स्वदेशी का माहौल था. सर सोराबजी ने अपना त्यागपत्र दे दिया. उन्होंने श्री एच. पी. स्ट्रिंगफेलो को बताया " मैंने ठान लिया है कि मैं एक स्वदेशी बैंक की स्थापना करूंगा और एक दिन मेरा बैंक, आपके बैंक से बड़ा होगा.''

इसे एक ''बेहूदा मजाक'' करार देते हुए, श्री एच. पी. स्ट्रिंगफेलो ने सोराबजी को अपना त्यागपत्र वापस लेने के लिए कहा. अपने निर्णय पर अटल रहते हुए बैंक ऑफ इंडिया से इस्तीफा देकर एवं श्री कल्याणजी वर्धमान जेत्सी के सहयोग से, सोराबजी ने कई सुविख्यात व्यावसायिकों से बैंक की स्थापना में मदद हेतु संपर्क किया. श्री मंचेरशों एफ. खान, श्री कल्याणजी वर्धमान जेत्सी, श्री अर्देशीर बोमनजी दुबाष, श्री माणेकजी जेठाभाई वर्धमान, श्री मूलजी हरिदास, श्री राधाकिशन लखमीचंद, श्री मोतीलाल कानजी, श्री हाजी दाऊद हाजी इलियास एवं श्री जमशेटजी होरमसजी चोथिया ने निदेशक के रूप में बैंक को अपनी सेवाएं देना स्वीकार किया. सभी प्रारंभिक खर्चों का भुगतान श्री कल्याणजी वर्धमान जेत्सी ने किया. संस्था के अंतर्नियम एवं बहिर्नियम बनाए गए तथा **दिनांक 21 दिसंबर, 1911 के दिन बैंक का पंजीकरण कराया गया.** ग्रेशम बिल्डिंग में प्रति माह रू. 600/- के किराये पर वह जगह ली गई, जहां पहले ईस्टर्न बैंक हुआ करता था. उन्होंने दो कुर्सियाँ और टेबल खरीदे और योजना बनानी शुरू कर दी. बैंक के पहले कर्मचारी श्री सोराबजी विकाजी थे, जिन्हें प्रति माह रु. 500/- के वेतन पर मुख्य रोकड़िया के पद पर नियुक्त किया गया था.

सन 1911 में स्थापित सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया देश का पहला स्वदेशी भारतीय वाणिज्यिक बैंक था जिसका पूर्ण स्वामित्व और प्रबंधन भारतीयों के हाथ में था. बैंक के संस्थापक सर सोराबजी पोचखानावाला ने इस बैंक की स्थापना करते हुए अपने स्वप्न को साकार किया.

महान दूरदृष्टा एवं प्रथम स्वदेशी बैंक - सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के संस्थापक सर सोराबजी पोचखानावाला जी ने राष्ट्रीय बैंकिंग के बारे में कहा - ''एक अच्छे बैंक से होने वाले फायदों को न तो बैंकिंग हॉल की चारदीवारी में प्रतिबंधित किया जा सकता है और न ही इन्हें बैंकिंग व्यवसाय की सरहदों तक सीमित रखा जा सकता है. ये वाणिज्य एवं उद्योग तथा आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्रों की किसी भी अन्य शाखा से कहीं अधिक बढ़कर है. राष्ट्रीय उत्पाद के संवर्धन में ''राष्ट्रीय बैंकिंग'' की उपयोगिता पूर्णत: स्पष्ट एवं अकाट्य है.

सर सोराबजी पोचखानावाला इस बैंक की स्थापना से इतने गौरवान्वित हुए कि उन्होंने सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को राष्ट्र की संपत्ति और देश की संपदा घोषित कर दिया. उन्होंने यह भी कहा कि सेन्ट्रल बैंक जनता के विश्वास पर टिका है और यह जनता का अपना बैंक है.

पिछले 112 वर्षों के इतिहास में बैंक ने कई उतार चढाव देखें और अनगिनत चुनौतियों का सामना किया. बैंक ने प्रत्येक विपदा को सफलतापूर्वक व्यावसायिक अवसर में बदल दिया और बैंकिंग उद्योग में अपने समकक्षों से उत्कृष्ट रहा. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने कई अभिनव और अनुपम बैंकिंग गतिविधियों तथा सेवाओं का शुभारंभ किया जिनमें से कुछ गतिविधियों एवं

सेवाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :

1916 कोलकाता के बैंकर्स क्लियरिंग हाऊस में विदेशी बैंकों का एकाधिकार समाप्त कर उसमें प्रवेश करने वाला भारतीय प्रबंधन वाला पहला बैंक.

1917 सीमित संसाधनों वले लोगों के लिए सरल मासिक किस्तों वाली युद्ध ऋण योजना का शुभारंभ.

1917 देश के विभिन्न भागों में वहां के लब्धप्रतिष्ठित नागरिकों को शामिल करते हुए स्थानीय सलाहकार समितियों का गठन ताकि स्थानीय विशेषज्ञता एवं क्षेत्रीय अपनत्व की भावना बढाई जा सके.

1920 जनसंपर्क अधिकारी की नियुक्ति.

1921 नगरपालिकाओं, पोर्ट ट्रस्टों, विश्वविद्यालयों तथा अन्य सार्वजनिक निकायों की जमाराशियां स्वीकारने के लिए सरकार का अनुमोदन.

1921 समाज के सभी वर्गों में बचत की आदत डालने के लिए घरेलू बचत सुरक्षा जमा योजना ''होम सेविंग सेफ'' का प्रारंभ.

1922 बुक बैंक, एच एस एस पासबुक तथा बचत खातों में चेक द्वारा आहरण का शुभारंभ.

1922 ग्राहकों को पाक्षिक विवरणी जारी करने की शुरुआत.

1922 इम्पीरियल बैंक की साप्ताहिक विवरणी के समान पाक्षिक कारोबारी विवरणी का प्रकाशन

1922 कर्मचारियों को बैंकिंग तथा सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की आंतरिक गतिविधियों से परिचित कराने के लिए बैंक की गृहपत्रिका ''दि सेन्ट्रलाइट'' के प्रकाशन की शुरुआत.

1922 कर्मचारियों को बैंकिंग एवं आर्थिक सिद्धांतों का ज्ञान उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सौ से अधिक पुस्तकों एवं जर्नल्स से सुसज्जित पुस्तकालय की स्थापना. यह स्टाफ सदस्यों में बैंकिंग करियर की भावना जागृत करने के लिए की गई एक पहल थी.

1923 स्टाफ सदस्यों के लिए नियमित प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन. यह सामान्यत: बैंकिंग कारोबार की समाप्ति के के उपरांत आयोजित किया जाता था. प्रत्येक स्टाफ सदस्य को इसमें भाग लेने हेतु प्रेरित किया जाता था एवं पुस्तकें मुफ्त में दी जाती थी. स्टाफ सदस्यों को ब्रिटिश इन्स्टीट्यूट ऑफ बैंकर्स (उस समय भारतीय बैंकर्स संस्थान अस्तित्व में नहीं था.) की परीक्षा में बैठने की सलाह दी जाती थी. प्रतिष्ठित वित्तीय एवं मुद्रा विशेषज्ञों तथा बुलियन व्यापारियों के मार्गदर्शन में बैंकिंग एवं वित्त, मुद्रा एवं विनिमय जैसे विषयों पर लगभग प्रति माह सेमिनारों का आयोजन किया जाता था.

1923 मैनेजिंग एजेंट के रूप में 'दि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया लि.' का नियंत्रण अपने हाथ में लिया.

1923 सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के साथ टाटा इंडस्ट्रियल बैंक का विलय. यह विलय काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि टाटा इंडस्ट्रियल बैंक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया से काफी बड़ा था.

1923 औद्योगिक फ्लोटेशन की हामीदारी (अंडरराइटिंग) का प्रारंभ. जबकि उस समय अन्य सभी बैंक केवल जमाराशि स्वीकारने तथा प्रतिभूति के समक्ष अग्रिम देने का ही कार्य करते थे.

1924 महिला विभाग की स्थापना. इसका उद्देश्य महिलाओं की संकोची वृत्ति को दूर करना तथा उन्हें बैंकिंग सेवा प्रदान करना था.

1925 भारत की प्रथम महिला कॉमर्स स्नातक सुश्री यास्मिन सर्वेयर की नियुक्ति. वे बैंक सेवा से जुडने वाली प्रथम महिला भी थी.

1925 लिपिकीय संवर्ग में महिलाओं की नियुक्ति की गई.

1925 सर्राफा बाजार से सम्बंधित कार्य का शुभारंभ. पांच से दस तोले की सोने की छडों एवं दो से दस तोले की शुद्ध चांदी की छडों की उपलब्धता का शुभारंभ किया गया, जिन पर बैंक का नाम ढाला गया था.

1926 सुरक्षित जमा लॉकर सुविधा का शुभारंभ.

1927 रुपया यात्री चेक का शुभारंभ. यह योजना 1963 में पुन: नए तरिके से लागू की गई.

1927 स्वतंत्रता से पहले कश्मीर जैसे कई अन्य प्रमुख भारतीय राज्यों ने बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करने तथा आर्थिक विकास में सहयोग प्रदान करने के लिए सेन्ट्रल बैंक ऑ फ इंडिया को आमंत्रित किया गया.

1929 निष्पादक एवं न्यासी (एक्जिक्यूटर एंड ट्रस्टी) विभाग की स्थापना तथा सेन्ट्रल बैंक एक्जिक्यूटर एंड ट्रस्टी

कंपनी लिमिटेड का बैंक की अनुषंगी कंपनी के रूप में गठन. छह वर्ष के भीतर ही इसने लगभग रु. 60 लाख के सकल मूल्य के साठ से अधिक सम्पदाओं का संचालन - दायित्व प्राप्त कर लिया था.

1931 डाकघर की तर्ज पर आकर्षक ब्याज दर प्रदान करने वाले तीन वर्षीय नकदी प्रमाणपत्र जारी किए गए. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया नकदी प्रमाणपत्र जारी करने वाला प्रथम बैंक था. इन्हें जीवन बीमा के स्वरूप में उपलब्ध किया गया था. ये सरकार द्वारा मान्य थे. तथा नगरपालिकाओं, पोर्ट ट्रस्टों, विश्वविद्यालयों के लिए अनुमोदित निवेश थे.

1932 जमाराशि बीमा सुविधा योजना का आरंभ. ''दि डिपॉजिटर्स बेनेफिट इंश्युरेन्स कंपनी लिमिटेड'' नामक एक बीमा कंपनी से सम्बद्धता के माध्यम से मृतक जमाकर्ताओं के हितों की रक्षा के लिए एक अनूठी बीमा योजना का शुभारंभ किया गया. ''दि डिपॉजिटर्स बेनेफिट इंश्युरेन्स कंपनी लिमिटेड'' के पास रु. 40 लाख से अधिक मूल्य की 5000 से जादा पॉलिसियां थीं. ग्राहकों को प्रत्येक लाभ न्यूनतम औपचारिकताओं पर प्रदान किया गया. प्रबंधन लागत न्यूनतम रखी गई. बीमाकर्ता को बस अपने होम सेविंग खाते में न्यूनतम रु. 10 का शेष रखना था.

1932 पंजाब में मंडी शाखाएं खोली गई. ये बेजोड़ थी. गांवों में ये शाखाएं फसलों की कटाई के समय खोली जाती थी. किसान अपने उत्पादों का भंडारण कर पा रहे थे एवं उन्हें उत्पाद की मूल्य वसूली तक अग्रीम दिए जाते थे. उसके बाद शाखाएं बंद कर दी जाती थी और अगली फसल कटाई के समय पुन: खोली जाती थी.

1936 विदेशी विनिमय व्यवसाय से सम्बंधित लेनदेन के लिए इंग्लैंड में अनुषंगी बैंक ''दि सेन्ट्रल एक्स्चेंज बैंक ऑफ इंडिया लि.'' की स्थापना की गई.

1937 अन्य देशों के युवा बैंकरों को एक प्रशिक्षण प्रदान किया गया. जिसमें स्टेट बैंक ऑफ सीलोन की स्थापना के उपरांत सीलोन से आने वाला प्रथम ग्रुप शामिल हुआ था. रॉयल बैंकिंग कमीशन ऑफ सीलोन के अध्यक्ष के रूप में सर सोराबजी पोचखानावाला की सिफारिश के परिणामस्वरूप स्टेट बैंक ऑफ सीलोन की स्थापना हुई थी.

1947 भारत में बैंकरों की मुख्य संस्था भारतीय बैंक संघ के निर्माण में प्रमुख भूमिका. सर सोराबजी पोचखानावाला शुरू से ही भारतीय बैंकों के निदेशकों एवं कार्यपालकों को विचारों के आदान-प्रदान, नीतियों के निरुपण तथा कुछ मानदंडों के तहत बैंकर के व्यवहार एवं प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखने हेतु एक सामान्य फोरम पर एकत्रित करना चाहते थे. अर्थात भारतीय बैंक संघ का निर्माण सर सोराबजी के सपनों का मूर्त स्वरूप था.

1954 ग्राहकों को 14 महानगरों में स्थित किसी भी शाखा में नकदी जमा करने की अनुमति तथा इस प्रकार जमा की गई राशि को उसी दिन होम शाखा में जमा किया जाना.

1957 यूनिट ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया की पुरोगामी (प्रीकर्सर) - दि सेन्ट्रल फिक्स्ड एण्ड फ्लेक्सीबल ट्रस्ट कंपनी की स्थापना.

1962 आवर्ती जमा योजना का शुभारंभ

1963 चालू/नकदी/ऋण खातों का मशीनीकरण

1964 किसानों को लघु पैमाने पर ऋण संवितरण

1964 युवा भारतीय बैंकरों को विदेशों में प्रशिक्षण की व्यवस्था.

1965 अग्रिम का समावेश करने हेतु उत्पाद पोर्टफोलियो में संशोधन. लघु उद्यमियों को ऋण प्रदान करने वाला यह प्रथम बैंक था. इसने उन कंपनियों को प्रारंभिक पूंजी देने के लिए लघु ऋण वितरित किए थे. जो आज विकसित होकर देश की कुछेक बड़ी कंपनियों में अपना स्थान रखती हैं.

1969 बैंक का राष्ट्रीयकरण - पहला राष्ट्रीयकृत बैंक बना.

1976 मर्चेंट बैंकिंग कक्ष की स्थापना

1980 भारत में सबसे पहला क्रेडिट कार्ड - सेन्ट्रल कार्ड का शुभारंभ.

1981 सेन्ट्रल कार्ड धारकों को बैंक की किसी भी शाखा में प्रति माह रु. 2500/- तक के चेक - नकदीकरण की सुविधा अनुमत की गई.

1984 बैक ऑफिस मशीनीकरण का शुभारंभ

1986 प्लैटिनम जुबली मनी बैंक जमा योजना

1989 आवास ऋण के लिए सहायक कंपनी सेन्ट बैंक होम

फायनेंस लि. का शुभारंभ

1994 बाहरी चेकों की शीघ्र वसूली के लिए त्वरित चेक वसूली सेवा (क्यू. सी. सी.) तथा तत्काल सेवा आरंभ की गयी.

1996 भारतीय बैंकिंग उद्योग के परिदृश्य को उजागर करने वाली बैंकिंग उद्योग पत्रिका - फोकस का शुभारंभ

2001 डेबिट कार्ड का शुभारंभ

2003 वीसा प्लैटिनम कार्ड का शुभारंभ

2010 अपने संस्थापक के सम्मान में डाक टिकट जारी करने वाला पहला भारतीय बैंक बना. यह डाक टिकट भारत के राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया.

साथ ही, भारतीय रिजर्व बैंक और भारत सरकार के दिशानिर्देशों के अनुरुप कृषि तथा लघु उद्योग जैसे प्रमुख क्षेत्रों के साथ-साथ मध्यम एवं बड़े उद्योगों को प्रोत्साहित करने में सेन्ट्रल बैंक लगातार सक्रिय भूमिका निभा रहा है. शिक्षित युवाओं में रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए बैंक ने कई स्वरोजगार योजनाएं आरंभ की है. बैंक अपनी 46 आरसेटियों के माध्यम से शिक्षित बेरोजगार युवाओं को प्रशिक्षण दे रहा है. 1911 में अपनी संस्थापना के साथ ही, बैंक ने पूरे देश में लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने में अहम भूमिका निभाई है. बैंक अपने समसामयिक उत्पादों एवं सेवाओं के साथ नवीनतम प्रतिस्पर्धात्मक प्रौद्योगिकी एवं निरंतर बढ़ते हुए शाखाओं के नेटवर्क सहित अत्याधुनिक बनने के साथ-साथ आम आदमी का बैंक बन गया है.

सीबीएस के माध्यम से आज बैंक की सभी शाखाएं जुड़ी हुई है. सेंट एम पासबुक, सेंट मोबाइल ऐप के माध्यम से बैंक अपने ग्राहकों को 24 X 7 बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करा रहा है.

सर सोराबजी द्वारा बोया गया बीज आज वट वृक्ष बन गया है. सितंबर 2023 को बैंक की 4489 शाखाएं देश में सुदूर फैली हुई है जिसमें से 1599 ग्रामीण, 1329 अर्द्ध शहरी, 769 शहरी, 792 महानगरीय शाखाएं, 1 विस्तार पटल तथा 10 सेटलाइट शाखाएं है. बैंक के 4044 एटीएम, तथा 10962 बीसी पॉइंट के साथ कुल 19495 टच पॉइंट हैं. इनमें 21 अत्याधिक बड़ी शाखाएं, 29 अधिक बड़ी शाखाएं, 1733 बड़ी शाखाएं, 2419 मध्यम शाखाएं तथा 23 विशेषिकृत शाखाएं शामिल हैं. कारोबार की सुविधा हेतु पूरे देश में 12 आंचलिक कार्यालय और 90 क्षेत्रीय कार्यालय कार्यरत हैं.

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को वास्तविक अर्थों में अखिल भारतीय बैंक कहा जा सकता है क्योंकि 29 राज्यों में तथा 7 में से 6 केन्द्रशासित प्रदेशों में इसकी शाखाओं का विस्तृत नेटवर्क है. देश के एक छोर से दूसरे छोर तक स्थित अपनी 4400 से अधिक शाखाओं के साथ कुल 19495 टच पॉइंट के विस्तृत नेटवर्क के कारण सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों में सेन्ट्रल बैंक का एक अपना विशिष्ट स्थान है.

बैंक सह-उधार गठबंधन के साथ 14 अग्रणी गैर-बैंकिग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) तथा आवास वित्त कंपनियों (एचएफसी) के साथ जुड़ा हुआ है. बैंक आवास, वाहन, संपत्ति, व्यक्तिगत, वरिष्ठ नागरिक, शिक्षा, कृषि तथा सुक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के लिए निर्मित ऋणों सहित विस्तृत ऋण श्रृंखला भी प्रदान करता है.

बैंक प्रोजेक्ट फाइनांस, इन्फ्रास्ट्रक्चर फंडिंग, इन्फास्ट्रक्चर निवेश न्यासों को वित्तीयन, लघु अवधि कॉर्पोरेट ऋण, कार्यशील पूंजी सुविधाएं, लाइन ऑफ क्रेडिट, निर्यात वित्त, विदेशी मुद्रा ऋण, बिल, क्रय/ छूट/ निगोसिएशन सुविधाएं / गैर-निधि आधारित सुविधाएं तथा विभिन्न उद्योग विनिर्दिष्ट सुविधाएं उपलब्ध कराता है. इसके अलावा बैंक क्रेडिट, डेबिट, प्रीपेड / गिफ्ट कार्ड, नकदी प्रबंधन, म्युच्युअल फंड डिपॉजिटरी, मोबाईल तथा इंटरनेट बैंकिग एवं एटीएम सेवाएं प्रदान करता है.

अपनी व्यापक उधार और बैंकिग सेवाओं के अलावा, बैंक बीमा उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है, जिसमें जीवन, सामान्य और स्वास्थ्य बीमा शामिल है. इनमें यूनिट लिंक्ड, होल लाइफ, बच्चे, मनी बैंक, एंडोमेंट, पेंशन, स्वास्थ्य संपत्ति, व्यक्तिगत, फायर, सेंधमारी, इंजिनियरिंग, मोटर, पैकेज, ट्रैवल और ग्रुप इंश्योरेंस प्रोडक्ट्स के साथ- साथ प्रोटेक्शन और रिटायरमेंट सॉल्यूशंस भी शामिल है.

आईआईएफएल होम फाइनेंस लिमिटेड के साथ बैंक की रणनीतिक साझेदारी के तहत, बैंक एमएसएमई उधारकर्ताओं के लिए प्राथमिकता क्षेत्र के तहत एसएमई एलएपी ऋण उत्पादों की पेशकश करता है.

सेण्ट्रल बैंक के कार्पोरेट ग्राहकों में आईसीआईसीआई, आईडीबीआई, यूटीआई, एफआईसी, एचडीएफसी साथ ही देश के प्रमुख कार्पोरेट घराने भी शामिल है, जिससे बैंक की विस्तृत सेवाओं के प्रति ग्राहकों के विश्वास का अनुमान लगाया जा सकता है.

अब बैंक अपनी उन्नत प्रौद्योगिकी के माध्यम से बैंकिंग के प्रत्येक क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बना रहा है. सोशल मीडिया पर भी बैंक की सक्रीय उपस्थिति है. बदलते बैंकिंग परिवेश में बैंक स्वयं को अधिक सुदृढ़ तथा सक्षम बनाने में अग्रसर है और राष्ट्रीय गौरव तथा विश्वास का प्रमाण है. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया वित्तीय समावेशन और सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए प्रतिबद्ध है और भारतीय वित्तीय परिदृश्य में एक शक्ति स्तंभ के रूप में लगातार अपने देश की बेहतर सेवा करने का प्रयास कर रहा है.

इस प्रभावशाली 112 वर्ष की यात्रा की अवधि में, बैंक ने कई उतार चढाव देखे हैं और कई बाधाओं को पार किया है और बैंक हर बार पहले की तुलना में अधिक लचीला उभर आया है. बैंक के पास 56 मिलियन सक्रिय ग्राहक आधार है और बैंक का व्यवसाय 6 लाख करोड़ को पार कर चुका है. बैंक पिछली 8 तिमाहियों से लगातार लाभ अर्जित कर रहा है. बैंक अब तरक्की के नए मार्ग की ओर अग्रसर होते हुए देश की अर्थव्यवस्था में एक अनिवार्य योगदानकर्ता के रूप में विकसित होने की संभावना पर खड़ा है. चुनौतियों से अबाधित और दृढ़ संकल्प से समर्थित लचीलेपन और विकास की बैंक की यात्रा निरंतर जारी है और आगे भी जारी रहेगी.....

छाया पुराणिक
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
मुंबई महानगर, आंचलिक कार्यालय

THE TIME

The time
When darkness shrouded all around
I pondered relentlessly
Striving harder with each passing moment
Achieving progress, overcoming hurdles
Yearning to break free
In desperate need of a caring hand

The time
I encounter a tranquil bay
Everywhere along my path
The road ahead is not a simple cross,
My back bears a burden, heavy as moss.

The time
In solitude, amidst my aloofness,
Eyes filled with helplessness witness
Darkness enveloping my surroundings,
Struggling to overcome, my spirit resounds

The time
On my journey, unfamiliar paths unfolded
The scenes were not about
Clouds, rains, rivers or mountains
Unimagined dreams materializing before me
Yet, I remained ever-ready
For thunder and lightning's roar

The time
Whenever and wherever
A familiar soul faced turmoil
I was always the first to stand by
Yet, amidst the kindness, a lingering doubt
That our goodness may be in vain

The time
Realizing in life, acceptance is key
After the dark shadows, moonlight prevails
It’s right time to soar like a kite
Let not small stumbles breed despair
Hurdles, mere stepping stones to transcend
Embrace the lessons and relish the moments...

Dimpal Maheshwari
Senior Manager, MMZO

केन्द्रीय कार्यालय, सेंट नियो के स्टाफ सदस्यों के साथ माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव.

दिनांक 30.10.2023 से 05.10.2023 तक केन्द्रीय कार्यालय, मुम्बई में सतर्कता जागरुकता सप्ताह मनाया गया. इस अवसर पर ग्राहकों तथा जनता में सतर्कता के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से रैली निकाली गई तथा स्टाफ सदस्यों को सतर्कता संबंधी की जानकारी दी गई.

सुश्री जेनी दिपेन पंचमतिया

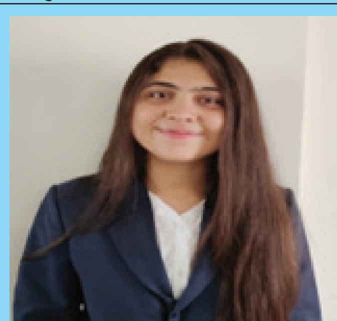

मुख्य मंत्री बधाई संदेश

अहमदाबाद क्षेत्र में पदस्थ श्री दिपेन वी. पंचमतिया, मुख्य प्रबन्धक, अहमदाबाद स्टॉक एक्सचेंज, शाखा की सुपुत्री सुश्री जेनी दिपेन पंचमतिया ने 'भारतीय कंपनी सचिव संस्थान' द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कंपनी सचिव परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर द्वितीय रेंक प्राप्त किया है. इस गौरवशाली उपलब्धि के लिए सुश्री जेनी को श्री भूपेंद्र पटेल, मुख्यमंत्री, गुजरात ने भी बधाई दी है साथ ही विभिन्न समाचार पत्रों ने इस उपलब्धि को प्रकाशित किया है.

'सेन्ट्रलाइट' परिवार के सदस्य की इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हम सभी को गर्व है. सेन्ट्रलाइट परिवार आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता है.

आंतरिक्ष में भारत की नवीनतम उपलब्धियां

अंतरिक्ष के क्षेत्र में आज भारत महाशक्ति बन चुका है. साइकिल से शुरु हुआ सफर चांद तक पहुंच गया है. और अब भारत अंतरिक्ष में किसी भारतीय को भेजने के मिशन पर पूरी तरह से जुटा है. यहां तक का सफर आसान नहीं था. 1947 में जब देश आजाद हुआ तो हमारे सामने कई चुनौतियं थी. उस वक्त अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में तो हम बिल्कुल ही पिछड़े हुए थे. ना बुनियादी सुविधाएं हमारे साथ थी और ना ही आर्थिक हालात ऐसे थे जिससे हम इस दिशा में अचानक तेजी से किसी मुकाम को हासिल कर सकें. लेकिन हमारे बैज्ञानिकों के पास अगर कोई चीज थी तो वो था जज्बा, इसी जज्बे और बुलंद हौसले के साथ 60 के दशक में हमारा अंतरिक्ष कार्यक्रम शुरू हुआ.

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई ने उसी समय अनुभव कर लिया कि आने वाले समय में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के माध्यम से समाज और देश के विकास के नए सोपान रखे जाएंगे. अहमदाबाद में भौतिकी शोध प्रयोगशाला की स्थापना के बाद डॉक्टर साराभाई इसके निदेशक बने और योग्य, तीक्ष्ण-बुद्धि वैज्ञानिकों के एक समर्पित समूह के रूप में भारत के अंतरिक्ष प्रगति की यात्रा प्रारंभ हुई.

1961 में परमाणु ऊर्जा विभाग की स्थापना हुई और भारत के परमाणु कार्यक्रम के जनक डॉ. होमी जहांगीर भाभा परमाणु ऊर्जा विभाग के निदेशक नियुक्त किए गए. 1962 में डॉक्टर साराभाई और डॉक्टर भाभा के सहयोग से इंडियन नेशनल कमिटी फॉर स्पेस रिसर्च (INCOSPAR) बनी. डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, जो बाद में भारत के राष्ट्रपति बने, रॉकेट इंजीनियरों के इस समूह के सदस्य थे. डॉ. साराभाई के नेतृत्व में तिरुवनंतपुरम में थुम्बा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन (TERLS) की स्थापना की गई. इस कमेटी से ही इसरो नामक संगठन अस्तित्व में आया जो तब से लेकर आज तक भारत की अंतरिक्ष गतिविधियों का आधारभूत केंद्र बना हुआ है.

अपनी आत्मकथा विंग्स ऑफ फायर में डॉ. कलाम ने लिखा है कि थुम्बा में अंतरिक्ष केंद्र के लिये चुनी गई जगह वहां की रेलवे लाइन और समुद्री तट के बीच स्थित थी. इस क्षेत्र के भीतर एक बड़ा चर्च खड़ा था जिसकी साइट का अधिग्रहण किया जाना था. यह चर्च ही थुम्बा स्टेशन की पहली इकाई के रूप में बना और बाद में इसका नाम विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र रखा गया. पहला रॉकेट 21 नवंबर, 1963 को यहां से लॉन्च किया गया था. डॉ. कलाम लिखते हैं कि रॉकेट को चर्च की इमारत में असेम्बल (इकट्ठा) किया गया था. यह प्रक्षेपण कई लोगों के लिए एक चमत्कार था और इसने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की ऐतिहासिक शुरुआत को चिह्नित किया.

धैर्यवान और बुद्धिमान मनुष्य के लिए शोक, विलाप और रुदन सभी अवस्थाएं त्याग देने योग्य हैं - वाल्मिकि

1975 के वर्ष तक की यात्रा में भारत अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए देश के कई शोध तथा विकास केंद्र स्थापित कर चुका था. 19 अप्रैल 1975 को भारत ने सोवियत संघ के रॉकेट की सहायता से पूरी तरह स्वदेशी पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट' अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया. हालांकि ये प्रायोगिक उपग्रह था लेकिन इससे भविष्य का रास्ता खुल गया. आज इस नींव पर उपलब्धियों की वो इमारत खड़ी हो गई है जिसे देखकर पूरी दुनिया हमारा लोहा मान रही है..

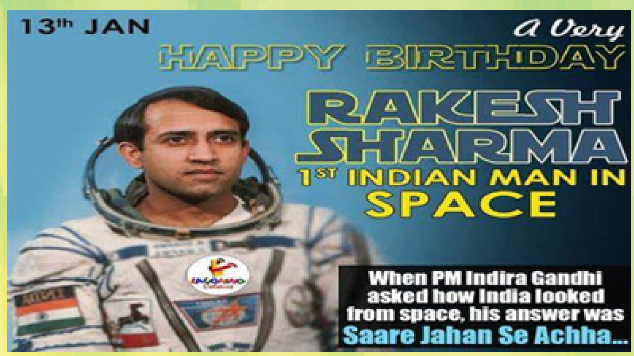

इसके बाद टीवी को आमजन तक पहुंचाने के लिए 'इंडियन नेशनल सैटेलाइट सिस्टम' (INSAT) का रास्ता खुल गया. अप्रैल, 1984 में भारतीय वायु सेना के स्क्वाड्रन लीडर रहे राकेश शर्मा, अंतरिक्ष में जाने वाले पहले भारतीय बने. तत्कालीन प्रधानमन्त्री इंदिरा गांधी ने अन्तरिक्ष यात्री राकेश शर्मा से बातचीत करते हुए यह पूछा कि अन्तरिक्ष से भारत कैसा दिखता है तो राकेश शर्मा ने उत्तर दिया- " सारे जहाँ से अच्छा" राकेश शर्मा के इस उत्तर ने तमाम भारतीयों को आल्हादित और रोमांचित कर दिया था.

जनवरी 2018 से नवंबर 2022 तक इसरो ने विभिन्न देशों के कुल 177 विदेशी उपग्रहों को सफलतापूर्वक लॉन्च करके एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है. साल 2003 में तत्कालिन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी चंद्रयान कार्यक्रम की घोषणा की थी. 15 अगस्त 2003 यही वह तारीख है जब भारत ने चंद्रयान कार्यक्रम शुरु की थी नवंबर 2003 को भारत सरकार ने पहली बार भारतीय मून मिशन के लिए इसरो के चंद्रयान-1 को मंजूरी दी थी इसके करीब पाँच साल बाद, भारत ने 22 अक्टूबर 2008 को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से चंद्रयान मिशन लॉन्च किया उस समय केवल अमेरिका,रूस युरोप और जापान ही चंद्रमा पर मिशन भेजने में कामयाब हो सके थे, ऐसा करने वाला भारत पांचवां देश था.

इसके बाद भारत ने अन्तरिक्ष के क्षेत्र में स्वदेशी पर भी ध्यान देना शुरू किया, क्योंकि यह ऐसा क्षेत्र था जहाँ पर अमेरिका आदि देश अपना प्रभुत्व बनाये रखना चाहते थे और भारत जैसे विकासशील देश के साथ तकनीक आदि का ज्ञान बाँटने में संकोच करते थे. संघर्ष के बाद ऐसा समय आया जब भारत ने 2008 में अपना पहला चंद्र मिशन यानि चंद्रयान 1 लॉन्च किया था और इसके कुछ ही वर्षों बाद भारत ने 2014 में मंगलयान भी लॉन्च किया. वर्ष 2017 में इसरो ने एक ही रॉकेट में 104 उपग्रहों का प्रक्षेपण कर उल्लेक्खनीय सफलता प्राप्त की और भारत को अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व में स्थापित कर दिया.

भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो) के पास अंतरिक्ष में शोध अध्ययन के लिए समर्पित और विकसित कई सुविधाएं हैं. उनमें से कुछ इस प्रकार हैं: विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र (वीएसएससी), तिरुवनंतपुरम, तरल प्रणोदन प्रणाली केंद्र (एलपीएससी), तिरुवनंतपुरम, सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र श्रीहरिकोटा, अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (एसएसी), अहमदाबाद तथा राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (एनआरएससी), हैदराबाद. भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो) के द्वारा अन्तरिक्ष शोध तथा तकनीकी विकास के लिए अंतरिक्ष तक पहुंच प्रदान करने के लिए लॉन्च वाहनों और संबंधित प्रौद्योगिकियों का डिजाइन और विकास किया गया है. इसके अतिरिक्त पृथ्वी अवलोकन, संचार, नेविगेशन, मौसम विज्ञान और अंतरिक्ष विज्ञान के लिए उपग्रहों और संबंधित प्रौद्योगिकियों का डिजाइन और विकास करने का दायित्व इसी का ही है.

दूरसंचार, टेलीविजन प्रसारण और विकासात्मक अनुप्रयोगों को पूरा करने के लिए भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह (इन्सैट) कार्यक्रम का विकास इसरो का उल्लेखनीय कार्य है कि आज भारत की जनता विभिन्न सेटलाइटों के माध्यम से मनोरंजन और ज्ञान के कार्यक्रम देख पा रहे हैं. इसके अतिरिक्त अंतरिक्ष आधारित इमेजरी का उपयोग करके प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और पर्यावरण की निगरानी के लिए भारतीय रिमोट सेंसिंग सैटेलाइट (आईआरएस) कार्यक्रम भारत के भौतिक और आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है. इसरो द्वारा इसके साथ-साथ सामाजिक विकास के लिए अंतरिक्ष-आधारित अनुप्रयोग तथा अंतरिक्ष विज्ञान और ग्रहों की खोज में अनुसंधान और विकास का कार्य सफलतापूर्वक किया जा रहा है.

अंतरिक्ष कार्यक्रम के समक्ष चुनौतियाँ

- भारत के पास एस्ट्रोनॉट्स को प्रशिक्षित करने तथा मानव अंतरिक्ष उड़ान के लिये लॉन्च व्हीकल की उन्नत तकनीकियों का अभाव है.

- लॉन्च व्हीकल, लॉन्च क्रू मोड्यूल, स्पेस कैप्सूल रि-एंट्री टेक्नोलॉजी, लाइफ सपोर्ट सिस्टम, स्पेससूट आदि अभी विकास की प्रक्रिया में हैं.
- मानव अंतरिक्ष उड़ान के लिये श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र की तकनीकी दक्षता बढ़ाने की आवश्यकता है.
- पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (PSLV) और जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (GSLV) दो भारतीय प्रक्षेपण यान हैं जो उपग्रह और मोड्यूल को अंतरिक्ष में लॉन्च करने के लिये तैनात किये गए हैं जो अभी तक 'मैनरेटेड' (शून्य विफलता वाले लॉन्च व्हीकल की सुरक्षा और अखंडता को मापने के लिये प्रयोग किया जाने वाला शब्द है.) नहीं हैं.

हालांकि इन चुनौतियों के बावजूद भारत आगे बढ़ते जा रहा है,22 जूलाई 2019 को 14.43 बजे भारत ने चांद के तरफ अपना दूसरा कदम बढाया तथा चंद्रयान-2 लॉन्च किया गया परन्तु इसमें आंशिक सफलता ही मिलि. वर्ष 2023 इसरो के लिए एक ऐतिहासिक वर्ष था क्योंकि इसने बड़े मील के पत्थर हासिल किए चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला पहला देश बनने से लेकर सूर्य का अध्ययन करने के लिए अंतरिक्ष यान भेजने तक, दरअसल गगनयान इसरो का एक प्रोजेक्ट है इसमें तीन मिशन होंगे. इसका पहला मिशन मानव रहित होगा. दूसरे मिशन में एक रोबोट को भेजा जाएगा और आखिरी यानी तीसरे मिशन में अंतरिक्ष में तीन एस्टोनॉट को भेजा जाएगा इसरो के प्रमुख ने बताया की दूरसा मिशन अगले साल यानी 2024 में लॉन्च किया जाएगा. भविष्य में भारत का लक्ष्य चन्द्रयान-3 के तहत लैंडर को भेजना, प्रथम अंतरिक्ष मानव स्वदेशी मिशन और 2050 तक भारत का खुद का स्पेस स्टेशन विकसित करना है.

"अंतरिक्ष में गूंज उठे हम, चंद्रयान का गान लिए.
चांद तिरंगे रंग में रंगा, नयी एक पहचान लिए
मेरे भारत के वैज्ञानिक, तुम गौरव हो भारत का
ऊँचा माथा लिए खड़े हम, सच्चा एक अभिमान लिए"

- (प्रसून जोशी)

गीतुभा कलिता
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय,बरपेटा रोड

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागज़ात		
1	सामान्य आदेश	General Orders
2	संकल्प	Resolution
3	परिपत्र	Circulars
4	नियम	Rules
5	प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन	Administrative or other reports
6	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Release/Communiques
7	संविदाएं	Contracts
8	करार	Agreements
9	अनुज्ञप्तियां	Licences
10	निविदा प्रारुप	Tender Forms
11	अनुज्ञा पत्र	Permits
12	निविदा सूचनाएं	Tender Notices
13	अधिसूचनाएं	Notifications
14	संसद के समक्ष् रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र	Reports and documents to be laid before the Parliament

सरलतापूर्वक कहे गए वचन को अन्यथा नहीं लेना चाहिए - अश्वघोष

हमारे बैंक की यात्रा

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया सही अर्थों में स्वदेशी बैंक है जिसके पहले अध्यक्ष फिरोजशाह मेहता थे. सोराबजी पोचखानावाला इस बैंक की स्थापना से इतने गौरावांवित हुए कि उन्होने सेंट्रल बैंक को राष्ट्र की सम्पत्ति घोषित कर दिया. उन्होने यह भी कहा कि सेंट्रल बैंक जनता के विश्वास पर टिका है और यह जनता का अपना बैंक है. सन 1911 में स्थापित सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया पहला भारतीय वाणिज्यिक बैंक था जिसका पूर्ण स्वामित्व और प्रबंधन भारतीयों के हाथ में था. बैंक के संस्थापक सर सोराबजी पोचखानावाला ने इस बैंक की स्थापना करते हुए अपने स्वप्न को साकार किया.

पिछ्ले कई वर्षों के इतिहास में बैंक ने कई उतार चढाव देखे और अनगिनत चुनौतियों का सामना किया. बैंक ने प्रत्येक आशंका को सफलता पूर्वक व्यावसायिक अवसर में बदला और बैंकिंग उद्योग में अपने समकक्षों से उत्कृष्ट रहा.

पिछ्ले कई सालों में जैसा कि हमने देखा है, कई बैंक बंद हो गए हैं, और हमारे मन में एक सवाल उठता है, क्या मेरी जमा पूँजी सुरक्षित है? इस तरह की आशंका का होना स्वाभाविक है. आज मै आपको एक ऐसे प्रतिष्ठित भारतीय बैंक के बारे में बताना चाहता हूँ जो पूरी तरह से भारतीयों द्वारा स्थापित कि जाने वाली पहली स्वदेशी बैंक है और अब भी आपको अविरत रूप से सेवा दे रही है.

यह बैंक 21 दिसम्बर 1911 में 20 लाख रुपये की अल्पकालिक पूँजी के साथ पंजीकृत किया गया था. इसकी स्थापना एक पारसी बाबा द्वारा की गई थी जिसने पहले कुछ वर्षों के लिए बैंक ऑफ इंडिया में एक एकाउंटेड के रूप में काम किया था. उस समय भले ही बैंक ऑफ इंडिया एक भारतीय प्रायोजित बैंक था, लेकिन मुख्य प्रबंधकीय पदों पर यूरोपीय लोगों को रखा गया था. बैंक ऑफ इंडिया में सन् 1910 में हमारे संस्थापक जी को मात्र रु. 200 मिलते थे, जबकि उनके यूरोपीयन साहब रु. 5000 वेतन मिलता था. सेंट्रल बैंक भारत के बैंकिंग क्षेत्र में महत्वपूर्ण है. सेंट्रल बैंक ने देश के विकास में अहम भूमिका निभाई है और आर्थिक सेवाओं को प्रदान किया है. सेंट्रल बैंक ने सामाजिक और आर्थिक स्तर पर विकास के लिए कई योजनाएँ और कार्यक्रम की शुरुआत की है. सेंट्रल बैंक ने डिजिटल बैंकिंग तथा मॉर्डन बैंकिंग के क्षेत्र मे भी प्रगति की है, ताकि गाहकों को अधिक सुविधा मिल सके.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने अपने सफर में कई उतार चढाव देखें और अनगिनत चुनौतियों का सामना किया. बैंक ने प्रत्येक आशंका को सफलतापूर्वक व्यावसायिक अवसर में बदल दिया और बैंकिंग उद्योग करके अपने समकक्षों में उत्कृष्ट रहा. सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने कई अभिनव और अनुपम बैंकिंग गतिविधियों का शुभारंभ किया और ऐसी ही कुछ सेवाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :

1921 बैंक ने समाज के सभी वर्गों में बचत/ बचत की आदतें विकसित करने के लिए घरेलू बचत सुरक्षित जमा योजना प्रारंभ की.

1924 बैंक ने महिला ग्राहकों को सेवा प्रदान करने के लिए विशिष्ट महिला विभाग की स्थापना की.

1926 सुरक्षित जमा लॉकर सुविधा और रुपया यात्रा चेक

1929 निष्पादक एवं न्यासी विभाग की स्थापना

1932 जमा राशि बीमा सुविधा योजना

1962 आवर्ती जमा योजना

वर्ष 1969 में बैंक का राष्ट्रीयकरण होने के बाद भी सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने विभिन्न अभिनव बैंकिंग सेवाएँ आरंभ करना जारी रखा.

1976 मर्चेंट बैंकिंग कक्ष की स्थापना

1980 बैंक के क्रेडिट कार्ड सेंट्रल-कार्ड का प्रारंभ

1986 प्लेटिनम जुबली मनी बैंक जमा योजना

1989 आवासीय सहायक कंपनी सेन्ट बैंक होम फाइनेंस लिमिटेड का शुभारंभ

1994 बाहरी चेकों की शीघ्र वसूली के लिए त्वरित चेक वसूली सेवा (क्यूसीसी) तथा तत्काल सेवा आरंभ की गई.

2011 बैंक ने संयुक्त राज्य अमेरिका से भारत में ऑनलाइन धनराशि भेजने के लिए centfast2india नाम से एक नई सुविधा शुरु की.

साथ ही, भारतीय रिजर्व बैंक और भारत सरकार के दिशानिर्देशों के अनुरुप कृषि तथा लघु उद्योग जैसे प्रमुख क्षेत्रों के साथ-साथ मध्यम एवं बडे उद्योगों को प्रोत्साहित करने में सेंट्रल बैंक लगातार सक्रिय भूमिका निभा रहा है. शिक्षित युवाओं में रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए बैंक ने कई स्वरोजगार योजनाएँ आरंभ की है.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने अपने इतिहास में कई योजनाएँ शुरु की है. जैसे कि -

ग्रामीण विकास योजना - सेंट्रल बैंक ने गाँवो के विकास और उन्नति के लिए अनेक योजनाएँ शुरु की है, जैसे कि सेल्फ हेल्प ग्रुप योजना जिसमें गाँवो के लोगों को आर्थिक समर्थन प्रदान किया जाता है.

वित्तीय समावेशन कार्यक्रम - सेंट्रल बैंक ने आर्थिक समावेशन को बढाने के लिए अनेक योजनाओं को शुरु किया है ताकि छोटे शहरों और गाँव के लोगों को भी बैंकिंग सेवाओं का लाभ मिल सके.

शिक्षा तथा कौशल विकास पहल - सेंट्रल बैंक ने शिक्षा और कुशलता विकास के लिए योजनाएँ शुरु की है ताकि लोगों को बेहतर रोजगार के अवसर मिल सके.

डिजिटल बैंकिंग पहल - सेंट्रल बैंक ने डिजिटल बैंकिंग को बढावा देने के लिए अनेक योजनाएँ शुरु की है, जैसे कि इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और डिजिटल भुगतान पद्धति को शुरु किया है.

उद्यमी हेतु ऋण योजनाएँ - व्यापारियों और उद्यमियों के लिए वित्तीय सुविधाओं को बढाने के लिए बैंक ने कई योजनाएँ शुरु की है जिससे उन्हें आर्थिक सहायता प्राप्त करने में मदद मिलती है.

सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों में से सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया को वास्तविक अर्थों में अखिल भारतीय बैंक कहा जा सकता है क्योंकि सभी 28 राज्यों में तथा 8 में से 7 केंद्रशासित प्रदेशों में इसकी शाखाओं का विस्तृत नेटवर्क है. देश में लगभग 4500 शाखाओं के साथ देश के प्रति अविरत सेवाएँ प्रदान कर रहा है.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने 1918 तक हैदराबाद में एक शाखा खोली थी. 1925 में, सिकंदराबाद में एक शाखा खोली गई थी. 1923 में एलांयस बैंक ऑफ शिमला के दिवालिया होने के बाद, इसे टाटा इंडस्ट्रीयल बैंक ने खरीद लिया.1920 में टाटा बैंक, जिसकी स्थापना 1917 में हुई थी, ने मद्रास में एक शाखा खोली, जो बाद में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, मद्रास बन गई.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने सेंट्रल एक्सचेंज बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो 1936 में लंदन में खुला. हालंकि 1938 में बार्कलेज बैंक ने सेंट्रल एक्सचेंज बैंक ऑफ इंडिया को खरीद लिया.

उत्पाद और सेवाएँ

व्यक्तिगत और एनआरआई - सीबीआई बचत खाता, जमा. म्युच्युअल फंड, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, एनआरआई खाता, धनहस्तांतरण सुविधा, प्रेषण सुविधा, विभिन्न ऋण सुविधाएँ, वरिष्ठ नागरिक खाता इत्यादि जैसे उत्पाद और सेवाओं की विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है.

कॉर्पोरेट - कॉर्पोरेट के लिए यह विभिन्न उत्पाद और सेवाएँ प्रदान करता है जैसे कॉर्पोरेट खाते, ऋण, आरटीजीएस, एनईएफटी, सीएमएस, आदि.

ग्रामीण - वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए यह अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने वाले उत्पाद और सेवाएँ प्रदान करता है.

इसकी दो सहायक कंपनियाँ भी है. अर्थात सेन्ट बैंक होम फाइनेंस, सेंट बैंक फाइनेंशियल एंड कस्टोडियल सर्विसेज. मालिक के जीवनकाल के दौरान निवेश और संपत्ति की रक्षा करने और उनकी इच्छा या विश्वास के अनुसार उनका निपटान करने के लिए विशेष सेवाएँ और सुविधाएँ प्रदान करती है.

सेंट होम फाइनेंस घर के निर्माण, खरीद ,विस्तार और नवीनीकरण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया विभिन्न प्रकार के सेवाएँ प्रदान करता है जो उनके ग्राहकों की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं. जैसे कि -

व्यावसायिक बैंकिंग सेवाएँ - कॉर्पोरेट और कमर्शियल ग्राहकों के लिए कस्टमोझेड फाइनेंशियल सोल्युशन, ऋण, कार्यशील पूँजी वित्त, ट्रेड वित्त तथा और अन्य व्यवसाय संबंधित सेवाएँ.

अपनी प्रशंसा स्वयं करने से बेहतर है यह कार्य दूसरे करें.

व्यक्तिगत बैंकिंग सेवाएँ - बचत खाता, चालू खाता, मियादी जमा तथा अन्य व्यक्तिगत बैंकिंग सेवाएँ जो व्यक्तिगत ग्राहकों की वित्तीय जरूरतों को पूरा करती है.

ऋण उत्पाद - आवास ऋण, कार ऋण, शिक्षा ऋण, छोटे तथा मध्यम उद्यम के लिए ऋण उत्पाद.

डिजिटल बैंकिंग सेवाएँ - मोबाईल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग तथा अन्य डिजिटल प्लेटफार्म के जरिए सेवाएँ प्रदान करते हैं जो ग्राहकों को सरल बैंकिंग का अनुभव देते हैं.

एनआरआए बैंकिंग सेवाएँ - गैर निवासी भारतीयों के लिए खास बैंकिग सेवाएँ जैसे कि एनआरआई खाते,विप्रेषण तथा अन्य वित्तीय सोल्युशन.

धन प्रबंधन सेवाएँ - निवेश, म्युच्युअल फंड और इंश्युरंस प्लान जैसे धन प्रबंधन सेवाएँ प्रदान करते है.

सरकारी योजनाएँ - सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया सरकारे योजनाओं के अंतर्गत ऋण तथा वित्तीय सहायक प्रदान करते हैं जैसे कि प्रधान मंत्री आवास योजना, मुद्रा योजना और अन्य सरकारी योजनाएँ.

यह सिर्फ मुख्य सेवाएँ है जो सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया अपने ग्राहकों को प्रदान करता है. इसके अलावा भी, वह और भी अलग-अलग सेवाएँ तथा योजनाएँ प्रदान करता है जो उनके ग्राहकों वित्तीय स्थिरता तथा वृद्धि में मदद करते हैं.

बैंक की इस प्रभावशाली 112 वर्ष की यात्रा के दौरान, बैंक ने कई उतार चढाव देखे हैं और कई कठनाइयों को पार किया है. और बैंक हर बार दृढ संकल्पना के साथ एक नये रुप में सामने आ रहा है. विकास के ओर हमारे बैंक की यात्रा निरंतर जारी थी, जारी है और जारी रहेगी.....

श्री बीरेंद्र कुमार
मुख्य प्रबंधक
उत्तर मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

सेवानिवृत्ति

सेवानिवृत्ति उपरांत सुखद एवं दीर्घायु जीवन हेतु मंगलकामनाएं...!!

श्री विकास खरे,
उप महाप्रबंधक

पदोन्नति

सेन्ट्रलाइट परिवार की ओर से हार्दिक बधाई

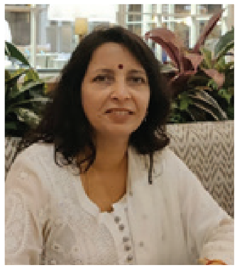

सुश्री प्रीती सारस्वत,
उप महाप्रबंधक

श्री पंकज कुमार,
उप महाप्रबंधक

स्वाभिमान और गर्व की भाषा है हिंदी !

हिन्दी हिन्दी में बोला, देख स्वभाषा-प्रेम,
विश्व अचरज से डोला, कह कैदी कविराय,
मेम की माया टूटी; भारत माता धन्य,
स्नेह की सरिता फूटी!

- अटल बिहारी वाजपेयी

हिंदी आज विश्व में सर्वाधिक बोले जाने वाली तीसरी प्रमुख भाषा है . वर्तमान में पूरे विश्व में हिंदी कुल 176 विश्वविद्यालय में पढ़ाया जाता है जिसमें महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय है - वाशिंगटन विश्वविद्यालय, शिकागो विश्वविद्यालय, लंडन विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, ला ट्रोब विश्वविद्यालय, ड्यूक विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय करियर विश्वविद्यालय आदि तथा हिंदी एक विषय के रूप में 20 देशों में पढ़ाई जाती है. हिंदी के बढ़ते स्वाभिमान में बट्टा लगाने का काम करती है भारतीय लोगों की टूटी फूटी अंग्रेजी जो कि अंधाधुंध बाज़ार कि मांग है . भाषा लोगों को आपस मे जोड़ने का सबसे सरल और जरूरी माध्यम है.

हिंदी दिवस का आरंभ

14 सितंबर को संविधान सभा ने वर्ष 1949 में हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया था. आजादी के बाद हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के संबंध में तमाम बहस-मुहाबिसें हुईं. अहिंदी भाषी राज्य हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के पक्षधर नहीं थे. इनमें भी दक्षिण भारतीय राज्य जैसे तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश पश्चिम बंगाल प्रमुख थे. उनका तर्क था कि हिंदी उनकी मातृभाषा नहीं है और यदि इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाएगा तो ये उनके साथ अन्याय सरीखा होगा. अहिंदी भाषी राज्यों के विरोध को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने मध्यमार्ग अपनाते हुए हिंदी को राजभाषा का दर्जा दे दिया, इसके साथ ही अंग्रेजी को भी राज्यभाषा का दर्जा दिया गया. वर्ष 1953 में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा ने 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाए जाने का प्रस्ताव दिया तब से ये दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा.

हिंदी का विकास

एक भाषा के रूप में अगर हिंदी भाषा की विकास यात्रा की बात करें तो यह एक लंबी और सतत प्रक्रिया है. एक भाषा के विकास में उस समाज और संस्कृति की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है जहाँ पर ये बोली जाती है. हिंदी भाषा के विकास में भी समाज और संस्कृति की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है; खासकर उत्तर भारतीय राज्यों की भूमिका. भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत रही है और इसी भाषा के विभिन्न काल खंडों में अलग-अलग स्वरूपों में हुए वियोजन से हिंदी का विकास हुआ है.

संस्कृत भाषा से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश, अपभ्रंश से अवहट्ट, अवहट्ट से पुरानी हिंदी और पुरानी हिंदी से आधुनिक हिंदी का विकास हुआ है जिसे आज हम बोलते है. हालांकि इसे लेकर मतभेद है कि अपभ्रंश से हिंदी का विकास हुआ है या पुरानी हिंदी से. मगर वर्तमान भाषाविज्ञानी इसे अपभ्रंश से ही विकसित हुआ मानते है.

अगर हिंदी भाषा के विकास के कालखंड की बात करें तो यह तीन कालों में विकसित हुई- पहला कालखंड 1100 ईस्वी - 1350 ईस्वी का माना जाता है, इसे प्राचीन हिंदी का काल कहा जाता है. दूसरा कालखंड मध्य काल (1350 ईस्वी - 1850 ईस्वी) कहा जाता है. इस काल में हिंदी भाषा की बोलियों अवधी और ब्रज में विपुल साहित्य रचा गया. तीसरा कालखंड 1850 ईस्वी से अब तक माना जाता है और इसे आधुनिक काल की संज्ञा दी जाती है. इस काल में हिंदी भाषा का स्वरूप बेहद तेजी से बदला है.

दरअसल इस काल में हिंदी जन-जन की भाषा बन गई. ये वो दौर था जब आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी और इस दौरान हिंदी का संपर्क भाषा के रूप में प्रचलन खूब बढ़ा. ये हिंदी भाषा का ही असर था कि उत्तर भारत ही नहीं दक्षिण भारत से भी आने वाले आजादी के नायकों ने इसे राष्ट्रभाषा के रूप मे स्वीकार किये जाने की पुरजोर वकालत की. हालांकि हिंदी भाषा को आज तक राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिल सका है.

राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर

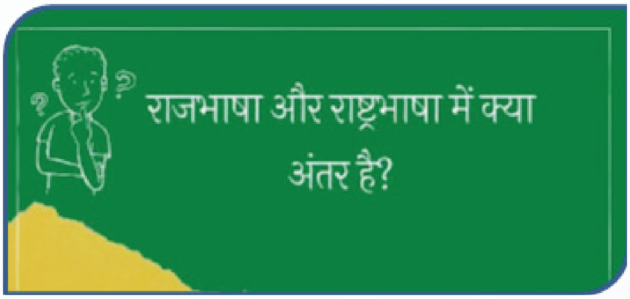

यदि राष्ट्रभाषा और राजभाषा के अंतर की बात की जाए तो इनमें दो प्रमुख अंतर हैं. एक अंतर इन्हें बोलने वालों की संख्या से है और दूसरा अंतर इनके प्रयोग का है. राष्ट्रभाषा जहाँ जनसाधारण की भाषा होती है और लोग इससे भावात्मक और सांस्कृतिक रूप से जुड़े होते हैं तो वही राजभाषा का सीमित प्रयोग होता है. राजभाषा का प्रयोग अक्सर सरकारी कार्यालयों और सरकारी कार्मिकों द्वारा किया जाता है. कुछ देश जैसे ब्रिटेन की इंग्लिश, जर्मनी की जर्मन और पाकिस्तान की उर्दू; की राष्ट्रभाषा और राजभाषा एक ही है. मगर बहुभाषी देशों के साथ यह समस्या है. यहाँ राष्ट्रभाषा और राजभाषा अलग-अलग होती है .महात्मा गांधी ने कहा था कि, "राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा होता है".

राष्ट्रभाषा किसी देश को एक करने के लिहाज से बेहद महत्त्वपूर्ण होती है. यही कारण है कि महात्मा गांधी ने वर्ष 1917 में गुजरात के भरूच में हुए गुजरात शैक्षिक सम्मेलन में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाए जाने की वकालत की थी-

"भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि यह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है; यह समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक सम्पर्क माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है."

हालांकि आजादी के बाद इसे लेकर तमाम तरह के विवाद हुए और अंततः अंग्रेजी के साथ इसे राजभाषा के रूप में ही स्वीकार किया गया. शुरूआत में तो यह प्रावधान 15 वर्षों के लिए ही था और साथ ही संसद को भी ये शक्ति दी गई थी कि वो अंग्रेजी के प्रयोग को बढ़ा सकता है. वर्ष 1965 में हिंदी को एकमात्र राजभाषा बनाए जाने के समय के पूर्व ही अहिंदी भाषी राज्यों का विरोध इस कदर तीव्र हो गया कि अंततः तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को अहिंदी भाषी राज्यों को ये आश्वासन देना पड़ा कि आपकी सहमति के बिना हिंदी को एकमात्र राजभाषा नहीं बनाया जाएगा.

इसीलिए वर्ष 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया. वर्ष 1967 में इसे संशोधित किया गया. इसमें किये गए प्रावधानों से अहिंदी भाषी राज्यों की तो चिंता खत्म हो गई मगर हिंदी को राष्ट्रीय एकता का प्रमुख तत्व मानने वाले लोगों की चिंताएं बढ़ गई. सरकार ने इन चिंताओं को संबोधित करते हुए त्रिभाषा फार्मूला दिया. इसके अंतर्गत पहली भाषा मातृभाषा होगी जिसमें प्रारंभिक शिक्षा दी जाएगी. दूसरी भाषा गैर हिन्दी भाषियों के लिए हिंदी और हिंदी भाषियों के लिए आठवीं अनुसूची में शामिल कोई भी भाषा होगी. तीसरी भाषा अंतर्राष्ट्रीय भाषा यानी अंग्रेजी होगी ताकि शिक्षित भारतीय विश्व से भी आसानी से जुड़ सकें.

हालांकि विभिन्न राज्यों की सहमति के अभाव में इसे लागू नहीं किया जा सका. इसी क्रम वर्ष 1976 में राजभाषा अधिनियम लाया गया और इसके अंतर्गत राजभाषा विभाग की स्थापना की गई. यह विभाग ही हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबंधित विभिन्न समारोहों जैसे हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा और हिंदी सप्ताह का आयोजन करता है. इसी के तत्त्वाधान में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस भी मनाया जाता है.

अगर हिंदी भाषा की संवैधानिक स्थिति की बात की जाए तो यह राजभाषा के रूप में संविधान के भाग 5, भाग 6, भाग 17 में समाविष्ट है. भाग 17 में राजभाषा शीर्षक के अंतर्गत 4 अध्याय है. इसमें संघ शासन, प्रादेशिक शासन, उच्चतम और उच्च न्यायालयों में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष निर्देश दिए गए हैं.

भाग 5 के अनुच्छेद 120 में बताया गया है कि संसदीय कामकाज की भाषा हिंदी और अंग्रेजी होगी. यदि किन्हीं सदस्यो को इन्हें बोलने में दिक्कतें हैं तो वो अध्यक्ष की अनुमति लेकर अपनी भाषा में बात कह सकते हैं. भाग 6 के अंतर्गत अनुच्छेद 210 में राज्य विधानमंडल के लिए भी ऐसे प्रावधान हैं.

अगर हिंदी भाषा की वैश्विक स्थिति की बात की जाए तो यह विश्व के 150 से अधिक देशों में फैले 2 करोड़ भारतीयों द्वारा बोली जाती है. इसके अलावा 40 देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में पढाई जाती है. एक सर्वेक्षण के मुताबिक विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा मंदारिन है तो दूसरा स्थान हिंदी भाषा का है. इसके अलावा भारत और फिजी की यह राजभाषा है. ब्रिटिश भारत काल के दौरान बहुत से श्रमिको को भारत से बाहर ले जाया गया था. इनमें से अधिकांश देशों में हिंदी भाषा आज एक क्षेत्रीय भाषा है; ये देश है- मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिनाद, गुयाना आदि. मॉरीशस में तो विश्व हिंदी सचिवालय की भी स्थापना की

गई है. हालांकि संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा अभी भी हिंदी को नहीं मिल सका है.

हिंदी का स्वाभिमान: उसका हिंदी साहित्य

हिंदी साहित्य भारतीय समाज के विकास में प्राचीन काल से ही एक समृद्ध भूमिका निभा रही है . हिंदी साहित्य के आदिकाल (1050-1375 वि.) में महत्वपूर्ण कवि सरहपा ने कहा-

जहि मण पवण ण संचरइ, रवि-ससि णाहिं पवेस? तहि बढ चित्त विसाम करु, सरहें कहिअ उएस?

तो वही भक्तिकाल(1375-1700 वि.) में मीराबाई ने हिंदी की पहली स्त्री विमर्शकार बनकर स्त्रियों के दुख से संसार को रुबरु करवाया -

बरजी मैं काहू की नाहिं रहूँ, साध संगति करि हरि सुख ले, जगसूं मैं दूरी रहूँ .

रीतिकाल(1700-1900 वि.) में चारो ओर मुग़लों के बढ़ते साम्राज्य के खिलाफ छत्रपति शिवाजी महाराज ने जिस प्रकार विद्रोह किया उसका उदाहरण हमें निमरूप में भूषण की कविता में देखने में मिलता है -

तेज तम अंस पर,कान्ह जिमि कंस पर, त्यौं मलिच्छ बंस पर, सेर सिवराज हैं..

आधुनिक काल (1900 विक्रमी-1947 ई.) समाज में हो रहे परिवर्तन को सामने लेकर आता है. . इस काल के प्रमुख कवि भारतेन्दु हरिश्चंद्र इस काल की विशेषता बताते हुए कहते है - " हिंदी नए चाल में ढली '' अर्थात हिंदी अब समाज के नये आयामों को स्पर्श कर रही है जिसके अंतर्गत वह समाज के दबे कुचले वर्ग की आवाज़ को भी स्वर दे रही है , स्त्री विमर्श के निम्न पंक्तियों को देखे - 'हिंदू स्त्री का पत्नीत्व' लेख में महादेवी वर्मा ने स्त्रियों की जिस दारुण अवस्था को चित्रित किया है, वह शिक्षा और सभ्यता के प्रसार के बावजूद आज भी अधिसंख्य स्त्रियों का जीवन-सत्य है " यदि हम कटु सत्य सह सकें तो लज्जा के साथ स्वीकार करना होगा कि समाज ने स्त्री को जीविकोपार्जन का साधन निकृष्टतम दिया है. उसे पुरुष के वैभव की प्रदर्शनी तथा मनोरंजन का साधन बन कर जीना पड़ता है . "

समकालीन साहित्य (आज़ादी के बाद से अब तक) भारत की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप हिंदी साहित्य भी परिवर्तित होता गया क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है. हिंदी साहित्य में वह तमाम विमर्श और विचारों का समावेश हो गया जिसकी समाज को मांग थी . महिलाओं के प्रश्न पर स्त्री विमर्श , दलितों के विद्रोह के अनुरुप दलित साहित्य तथा आदिवासियों के जल-जंगल-जमीन के आंदोलन के लिए आदिवासी साहित्य का उद्गम हुआ . आदिवासी समुदायों की अधिकार की बात करते हुए अनुज लुगुन अपनी कविता उलगुलान की औरतें में कहते है -

वे उतनी ही लड़ाकू थीं जितना की उनका सेनापति
वे अपनी खूबसूरती से कहीं ज्यादा खतरनाक थीं
अपने जूड़े में उन्होंने
सरहुल और ईचा: बा की जगह
साहस का फूल खोंसा था
उम्मीद को उन्होंने
कानों में बालियों की तरह पिरोया था
हक की लड़ाई में
उन्होंने बोया था आत्मसम्मान का बीज,

हिंदी का सामाजिक पक्ष

भारत एक बहुभाषी देश है और बहुभाषा-भाषी देश में सम्पर्क भाषा का विशेष महत्त्व है. अनेकता में एकता हमारी अनुपम परम्परा रही है. वास्तव में सांस्कृतिक दृष्टि से सारा भारत सदैव एक ही रहा है. हमारे इस विशाल देश में जहाँ अलग-अलग राज्यों में भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं और जहाँ लोगों के रीति-रीवाजों, खान-पान, पहनावे और रहन-सहन तक में भिन्नता हो वहाँ सम्पर्क भाषा ही एक ऐसी कडी है जो एक छोर से दूसरे छोर के लोगों को जोड़ने और उन्हें एक दूसरे के समीप लाने का काम करती है .

भारतीय समाज में हिंदी हमेशा से संपर्क भाषा के रूप में विद्यमान रही है . आज़ादी के अंतहीन संघर्ष में हिंदी ही सम्पूर्ण भारत में संपर्क की एक भाषा रही . बापू ने भी पूरे देश की जनता का आह्वान हिंदी में ही किया . राम प्रसाद बिस्मिल की ये पंक्तियाँ लोगों के ज़ुबान पर बसी थी - "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है ज़ोर कितना बाज़ूए कातिल में है ."

आह्वान कविता में अशफाकउल्ला खां लिखते है -

"कस ली है कमर अब तो, कुछ करके दिखाएंगे, आजाद ही हो लेंगे, या सर ही कटा देंगे"

हिन्दी अपनी बोलियों के व्यवहारकर्ताओं के बीच सम्पर्क की स्थापना करती रही है और अब भी कर रही है, तथा बाहय स्तर पर वह अन्य भारतीय भाषा भाषी समुदायों के मध्य एकमात्र सम्पर्क

भाषा के रूप में उभर आई है जिसके अब विविध आयाम विकसित हो चुके हैं. कुल मिलाकर हिन्दी का वर्तमान गौरवपूर्ण है. उसकी भूमिका आज भी सामान्य-जन को जोड़ने में सभी भाषाओं की अपेक्षा सबसे अधिक कारगर है.

चुनौतियाँ

अगर हिंदी भाषा की एक भाषा के तौर पर सामयिक स्थिति का विश्लेषण किया जाए तो इसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं. सबसे बड़ी चुनौती तो इसे 'राष्ट्रभाषा की स्वीकार्यता' का न मिलना है. इसके अलावा एक उच्च शिक्षित अभिजात्य वर्ग ऐसा भी है जो हिंदी बोलने में शर्म और हिचकिचाहट महसूस करता है. हिंदी भारत की सार्वभौमिक संवाद भाषा भी नहीं है. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की 41 फीसदी आबादी की ही मातृभाषा हिंदी है. इसके अलावा लगभग 75 फीसदी भारतीयों की दूसरी भाषा हिंदी है जो इसे बोल और समझ सकते हैं.

हिंदी भाषा के सामने एक प्रमुख चुनौती यह है कि यह अब तक रोजगार की भाषा नहीं बन पाई है. आज तमाम मल्टीनेशनल कंपनियों के दैनिक कामकाज से लेकर कार्य संचालन की भाषा अंग्रेजी है. इसके अलावा तमाम क्षेत्रीय राजनीतिक और सामाजिक संगठन भी अपने निहित स्वार्थों के लिए हिंदी का विरोध करते हैं. अभी भी भारत में उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा का माध्यम ज्यादातर अंग्रेजी ही रहता है. हिंदी भाषा की हालत आज ऐसी है कि इसके संबंध में जागरूकता सृजन के लिए विभिन्न सेमिनारों, समारोहों और कार्यक्रमों का सहारा लेना पड़ता है.

आगे की राह

हालांकि इंटरनेट के बढ़ते इस्तेमाल ने हिंदी भाषा के भविष्य के संबंध में भी नई राहें दिखाई है. गूगल के अनुसार भारत में अंग्रेजी भाषा में जहाँ विषयवस्तु निर्माण की रफ्तार 19 फीसदी है तो हिंदी के लिए ये आंकड़ा 94 फीसदी है. इसलिए हिंदी को नई सूचना-प्रौद्योगिकी की जरूरतों के मुताबिक ढाला जाए तो ये इस भाषा के विकास में बेहद उपयोगी सिद्ध हो सकता है. इसके लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के स्तर पर तो प्रयास किए ही जाने चाहिए, निजी स्तर पर भी लोगों को इसे खूब प्रोत्साहित किया जाना चाहिए. इसके अतिरिक्त हिंदी भाषियों को भी गैर हिंदी भाषियों को खुले दिल से स्वीकार करना होगा. उनकी भाषा-संस्कृति को समझना होगा तभी वो हिंदी को खुले मन से स्वीकार करने को तैयार होंगे.

राजेश मिश्रा
क्षेत्रीय प्रमुख
क्षेत्रीय कार्यालय, अकोला

हिंदी एक जानदार भाषा है; वह जितनी बढेगी देश को उतना ही लाभ होगा.

- पंडित जवाहरलाल नेहरु

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है.

- मैथिलीशरण गुप्त

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितीज को मिलता एक सहारा।
('चन्द्रगुप्त') - प्रसाद

विश्व ओजोन दिवस का इतिहास

प्रकृति एक ऐसी देवी है जिसने हम सभी को सिर्फ प्रदान की है चाहे वह खनिज हो, खाद्य हो या जीवन उसके बदले मे हमसे कुछ मांगा नहीं है लेकिन मनुष्य इतने लालची है कि उसे प्रकृति से जितना मिला उसके लिए वह वस्तु उतना ही कम पड़ा है और अपने स्वार्थ के पीछे इतना पागल हो गया है कि उसे अपने स्वार्थसिद्धि को छोड़ अन्य किसी चीज के तरफ नजर उठा कर भी देखने की वक्त नहीं है.

हम पृथ्वी पर मौजूद प्रत्येक स्त्रोत का इतना उपयोग कर चुके है कि आज वो लगभग अपने अंत के नजदीक है मुझे तो अभी भी यह समझ नहीं आ रहा है कि हम इसे उपयोग कहे या दुरुपयोग, खैर इसका निर्णय आपके ऊपर छोड़ देता हूँ.

ओजन परत जो कि हमारे वायुमंडल में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है उसके बारे में जानेंगे. ओजोन एक हल्के नीले रंग की गैस होती है. ओजोन परत सामान्यत: धरातल से 10 किलोमीटर से 50 किलोमीटर की ऊंचाई के बीच पाई जाती है. यह गैस सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणों के लिए एक अच्छे फिल्टर का काम करती है.ओ. जोन ऑक्सीजन के तीन परमाणुओं से मिलकर बनने वाली एक गैस है जो कि वातावरण में बहुत कम मात्रा में पाई जाती है. लेकिन बढ़ते औद्योगीकरण के परिणामस्वरू वायुमंडल में कुछ ऐसे रसायनों की मात्रा बढ़ गयी, जिनके दुष्प्रभाव से ओज़ोन परत को ख़तरा उत्पन्न हो गया है. ऐसे रसायनों में 'क्लोरों फ्लोरो कार्बन' (सी.एफ.सी), क्लोरीन एवं नाइट्रस ऑक्साइड गैसें प्रमुख है. ये रसायन ओज़ोन गैस को ऑक्सीजन में विघटित कर देते हैं, जिसकी वजह से ओज़ोन परत पतली हो जाती है और उसमें छिद्र हो जाता है. यहाँ तक कि ओज़ोन परत में छिद्र का आकार यूरोप के आकार के बराबर हो गया है. ओज़ोन परत में छिद्र हो जाने के कारण सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणें और रेडियो विकिरण धरती तक पहुंच जाते हैं तथा जीव-जन्तुओं एवं वनस्पतियों पर अपना कुप्रभाव छोड़ते हैं. जहाँ निचले वातावरण में पृथ्वी के निकट इसकी उपस्थिति प्रदूषण को बढ़ाने वाली और मानव तक के लिए नुकसानदेह है, वहीं ऊपरी वायुमंडल में इसकी उपस्थिति परमावश्यक है. ओजोन परत के इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए पिछले दो दशक से इसे बचाने के लिए कार्य किए जा रहे हैं. लेकिन 23 जनवरी, 1995 को संयुक्त राष्ट्रसंघ(UNO) की आम सभा में पूरे विश्व में इसके प्रति लोगों में जागरूकता लाने के लिए 16 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय ओजोन दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव पारित किया गया. उस समय लक्ष्य रखा गया कि पूरे विश्व में 2010 तक ओजोन मित्र वातावरण बनाया जाए. लेकिन यह विषय अत्यंत विचारणीय है कि आखिर हमें ऐसे किसी विशेष दिन को लक्षित करने के पीछे के कारण क्या है और यह भी जानना अतिआवश्यक है कि कैस हम इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं . तो चलिये इसके कारण और निवारण पर नजर डालते हैं –

ओजोन को जितनी तेजी से बनाया जा सकता है, उससे कहीं ज्यादा तेजी से नष्ट किया जा सकता है.

जब कुछ यौगिकों को समताप मंडल में तीव्र यूवी प्रकाश के संपर्क में लाया जाता है, तो वे क्लोरीन या ब्रोमीन का उत्सर्जन करते हैं.

ओजोन-क्षयकारी पदार्थ ऐसे रसायन होते हैं, जिन्हें अगर बाहर निकलने दिया जाता है, तो ऊपरी वायुमंडल की ओजोन परत को नुकसान पहुंचाते हैं. क्योंकि कुछ ओडीएस में ग्लोबल वार्मिंग की क्षमता होती है, वे जलवायु परिवर्तन में योगदान करते हैं. अधिकांश ओडीएस अब प्रतिबंधित हैं.

निम्नलिखित कुछ सबसे सामान्य ओजोन-क्षयकारी यौगिकों और उन स्त्रोतों की सूची है जिनसे वे मुक्त होते हैं:

ओजोन क्षयकारी पदार्थ	स्त्रोत
क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सी.एफ.सी.)	रेफ्रिजरेटर, एयर-कंडीशनर, सॉल्वेंट्स, ड्राई-क्लीनिंग एजेंट आदि.
हेलोन्स	अग्निशमक
कार्बन टेट्राक्लोराइड	अग्निशामक, विलायक
मिथाइल क्लोरोफॉर्म	चिपकने वाले पदार्थ, एरोसोल
हाइड्रोफ्लोरोकार्बन	अग्निशामक, एयर-कंडीशनर, सॉल्वेंट्स

क्लोरोफ्लोरोकार्बन

- क्लोरोफ्लोरोकार्बन क्लोरीन, फ्लोरीन और कार्बन से बने यौगिक हैं.
- वे छोड़े गए रेफ्रिजरेटर, एरोसोल, सॉल्वेंट्स और अन्य पदार्थों द्वारा पर्यावरण में उत्सर्जित होते हैं.
- जब सीएफ़सी अणु यूवी विकिरण के संपर्क में आते हैं, तो वे टूट जाते हैं, क्लोरीन परमाणु छोड़ते हैं.
- यह मुक्त क्लोरीन परमाणु ओजोन से अभिक्रिया कर उसे नष्ट कर देता है.
- क्लोरोफ्लोरोकार्बन पर पूरा लेख यहाँ पढ़ने के लिए यहाँ क्लिक करें!

रेफ्रीजरेशन उद्योग में प्रमुख रूप से प्रयुक्त होने वाली क्लोरा फलोरा कार्बन (सी.एफ.सी.), क्लोरीन, फ्लोरीन तथा कार्बन का यौगिक है.

सूर्य की पराबैंगनी किरणें वायुमंडल में विद्यमान सी.एफ.सी. को तोड़ देती है तथा अलग हुई क्लोरीन एवं फ्लोरीन ओज़ोन गैस के अणुओं को ऑक्सीजन में विघटित कर देती है. ध्यातव्य है कि क्लोरीन का एक परमाणु 1,00,000 ओज़ोन अणुओं को नष्ट करने की क्षमता रखता है.

नाइट्रोजन यौगिक

- नाइट्रोजन के यौगिक जैसे NO2, NO, और N2O ओजोन रिक्तीकरण के लिए जिम्मेदार हैं.
- नाइट्रोजन ऑक्साइड मुख्य रूप से थर्मोन्यूक्लियर हथियार विस्फोटों, कृषि उर्वरकों और औद्योगिक प्रदूषण से उत्पन्न होते हैं.
- हाइड्रोब्रोमोफ्लोरोकार्बन (HBFC) ब्रोमीन यौगिक हैं जिनका उपयोग अग्निशामक यंत्रों में किया जाता है.
- प्रत्येक ब्रोमीन परमाणु क्लोरीन परमाणु के रूप में ओजोन अणुओं की संख्या का सौ गुना अधिक मारता है.

जीवाश्म ईंधन

- जीवाश्म ईंधन के उपयोग से ओजोन परत नष्ट हो रही है.
- जीवाश्म ईंधन का उपयोग ऑटोमोबाइल, कारखानों और बिजली पैदा करने के लिए किया जाता है.
- इन ईंधनों को जीवाश्म ईंधन के रूप में जाना जाता है क्योंकि ये प्रागैतिहासिक पौधों और जानवरों के कार्बनिक अवशेषों से बने थे.

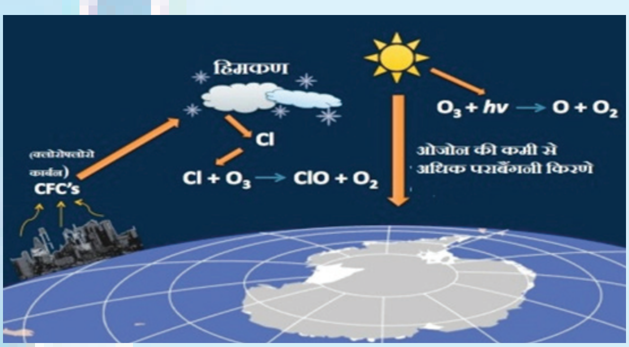

CFC से अंटार्कटिका पर बना ओजोन छिद्र

ओजोन परत के क्षरण के प्रभाव

ओजोन परत का क्षरण मानव स्वास्थ्य, जानवरों, पर्यावरण और समुद्री जीवन के लिए खतरनाक है. ओजोन के स्तर में कमी का अर्थ है पृथ्वी की सतह पर सौर यूवी-बी विकिरण का अधिक प्रवेश. यह मानव स्वास्थ्य, जानवरों, पौधों, बैक्टीरिया और वायु गुणवत्ता के लिए बेहद हानिकारक है.

स्वास्थ्य पर प्रभाव

- अध्ययनों से पता चलता है कि यूवी-बी किरणों में वृद्धि से त्वचा कैंसर का खतरा बढ़ जाता है, और घातक मेलेनोमा, सनबर्न, तेजी से उम्र बढ़ने, आंखों के मोतियाबिंद, अंधापन और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाता है. प्रत्यक्ष पराबैंगनी विकिरण के संपर्क में आने से जानवरों में त्वचा और आंखों का कैंसर होता है.

मानव और पशु स्वास्थ्य परिणाम

- नेत्र रोग, त्वचा कैंसर और संक्रामक रोगों से रुग्णता की घटनाओं में वृद्धि होने से लोग अधिक संवेदनशील हो जाते हैं.
- यूवी बी विकिरण निष्पक्ष त्वचा वाले लोगों में गैर-मेलानोमा त्वचा कैंसर के विकास के लिए प्राथमिक जोखिम कारक है.

पौधों पर प्रभाव

- यूवी-बी प्रकाश का पौधे की मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है.
- जिस तरह से विभिन्न प्रजातियां यूवी-बी पर प्रतिक्रिया करती हैं, वे काफी भिन्न होती हैं. नतीजतन, कृषि में अधिक यूवी-बी सहिष्णु प्रजातियों का उपयोग किया जाना चाहिए.
- यह जंगलों और घास के मैदानों में प्रजातियों की संरचना को बदलता है.
- यूवी-बी विकिरण विभिन्न अप्रत्यक्ष परिवर्तनों का कारण बनता है, जिसमें पौधे का आकार, बायोमास आवंटन और विकास चरणों का समय शामिल है.

जलीय पारिस्थितिक तंत्र पर प्रभाव

- अधिक यूवी-बी विकिरण एक्सपोजर ने फाइटोप्लांकटन गतिशीलता को प्रभावित किया है, जिसके परिणामस्वरूप इन जीवों के लिए जीवित रहने की दर कम है.
- यूवी-बी विकिरण को मछली, केकड़ों, उभयचरों और अन्य जानवरों में विकासात्मक क्षति का कारण दिखाया गया है.
- अधिक गंभीर प्रभाव प्रजनन क्षमता में कमी है.

वायु गुणवत्ता पर प्रभाव

- वायुमंडल की ऊपरी परतों में ओजोन की कमी और निचले वातावरण में प्रवेश करने वाले यूवी-बी विकिरण की प्रत्यक्ष वृद्धि से उत्पन्न होने के लिए क्षोभमंडल की रासायनिक प्रतिक्रिया को प्रभावित करने वाली गैसों की उच्च फोटोडिसोसिएशन दर.
- इन अंत:क्रियाओं के उत्पादों को मानव स्वास्थ्य, पौधों और बाहरी वस्तुओं के लिए हानिकारक माना जाता है.
- उच्च क्षोभमंडलीय प्रतिक्रियाशीलता के परिणामस्वरूप मानवजनित और प्राकृतिक दोनों स्रोतों से ऑक्सीकरण और सल्फर न्यूक्लिएशन के कारण कण निर्माण में वृद्धि होगी.

पदार्थों पर प्रभाव

- यूवी विकिरण पॉलिमर, प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले बायोपॉलिमर और कई अन्य व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण सामग्रियों जैसी सामग्रियों को प्रभावित करता है.
- आंशिक ओजोन रिक्तीकरण के कारण सौर यूवी-बी सांद्रता में वृद्धि कुछ सामग्रियों के फोटोडिग्रेडेशन को बढ़ाती है, जिससे उनका बाहरी जीवन सीमित हो जाता है.

ओज़ोन परत को नष्ट करने वाले रसायन और उनसे छुटकारा पाने का कार्यक्रम

मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के तहत फिलहाल 96 रसायनों पर नियंत्रण लगाया गया है जिसमें शामिल हैं-

हेलो कार्बन जो क्लोरोफ्लोरोकार्बन और हेलॅन्स के रूप में उल्लेखनीय है. 1928 में क्लोरोफ्लोरो कार्बन की खोज हुई और इन्हें आश्चर्यजनक गैस माना गया, क्योंकि ये लम्बे समय तक रहती है, और विषैली नहीं होती हैं. इनसे जंग नहीं लगता (असंक्षारक) और ये अज्वलनशील होती हैं. ये परिवर्तनशील है और 1960 के दशक से रेफ्रिजरेटरों, एयरकंडीशनरों, स्प्रे केंस, विलायकों, फोम और अन्य अनुप्रयोगों में इनका उपयोग बढ़ता जा रहा है.

कार्बन टेट्राक्लोराइड विलायक के रूप में उपयोग की जाती है और वायुमंडल में विघटित होने में करीब 42 वर्ष लेती है. मिथाइल क्लोरोफोर्म (1,1,1-ट्राईक्लोरोइथेन) भी विलायक के रूप में इस्तेमाल की जाती है और विघटित होने में करीब 5.4 वर्ष लेती है. हाइड्रोब्रोमोफ्लोरोकार्बन (एचबीएफसी) का अधिक इस्तेमाल नहीं किया जाता है, परंतु किसी नये इस्तेमाल से बचने के लिए इनको भी प्रोटोकॉल के तहत शामिल किया गया है.

हाइड्रोक्लोरोफ्लोरोकार्बन (एचसीएफसी) सीएफसी के स्थान पर प्रयुक्त करने के लिए पहले प्रमुख विस्थापक के रूप में इसका विकास किया गया था. यह क्लोरोफ्लोरोकार्बन की तुलना में बहुत कम विनाशक है. एचसीएफसी भी ओजोन की क्षय में योगदान देती है और वायुमंडल में करीब 1.4 से 19.5 वर्ष तक विद्यमान रहती है.

मिथाइल ब्रोमोइड (सीएच-3 बीआर) बहुमूल्य फसलों, कीट नियंत्रण और निर्यात के लिये प्रतीक्षित कृषि जिंसों के क्वेरेन्टाइन उपचार के लिये धूम्रक (फ्यूमिगैन्ट) के रूप में इस्तेमाल की जाती है. वायुमंडल में विघटित होने में इसे करीब 0.7 वर्ष लगते हैं.

ब्रोमोक्लोरोमीथेन (बीसीएम) ओजोन को क्षति पहुंचाने वाला नया तत्व है जिसे कुछ कम्पनियों ने 1998 में बाजार में उतारने की अनुमति मांगी थी. इसको इस्तेमाल से बाहर करने के लिये 1999 के संशोधन में शामिल किया गया.

प्रोटोकॉल के बिना, वर्ष 2050 तक ओजोन का अवक्षय उत्तरी गोलार्ध के मध्य अक्षांश में कम से कम 50% और दक्षिणी मध्य अक्षांश में 70% बढ़ जाएगा जो मौजूदा स्तर से 10 गुणा अधिक बुरा होगा. इसका परिणाम उत्तरी मध्य अक्षांश में धरती पर दुगुनी तथा दक्षिण में चौगुनी अल्ट्रावायलेट-बी (पराबैंगनी) विकिरण के रूप में दिखाई देगा. वायुमंडल में ओजोन के अवक्षय के लिए जिम्मेदार रसायनों की मात्रा पांच गुना अधिक होगी.

निष्कर्ष : वैज्ञानिकों ने अनुमान व्यक्त किया है कि अगले पांच वर्षों के दौरान ओजोन क्षय अपने सबसे बुरे स्तर पर पहुंच जाएगा और फिर धीरे-धीरे इसमें विपरीत रूझान आना शुरू होगा एवं करीब 2050 तक ओजोन परत सामान्य स्तर पर आ जाएगी. यह अनुमान इस आधार पर व्यक्त किया गया है कि मॉंट्रियल प्रोटोकोल को पूरी तरह लागू किया जाएगा. ओजोन परत फिलहाल बेहद संवेदनशील अवस्था में है. क्लोरोफ्लोरोकार्बन उत्सर्जन में कमी के बावजूद, समतापमंडलीय सांद्रण अब भी बढ़ रहा है (तथापि निचले वायुमंडल में वे कम हो रहे हैं) क्योंकि लम्बे समय तक बने रहने वाले क्लोरोफ्लोरोकार्बन का जो उत्सर्जन हो चुका है वह समताप मंडल में अब भी बढ़ना जारी है. कुछ निश्चित क्लोरोफ्लोरोकार्बन (जैसे सीएफसी-11 और सीएफसी-113), कार्बन टेट्राक्लोराइड और मिथाइल क्लोरोफार्म की प्रचुरता घट रही है. ज्यादातर हैलॅन्स की प्रचुरता में वृद्धि जारी है. वस्तुत: हाइड्रोक्लोरोफ्लोरोकार्बन और हाइड्रोफ्लोरोकार्बन बढ़ रहे हैं, क्योंकि वे क्लोरोफ्लोरोकार्बन (जो इस्तेमाल से बाहर किए जा रहे हैं) के विकल्पों के रूप में इस्तेमाल किए जा रहे हैं. ओजोन सुरक्षा की सफलता संभव हुई है क्योंकि विज्ञान और उद्योग ओजोन का क्षय करने वाले रसायनों के विकल्पों को विकसित करने और उनका व्यावसायीकरण करने में सफल रहे हैं.

ओजोन परत को बचाने की प्रतिबद्धता का ही परिणाम है कि आज बाजार में ओजोन मित्र फ्रिज, कूलर आदि आ गए हैं. इस परत को बचाने के लिए जरूरी है कि फोम के गद्दों का इस्तेमाल न किया जाए. प्लास्टिक का इस्तेमाल कम से कम हो. रूम फ्रेशनर्स व केमिकल परफ्यूम का उपयोग न किया जाए और ओजोन मित्र रेफ्रीजरेटर, एयर कंडीशन का ही इस्तेमाल किया जाए. इसके अलावा अपने घर की बनावट ओजोन मित्र तरीके से किया जाए, जिसमें रोशनी, हवा व ऊर्जा के लिए प्राकृतिक स्त्रोतों का प्रयोग हो.

यह धरती हमें एक विरासत के तौर पर मिली है जिसे हमें आने वाली पीढ़ी को भी देना है. हमें ऐसे रास्ते अपनाने चाहिए जिनसे ना सिर्फ हमारा फायदा हो बल्कि उससे हमारी आने वाली पीढ़ी भी इस बेहद खूबसूरत धरती का आनंद ले सके.

विनय सिंह वैश
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, वारंगल

Operation Risk reduction and Fraud Prevention!!

(Your every effort counts!)

Operation Risk is the risk of losses cause by flawed and failed process, policies, systems or events that disrupts business operations. Increase in Frauds, is one of the major contributors to increase of Operation risk of Bank, non the less, other activities like theft, decoity, fire, data loss are also critical factors which increase Operation Risk.

Banks/Financial Institutions by virtue of their nature of activities and area of dealing i.e money and their operating environment are always vulnerable to fraud. The fraud may take place due to ill intention of outsider or insider (staff members).

However, adequate/appropriate internal controls and adhering to operational guidelines issued by bank, has proved itself helpful in lowering operational risk & preventing fraud incidents. In the recent past, incidences of attempted frauds in the Banking industry, have increased but the fraudsters failed in their mission due to our vigilant staff members. Here role of our staff members, their prompt and assertive approach has played a crucial role in preventing frauds.

As fraudsters resort to careful planning before striking at the system of its most vulnerable points, We, as employees have to continuously strengthen our operational practices, procedures, controls, and approach to fight against both, internal and external fraudsters.

To make our employees more aware about the measures/steps, we have prepared list of some indicative approaches which will definitely help one as enabler for reduction in Operation Risk as well as fraud. In order to keep it handy, we have listed in form of One liners which is not only easy in going through but also may be placed near seating place which will work as overall effective reminder.

Branch Operation- One liners

- Never allow access to CBS PCs to people other than staff(BCs/safari person etc)
- All stamps/seals of bank kept in lock & key after use/day end.
- Cash should be taken/kept in vault jointly by vault teller and Head Cashier.
- Details of transaction should be properly mentioned in vouchers as well as in CBS.
- ATM cards & Cheque books should be issued on proper request and to be handed over to correct person, after proper acknowledgement.
- Current account & Nominal of branch must remain reconciled.
- P&L accounts should be compared with figures of previous quarter and year to check any abrupt expense increase in a particular area.
- All P&L expenses should be recorded in register and vouchers to be checked by Branch Head.

- Informed customers is always goods for bank. Request customers for mobile number & email id seeding, and activation of SMS alert and monthly statement over mail.
- Meet all neighbors of branch premises periodically.
- Disk Locks are difficult to break! all gate locks should be branded disk locks.
- Lights of outside of branch/ATMs should be working properly and remain ON at night.
- Important phone numbers like fire station/ police stations/hospitals etc should be displayed in legible size in branch.
- "YOU ARE UNDER CCTV CAMERA COVERAGE" should be displayed in branch.
- Head cashier/cashier must lock his cash cabin from inside during banking hours. During any natural call or break, He/she must keep all the cash in drawer and lock his cabin properly.
- Signed Cheques and RTGS request forms should not be left on desk unattended.
- Gate of strong room should be locked after use of locker/vault?
- Decoy money should be placed and changed after regular interval.
- Fire extinguishers should be placed at approachable place, so that it may be accessed at time of exigency.
- Locker operation entry should be marked in CBS as well as register properly.
- Attendance of all staff should be marked in HRMS on regular basis.
- Inward and outward register in branch and all letter correspondence should be maintained properly.

Credit Relate- One Liners

- Branch Head/Credit Officer should read, understand the credit policy and should keep himself updated time to time.
- In pre- inspection report, the officer should furnish specific comments about business, condition of collateral security, boundary and landmark of property.
- Post sanction inspection should be carried out preferably by staff member other than who has carried out pre inspection.
- Periodic inspection of collateral security to be carried out time to time as per stipulated norms.
- It should be ascertained that mortgaged security is adequately insured and bank charge is appearing in insurance papers.
- Wherever applicable, LSR 2 should be taken if last LSR is more than 3 years as per SOP.
- LSR & Valuation reprot to be checked properly. Some Valuers/Advocates give conditional reports (sometimes). If we miss to comply , we fall in trouble for non-compliance!!
- If our CC/OD holder is maintaining Current account with other banks in contravention of RBI guidelines, the customer should be asked to close the account immediately. Such accounts are mostly used for diversion of funds.

Ranvijay Singh
Chief Manger
FRMC-RMD,CO

पर्यावरण संरक्षण

प्रस्तावना:

विकास और प्रगति के कारण हमारे चारों ओर होने वाले परिवर्तन जैसे नित्य नए निर्माण, नए कारखानों का खुलना आदि पृथ्वी की स्थिति को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं. नित वृक्षों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूमि प्रदूषण आदि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को बढ़ावा देते हैं. हमारे आसपास की हर चीज पर्यावरण में शामिल होती है. पर्यावरण संरक्षण आज के समय में हमारी सबसे बड़ी चुनौती है. अगर हमारा पर्यावरण संतुलित नहीं रहेगा तो पृथ्वी पर जीवन संभव ही नहीं है.

पर्यावरण का मतलब:

पर्यावरण को अंग्रेजी में "Environment" कहते हैं. यह एक फ्रेंच शब्द Environia से लिया गया है, जिसका अर्थ है आसपास. यह जीवित और निर्जीव दोनों को दर्शाता है. अर्थात पर्यावरण शब्द का अर्थ है, वह परिवेश जिसमें सब(जीव +निर्जीव) रहते हैं. हमारे आसपास के सभी जीव-जंतु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे सब पर्यावरण का हिस्सा है. पर्यावरण को हम आसान भाषा में इस तरह से समझ सकते हैं, कि पृथ्वी और उसके चारों तरफ का वातावरण मिला दिया जाए तो वह पर्यावरण कहलाता है.

सुंदर नीला आसमान, पक्षियों का कलरव, हरे भरे पेड़, सुंदर प्राकृतिक दृश्य यह सभी हमारे पर्यावरण का हिस्सा है, जो हमें पृथ्वी पर रहने के लिए अनुकूल माहौल प्रदान करते हैं. अगर हमने पर्यावरण का महत्व नहीं समझा तो हमें इसके बहुत सारे घातक परिणाम झेलने पड़ सकते हैं.

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता:

पर्यावरण संरक्षण बहुत आवश्यक है, क्योंकि हम सीधे रूप से पर्यावरण से जुड़े हुए हैं. हम सभी की जीवन यात्रा पूरी तरह से पर्यावरण पर आश्रित है. नीचे कुछ बिंदुओं कि सहायता से हम पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता क्यों पड़ी यह समझ सकते हैं.

- स्वास्थ्य के लिए:

  स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है. अगर हमारा पर्यावरण दूषित रहेगा तो हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ेगा. जिससे स्वांस संबंधित बीमारियां, किडनी रोग, हृदय रोग आदि का खतरा बना रहता है.

- संसाधनों के संरक्षण के लिए:

  प्राकृतिक संसाधन सीमित होते हैं. पर्यावरण संरक्षण से हम प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग कर सकते हैं और उन्हें भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित कर सकते हैं.

- जलवायु परिवर्तन के लिए:

  पर्यावरण संरक्षण से हम जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम कर सकते हैं. वृक्षारोपण से प्रदूषण को कम किया जा सकता है और प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग करके हम ग्लोबल वार्मिंग और अन्य जलवायु परिवर्तन की परेशानियों से निपटने में सक्षम हो सकते हैं.

- जीवनधारा के लिए:

  पर्यावरण संरक्षण जीवन की धारा को बनाए रखने के लिए भी अति महत्वपूर्ण है. वनस्पति और जीवो का संरक्षण, जीवन के चक्र को संतुलित बनाए रखने में मदद करता है.

- भूतल जल की सुरक्षा के लिए:

  पर्यावरण संरक्षण की मदद से हम भूतल जल के स्तर को बनाए रख सकते हैं. वृक्षारोपण और जल संचय जैसी गतिविधियों से हम जल संकट को रोक सकते हैं.

- वायुमंडल परिवर्तन को नियंत्रण करने के लिए:

  पेड़ पौधे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन उत्सर्जित करते हैं, जो हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है. इस प्रक्रिया के माध्यम से वे वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करते हैं जो जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण है.

- मृदा संरक्षण के लिए:

  पर्यावरण संरक्षण के माध्यम से हम मृदा को उपजाऊ बनाए रख सकते हैं. जैविक खेती, कंपोस्टिंग और अन्य स्थिरीकरण तकनीकों का उपयोग करके हम मिट्टी की ऊजता को बढ़ा सकते हैं .

- अर्थव्यवस्था के लिए:

  पर्यावरण संरक्षण स्थाई विकास के लिए भी आवश्यक है. अच्छा वातावरण, सुरक्षित नीतियां अर्थव्यवस्था को बढ़ावा

देती हैं, क्योंकि यह टिकाऊ उत्पादन तकनीकी को प्रोत्साहित करती हैं और साथ ही नए रोजगार का सृजन भी करती हैं.

- वन्य जीव और जैव विविधता की सुरक्षा के लिए:

  पर्यावरण संरक्षण वन्य जीव और जैव विविधता की सुरक्षा के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है. विविधता की सुरक्षा हमारे वन्य जीव अभ्यारण और राष्ट्रीय उद्यान मे अनेक विलुप्त प्रजातियां को सुरक्षित करने का काम कर रहे हैं.

- समाज की स्थिति को सुधारने के लिए:

  पर्यावरण संरक्षण की मदद से हम सामाजिक स्थिति को सुधारने में भी मदद ले सकते हैं. जैसे पर्यावरण की सुरक्षा के लिए आवश्यक शैक्षिक कार्यक्रमों और जागरूकता अभियानों के माध्यम से हम समाज को अधिक जागरूक और सचेत नागरिक तैयार करके दे सकते हैं.

पर्यावरण संरक्षण के उपाय

- वृक्षारोपण:

  वृक्ष हमारे पर्यावरण के सबसे अच्छे मित्र हैं. वृक्ष हमें शुद्ध हवा देते हैं, जलवायु परिवर्तन को रोकते हैं और वनस्पति एवं जानवरों के लिए आवास प्रदान करते हैं. हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए लोगो को प्रेरित करना चाहिए.

- जागरूकता और शिक्षा :

  पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा और जागरूकता हमारे समाज के हर व्यक्ति तक पहुंचाने चाहिए. हमें बच्चों युवाओं और वयस्कों को पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए उन्हें शिक्षित करना चाहिए. हमें उन्हें पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक कराना चाहिए और उन्हें स्थानीय स्तर पर काम करने के लिए प्रेरित करना चाहिए.

- प्रदूषण नियंत्रण प्रदूषण :

  हमें प्रदूषण नियंत्रण करने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए. विशेषकर, हवा और जल प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए हमें अधिक से अधिक वायुमंडलीय मानकों का पालन करना चाहिए. हमें उच्च गुणवत्ता वाले ईंधन का उपयोग करना चाहिए और प्रदूषण को कम करने वाली तकनीकों को अपनाना चाहिए.

- री - साइकिल:

  रीसाइक्लिंग एक ऐसा तरीका है, जिससे हम प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद होने से बचा सकते हैं. जैसे कागज, प्लास्टिक ग्लास और अन्य सामग्री का पुन: उपयोग करके हम पर्यावरण को स्वच्छ एवं स्वस्थ रख सकते हैं.

- सतत विकास:

  सतत विकास एक ऐसा विकास है, जिसमें हम अपनी भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को खतरे में ना डालते हुए अपनी वर्तमान जरूरतों को भी पूरा करते हैं. जैसे जल, ईंधन आदि को बर्बाद ना करके सिर्फ अपनी जरूरत भर इस्तेमाल करके, अपनी भविष्य की पीढ़ी के लिए संरक्षित करना सतत विकास कहलाता है.

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम

भारत में भारत सरकार ने पर्यावरण संरक्षण के लिए कई कानून बनाए हैं. जिनमें से प्रमुख हैं-

"पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 (The Environment Protection Act, 1986). इस अधिनियम के अंतर्गत सरकार को विभिन्न प्रकार के प्रदूषण को नियंत्रित करने पर्यावरणीय गुणवत्ता के मन को को निर्धारित करने और जो क्षेत्र पर्यावरणीय दृष्टि से संवेदनशील हैं उन्हें सुरक्षित करने की अनुमति देता है.

इस अधिनियम का उद्देश्य:

इस अधिनियम का उद्देश्य पर्यावरण के संरक्षण और सुधार को सुनिश्चित करना है. इसके तहत भारत सरकार को ऐसे निर्देश जारी करने का अधिकार दिया जाता है जो इसके उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करती है. यह अधिनियम भारतीय पर्यावरण कानून का महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह पर्यावरण के संरक्षण और सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण भी है. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम ने भारत में पर्यावरण संरक्षण को एक सार्वजनिक जिम्मेदारी के रूप में प्रस्तुत किया है . इसने नागरिकों, सरकारी एजेंसियों और निजी संस्थाओं को समझाया है कि वह अपने कार्य से होने वाले पर्यावरण प्रभाव को घटाएं और पर्यावरण को बचाने में मदद करें.

इस अधिनियम के अधिकार:

इस अधिनियम का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है की इसमें केंद्र सरकार को विशेष अधिकार दिए गए हैं, ताकि वह किसी भी क्षेत्र को " इकोलॉजिकली संवेदनशील क्षेत्र "(Ecologically Sensitive Zone)" घोषित कर सके. इसका अर्थ है कि केंद्र सरकार विशेष रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में विकास की गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए नियम बना सकती है, जैसे कि हिमालय क्षेत्र, पश्चिमी घाट आदि.

इस नियम के अंतर्गत यह भी स्पष्ट रूप से उल्लेखित है कि, किसी भी औद्योगिकिया व्यवसाई गतिविधि को शुरू करने से पहले एक पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन (EIA) आवश्यक होगा. यह एक प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न पर्यावरणीय प्रभावों का विश्लेषण किया जाता है. जो एक प्रस्तावित परियोजना या गतिविधि से संबंधित हो सकता है.

इस अधिनियम में विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय अपराधों के लिए दंड भी निर्धारित किए गए हैं. किसी भी व्यक्ति या संगठन द्वारा इन अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन किए जाने पर कड़ी दंड का प्रावधान है. यदि कोई व्यक्ति या संगठन इस अधिनियम के तहत जारी किए गए निर्देशों का पालन नहीं करता है तो उसे जेल की सजा हो सकती है जो 1 से लेकर 5 वर्ष तक हो सकती है, या जुर्माना जो ₹100000 तक हो सकता है. या जेल और जुर्माना दोनों भी हो सकता है. यदि उल्लंघन जारी रहता है तो हर दिन के लिए अतिरिक्त जुर्माना भी लगाया जा सकता है. यदि उल्लंघन 1 वर्ष के बाद भी जारी रहता है तो इसके लिए अतिरिक्त कारावास की सजा हो सकती है.

निष्कर्ष:

पर्यावरण की महत्वता और जरूरत को देखते हुए हमें पर्यावरण की सुरक्षा के लिए जिम्मेदारी लेनी चाहिए. हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए एकत्रित होकर काम करने की आवश्यकता है, ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ, सुरक्षित और हरा-भरा वातावरण छोड़ सकें. पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी योजनाओं या कानूनों के आधार पर संभव नहीं हो सकता यह हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है. हमें अपने दैनिक जीवन में ऐसी आदतों को अपनाना होगा जो पर्यावरण के लिए अनुकूल है. हमें प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करना चाहिए. जल संरक्षण अति आवश्यक है, क्योंकि जल बिना जीवन संभव ही नहीं है. तो हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम कम से कम पानी का प्रयोग करें और बर्बाद तो बिल्कुल भी ना करें. इसके अलावा हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए और पेड़ों की देखभाल भी करनी चाहिए. पर्यावरण संरक्षण केवल एक विचार नहीं है यह हमारी एक आवश्यकता है. यदि हम चाहते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ियां और उनकी आने वाली पीढ़ियों को स्वस्थ और समृद्ध जीवन दे सके तो हमें अपने पर्यावरण को सुरक्षित और संरक्षित करने की दिशा में कदम उठाना होगा.

पर्यावरण संरक्षण के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम से हम पर्यावरण को काफी हद तक बचाने में सफल हुए हैं .लेकिन यह बहुत ही अफसोस की बात है की आज भी लोग पर्यावरण संरक्षण की जरूरत को गंभीरता से नहीं लेते हैं और पर्यावरण के विपरीत कदम उठाते हैं.

दोस्तों उम्मीद है, आपको हमारा पर्यावरण संरक्षण पर निबंध पसंद आया होगा. अगर आपको हमारा यह लेख पसंद आया हो तो इसे अपने मित्रों के साथ साझा करें, धन्यवाद.

निखिल लाडंगे
सहायक प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, अपर असम

हाँ मैं नारी हूँ

तोड के पिंजरा
जाने कब मैं उड जाउंगी
चाहे लाख बिछा लो बंदिशे
फिर भी दूर गगन में अपनी जगह बनाउंगी
हॉ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ.
भले ही परम्परावादी जंजीरो से बांधे है
दुनिया ने पैर मेरे
फिर भी उन जंजीरो को तोड जाऊंगी.
मैं किसी से कम नहीं सारी दुनिया को दिखाउंगी
हॉ गर्व है मुझे मै नारी हूँ .

कृष्णा यादव
सहायक प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

पर्यावरण व प्राकृतिक संपदाओं का संरक्षण

हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर,
बैठ शिला की शीतल छांह एक पुरुष भीगे नयनों से,
देख रहा था प्रलय प्रवाह निकल रही थी मर्म बेदना,
करूण विकल कहानी सी वहाँ अकेली प्रकृति सुन रही,
हंसती सी पहचानी सी.

वर्ष 1936 में जब जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में प्रलय की कल्पना की थी, तब महाविनाश की कोई घटना नहीं घटी थी, लेकिन नेपाल समेत भारत में आए जलजलों से प्रलय का ही अहसास हो रहा है. प्रकृति जब कुपित होती है, तो उसके दुष्परिणाम भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के रूप में सामने आते हैं. जब भूकंप आता है, तो धरती कांप उठती है और चारों तरफ तबाही के मंजर देखने को मिलते हैं. कुपित प्रकृति विनाश का तांडव करती है, जिसके सामने मानव असहाय नजर आता है. भूकंपों की वजह से जान माल का भारी नुकसान होता है तथा इतनी अधिक क्षति होती है कि उससे उबरने में वर्षों लग जाते है. इसलिए हम सब को मिलकर पर्यावरण व प्रकृति का संरक्षण करना चाहिएघ्

पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों में हवा, पानी मिट्टी, खनिज, ईंधन, पौधे और जानवर शामिल है. इन संसाधनों की देखभाल करना और इनका सीमित उपयोग करना ही प्रकृति का संरक्षण है. ताकि सभी जीवित चीजें भविष्य में उनके द्वारा लाभान्वित हो सकें. प्रकृति, संसाधन और पर्यावरण हमारे जीवन और अस्तित्व का आधार है. हालांकि आधुनिक सभ्यता की उन्नति ने हमारे ग्रह के प्राकृतिक संसाधनों पर बहुत प्रभाव डाला है. इसलिए आज प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरुरी है. प्रकृति या पर्यावरण का संरक्षण केवल स्थायी संसाधनों के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन को दर्शाता है. जिसमें वन्यजीव, जल, वायु और पृथ्वी शामिल है. अक्षय और गैर-नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन है. प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण आमतौर पर मनुष्यों की जरूरतों और रुचियों पर केंद्रित होता है उदाहरण के लिए जैविक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोरंजक मूल्य .

संरक्षणवादियों का मानना है कि, बेहतर भविष्य के लिए विकास आवश्यक है. लेकिन जब परिवर्तन ऐसे तरीके से होते हैं, जो प्रकृति को नुकसान पहुंचते हों तो वे विकास नहीं, वरना आने वाली पीढियों के लिए विनाश का सबब बनते हैं. खाने, पानी, वायु और आश्रय जैसी सभी चीजें हमें जीवित रहने के लिए जरुरी हैं. ये सभी प्राकृतिक संसाधनों के अंतर्गत आते हैं. इनमें से कुछ संसाधन छोटे पौधों की तरह होते हैं. इन्हें इस्तेमाल किए जाने के बाद जल्दी से बदला जा सकता है. दूसरे, बड़े पेडों की तरह होते हैं. इनके बदलने में बहुत समय लगता है. यह अक्षय संसाधन है. अन्य संसाधन जैसे कि, जीवाश्म इंधन बिलकुल नहीं बदला जा सकता है. एक बार उपयोग करने के बाद ये पुन: प्राप्त नहीं किए जा सकते हैं. ये गैर नवीनीकरण संसाधन के अंतर्गत आते हैं.

यदि संसाधन लापरवाही से प्रबंधित होते हैं तो निश्चित रूप से संसाधनों का दुरुपयोग होता है और इससे जो संसाधन हैं, वे भी खतरे की जद में आ जाते हैं और इन अक्षय संसाधनों को बहुत अधिक समय तक उपयोग के लिए नहीं बचाया जा सकेगा. लेकिन अगर हम अपनी पीढियों से प्यार करते हैं तो इन प्राकृतिक संसाधनों को बुद्धिमानी से प्रबंधित करना होगा. पिछली 2 शताब्दियों में मनुष्यों की आबादी बहुत बड़ी हो गई है. अरबों लोग संसाधनों का इस्तेमाल करते हैं, क्योंकि वे भोजन व घरों का निर्माण करते हैं, वस्तुओं का उत्पादन करते हैं और परिवहन और बिजली के लिए ईंधन जलाते हैं. हम जानते हैं कि जीवन की निरंतरता प्राकृतिक संसाधनों के सावधान उपयोग पर निर्भर करती हैं.

संसाधनों को संरक्षित करने की आवश्यकता अकसर अन्य आवश्यकताओं के साथ संघर्ष करती है. कुछ लोगों के लिए एक जंगली क्षेत्र एक खेत के लिए एक अच्छी जगह हो सकता है. एक लकड़ी कंपनी, निर्माण सामग्री के लिए क्षेत्र के पेड़ों को काटकर उनका व्यापारिक प्रयोग करती है. एक व्यवसायी भूमि पर फैक्टरी या शॉपिंग मॉल का निर्माण करना चाहेगा. आज अधिकांश लोग प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए कई तरीके ढूंढ रहे हैं. हाइड्रोपॉवर और सौर ऊर्जा एक विकल्प है. इन स्रोतों से बिजली उत्पन्न हो

सकती है और ये प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए सर्वोत्तम तरीके हैं. प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने का एक तरीका है रिसाइक्लिंग की प्रक्रिया. इसके माध्यम से प्रकृति और संसाधनों का संरक्षण हो सकता है. कई उत्पाद जैसे पेपर, कप, कार्डबोर्ड और लिफाफे पेड़ो से बनते हैं. इन उत्पादों को रीसाइक्लिंग करके आप 1 वर्ष में कई लाख पेड़ों को बचा सकते हैं. यह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए एक बढ़िया तरीका है. भविष्य में इन संसाधनों को अच्छी तरह से स्थापित करने के लिए सतत वनों की प्रथा महत्वपूर्ण हैं. वनों का रोपण सिर्फ प्राकृतिक तरीकों से ही हो सकता है. ये मनुष्य की क्षमताओं में नहीं हैं. इसके लिए जंगल में स्वाभाविक रूप से शरण के लिए पेड़ तैयार करना ताकि उनके बीजों, पत्तियों एवं तनों से नए वृक्षों का निर्माण हो सके. यह 'डेडवुड' मिट्टी को तैयार करता है और अन्य तरीकों से प्राकृतिक पुनर्जनन में सहायक होता है. हमें जीवाश्म ईंधन के संरक्षण की आवश्यकता है, हालांकि हमारे जीवाश्म ईंधन वायु प्रदूषित करते हैं. जीवाश्म ईंधन को जलाने से कार्बन डाईऑक्साइड वायुमंडल में फैलती है. जिससे ग्लोबल वॉर्ं मग में योगदान होता है. ग्लोबल वॉर्मिंग हमारे पारिस्थितिक तंत्र को बदल रहा है.

महासागर गर्म और अधिक अम्लीय होते जा रहे हैं, जो समुद्री जीवन के लिए खतरा है. समुद्र के स्तर बढ़ रहे हैं और तटीय समुदायों के लिए खतरा पैदा हो रहा है. कई क्षेत्रों में अधिक सूखे का सामना करना पड़ रहा है, जबकि अन्य बाढ़ से पीड़ित है. दुनिया के कई हिस्सों में लोग पानी की कमी को भुगत रहे हैं. भूमिगत जलस्त्रोतों, जिन्हें एक्विफेर कहा जाता है, की कमी के कारण पानी की निरंतर कमी हो रही है. सूखे के कारण वर्षा की कमी या पानी की आपूर्ति भी प्रकृति के प्रदूषण का एक मुख्य कारण है. विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का अनुमान है कि 2.6 बिलियन लोगों के लिए पर्याप्त मात्रा में पीने के लिए स्वच्छ पानी नहीं है. पीने, खाना पकाने या धोने के लिए प्रदूषित पानी का उपयोग करने के कारण हर साल 5 लाख से अधिक लोग मरते हैं. पृथ्वी की आबादी का एक-तिहाई उन क्षेत्रों में रहता है, जो पानी के तनाव का सामना कर रहे हैं. इन क्षेत्रों में से ज्यादातर विकासशील देशों में पीड़ित हैं. जैवविविधता की सुरक्षा अब बहुत जरूरी है क्योंकि, जलवायु परिवर्तन को कम करने और साथ ही साथ जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूल होने के लिए जैवविविधता महत्वपूर्ण है.

यदि हम जैवविविधता की रक्षा नहीं करते हैं, तो इसका प्रभाव ग्लोवल वॉर्मिंग के प्रभावों के रूप में और अधिक हानिकारक हो सकता है. विशेष रुप से उष्णकटिबंधीय जंगलों की जैवविविधता हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है. ये जंगल जलवायु परिवर्तन से लड़ने और किसी भी अन्य पारिस्थितिक तंत्र के प्रकार की तुलना में अधिक प्रजातियों के लिए हैं. दुसरे शब्दों में, हमारे स्वास्थ्य के लिए जैवविविधता की सुरक्षा आवश्यक है. इसके साथ ही जैवविविधता प्रकृति को संतुलित करने में मदद करती है.

गरीबी के स्तर को कम करने और जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार के लिए उच्च आर्थिक विकास आवश्यक है. उच्च आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण का अधिक से अधिक उपयोग करने की आवश्यकता होती है, जो बदले में उनकी गिरावट और अंततः क्षय का कारण बन जाती है. प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ी हुई आबादी का दबाव भी उनकी गिरावट में योगदान देता है. इसलिए उच्च विकास को स्थायी विकास तब तक नहीं कहा जा सकता है, जब तक कि इसके साथ पर्यावरण संरक्षण न हो. पर्यावरण के संरक्षण और समझदारी के इस्तेमाल पर बल देते हुए एक कुशल मांग प्रबंधन नीति भी इन संसाधनों के भंडार की आपूर्ति में वृद्धि कर सकती है. ऐसे संसाधनों के सामुदायिक प्रबंधन के माध्यम से संसाधनों को संरक्षित करने के विकल्प खोजने का प्रयास जरूरी है. विभिन्न समुदायों और उपयुक्त संस्थानों के उचित संपत्ति अधिकारों के अभाव में समुदाय प्रबंधन सफल नहीं हो सकता हैघ आज जरुरत है एसी सामुदायिक और पारिस्थितिक नीतियों की, जो पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन की भागीदारी प्रणाली में संलगन हो.

"आपदाए देती नहीं है मौका,
पर्यावरण का संरक्षण है इनसे बचने का सर्वोत्तम तरीका"

निधि चौकसे
वरिष्ठ प्रबन्धक - सूचना प्रौधोगिकी
आंचलिक कार्यालय, दिल्ली

नये साल का पहला दिन

टेलीविज़न की तेज आवाज से नींद टूटी. छोटी सी बेटी को टीवी बंद करने को कहा. बोली, “पापा रात से न्यू ईयर हो जायेगा. नये वर्ष के स्वागत में टीवी पर प्रोग्राम चल रहा है. आप भी देखिये.”

मैंने टीवी की ओर देखा तो कुछ सिने तारिकाएँ कम कपड़ों में नृत्य कर रही थीं. पहले समझा कि आँखें कम खुलने के कारण कम कपड़े दिख रहे. पूरी खोलने पर भी समान ही नजर आया. मैंने कोई न्यूज़ चैनल लगाने को कहा तो बोली, “यह न्यूज़ चैनल ही है, सीधा प्रसारण हो रहा है.”

मुझे लगा कि अभी थोड़ी देर पहले जो मुख्य समाचार में ठंढ़ के कारण मरने वालों की संख्या दस हुई की खबर आई थी शायद गलत बताया. ये टीवी वाले किसी भी प्रकार की मृत्यु को सर्दी में गिन लेते होंगे. मैंने अपना सिर कम्बल से बाहर निकाला. सिहर गया. काफी ठंढ़ है, सही में बहुत लोग मरे होंगे, फिर इन टीवी वालों को ठंढ़ क्यों नहीं लग रही है. अचानक एक से एक बड़े लोग टीवी पर आकर नये साल की शुभकामनाएँ देने लगे तब जाकर यकीन हुआ कि वाकई नया साल आ ही गया है. इतने लोग इसलिए कि किसी एक के कहने से शायद हम मानने को तैयार ही नहीं कि नया साल आ गया. फिर भी जैसे तैसे सो गया.

सुबह नींद खुली. सात ही बजे हैं. नया साल इतनी ठंढ़ में क्यों आ गया?

इतने में एक मित्र का फोन आया. “हैप्पी न्यू ईयर.”

मैंने कहा, “किस बात पर हैप्पी यार? रात में नये साल के शोर में ठीक से सो नहीं पाया. सुबह से चाय तक नहीं पी है. पानी इतना ठंढ़ा है कि शौचालय जाने का साहस नहीं हो रहा है.”

मित्र बोला, “यह वर्ष अच्छा रहेगा.”

मैंने जवाब दिया, “पहले मेरा एक दिन अच्छा बिताकर दिखाओ? साल भर का हिसाब बाद में लेंगे.”

इतने में दूध वाला आ गया. “बहनजी! जो भी पैसा देना हो दे दीजिए, हिसाब बाद में होगा क्योंकि नया साल में हम किच-किच करना नहीं चाहते.”

पत्नी ने तपाक से उत्तर दिया, “किच-किच हम करते हैं? कल के दूध में सिर्फ पानी था. कल का पैसा तो एकदम नहीं देंगे.”

“ठीक है, जितना पैसा देना है दीजिए नये साल में बुरा-भला मत कहिए.”

झल्लाते हुए पत्नी ने हिसाब कर पैसा दे दिया. थोड़ी सी सिर्फ बहस हुई, किच-किच तो हुआ ही नहीं. इतने में शोरगुल सुनकर मकान मालिक आ धमके. नया साल का पहला दिन किराया दे दें तो सालो भर पैसा आते रहेगा. उन्हें किराया भी दे दिया.

ऑफिस तो जाना ही था. पत्नी ने कार्यालय से लौटते समय एक डायरी खरीदकर लाने को कहा. जल्दी से तैयार होकर ऑफिस चला. हड़बड़ी में ठीक से जलपान भी नहीं कर पाया. सड़क पर आज तो रिक्शा भी कम है. एक रिक्शा वाले को आवाज दिया, “खाली है जी?” शायद पहचानता था.

“सर चालीस रुपये लगेंगे.”

“क्यों भाई? रोज तो 20 रुपये लगते हैं.”

“आज नया साल है सर. चालीस ही लगेंगे.”

समय देखते हुए 30 रुपये में बात बनी. अरे! यह तो शराब पीये हुए है. मुश्किल से दस कदम आगे गया होगा कि बिजली के खंभे से टकरा गया. बाल-बाल बचे लेकिन टिफिन जमीन पर गिरकर खुल गया. पूरा नाश्ता रोड पर. खाली टिफिन समेटकर भारी मन से रिक्शा पर पुन: बैठ गया. रिक्शा वाला उठकर पुन: रिक्शा खींचते हुए बोला, “कुछ नहीं हुआ सर. चलिये तुरत पहुँचा देते हैं.”

क्या हुआ यह मैंने मन ही मन सोचा और दोपहर के भोजन की चिंता होने लगी क्योंकि कार्यालय के पास कोई दुकान नहीं है.

कार्यालय में बॉस ने पहुँचते ही बुला कर कहा कि आज नया साल है लोग छुट्टी समझ कर कम आयेंगे कुछ दूसरे विभाग का भी लंबित फाइल निपटा दीजिए. शाम तक लगा रहा. काम में थोड़ा ज्यादा समय लग गया. दिन का भोजन नहीं मिलने से भूख तेज लगी थी, लौटते वक्त पत्नी के लिए एक डायरी भी खरीद ली. रास्ते भर सोचते रहा कि मैं तो कभी डायरी नहीं लिख पाया, चलो अच्छा है पत्नी तो लिखती है. डायरी तो सिर्फ बड़े, महान लोग लिखते हैं अर्थात मैं एक महान पत्नी का पति हूँ, वाह. घर लौटने पर पता

चला कि शाम में नाश्ता का कोई प्रबंध नहीं है. मन ही मन सोचने लगा कि नया साल का पहला दिन है ज्यादा चीजें बनेंगी इसलिए एक बार सीधे भोजन ही मिलेगा. ठीक है यही ईश्वर की इच्छा है तो यही सही. शाम होने के साथ सर्दी बढ़ने लगी, बिस्तर पर जाकर लेट गया. बगल में पिछले साल की डायरी पड़ी थी. अरे! यह तो श्रीमतीजी की डायरी है. नहीं, दूसरे की डायरी नहीं पढ़नी चाहिए. तो क्या पत्नी दूसरी है? भूखे व्यक्ति को सोचने का इतना सामर्थ्य कहाँ? उल्टा लूँ तो सीख लूँगा कि डायरी में लोग क्या और कैसे लिखते हैं जिससे वे बड़े बनते हैं एवं बाद में वह किताब बनकर छपती है. कौतूहलवश पलट लिया.

1 जनवरी-

आज "ये" डायरी खरीद कर लाये. मैंने बहुत जगह फोन कर नये साल की बधाई दी, आज का ही पोस्टपेड मोबाइल का बिल लगभग एक हजार रुपये का आयेगा. दूध वाले का हिसाब, पेपर वाले का हिसाब कर पैसा दे दिया. धोबिन से कपड़ों की गिनती में बहस हो गयी वह ज्यादा कपड़े बता रही थी. अंत में डायरी में कपड़े का हिसाब लिखा दिखाने पर मानी. आज ही गैस सिलेंडर खत्म हो गया, मैंने आज नये साल पर भी पुरानी साड़ी पहनी. रोज की तरह "ये" सवेरे ही सो गये. क्या करूँ जब से यह नया टीवी सीरियल देर रात शुरू हुआ है समय ही नहीं मिलता. पसन्द का सीरियल ही अब इतनी रात में दिखाता है इसमें हम क्या कर सकते हैं.

2 जनवरी-

आज गेहूँ नहीं पिसवा पाये. छोटकी को चाली की दवाई खिलाए.

शाही हलवा बनाने का तरीका- सामान 200 ग्राम सूजी... आदि-आदि.

8 जनवरी-

भजन- जय-जय भैरवी असुर भयावनी...

आज स्कूल फीस रुपये 550 लगा.

सीरियल में नायिका बॉबीकट ब्लाउज़ पहनी थी. 25 दिसम्बर को राजू को 200 रुपये पैंचा दिये.

इतने में श्रीमती आ गयी. मेरे हाथ से डायरी लेते हुए बोली, "दूसरे की डायरी नहीं पढ़नी चाहिए. प्रतिदिन नहीं लिख पाती हूँ, आठ-दस दिनों में एक दिन पिछला सब लिख लेती हूँ."

मैंने पूछा, "ऐसे ही डायरी लिखी जाती है? डायरी में लोग जीवन में घटित घटनाओं पर अपना विचार, अपना अनुभव लिखते हैं."

भड़क गयी. बोली, "हमारे जमाने में नया साल अलग दिन आता था और हमलोग नहा धोकर बड़े-बुजुर्गों का पैर छूकर आशीर्वाद लेते थे. कम कपड़ों में नंगा नाच नहीं करते थे. यह विदेशियों का नया साल है. अंग्रेज हमलोगों को नया साल और डायरी पकड़ा गये. एक आम आदमी को डायरी नहीं चाहिए. अगर देखा-देखी ले भी लिया तो क्या लिखेगा? एक सामान्य आदमी का क्या विचार? क्या मूल्य? इसके विचार को कौन समझेगा या इसके विचार की आवश्यकता ही क्या है? आम आदमी रखे अपने विचार एवं अपने अनुभव अपने पास. लिखकर करेगा क्या? मैं इसलिए लिखती हूँ कि मेरी डायरी मेरा मनोरंजन करती है. खुद लिखती हूँ, कुछ साल बाद खुद पढ़ती हूँ एवं खूब हँसती हूँ. स्वयं सोचती हूँ कि क्या यह डायरी है? इसे ही डायरी लिखना कहते हैं? प्रति माह महंगी पत्रिका नहीं खरीद सकती इसलिए इसे ही पढ़ती हूँ, आनंद आता है, बहुत शान्ति मिलती है." कह कर चली गयी.

मैं सोचने लगा कि वह क्या कह कर गयी. बड़े लोगों की बातें बड़े लोग ही समझेंगे, डायरी की बातें मैं क्या समझूँगा. नया वर्ष है भोजन जल्दी मिल जाये तो आराम से सो जायें. इतने में बेटी ने भोजन के लिए बुलाया. अरे! आज तो लिट्टी-चोखा है. बेटी ने बताया कि काफी ठंढ़ थी. मम्मी को नये साल में भोजन बनाने का मन नहीं था इसलिए हाथ सेकने वाले अलाव पर लिट्टी बना ली. सत्तू भी कम था, बगल की दुकान नये साल के नाम पर खुली नहीं इसलिए बहुत कम-कम सत्तू देकर लिट्टी बनी है. दादी लहसुन प्याज खाती नहीं इसलिए इसमें यह सब भी नहीं दिया गया. खाने पर लगा कि घर में सत्तू रहा होगा यह शोध का विषय था. खैर, किसी प्रकार भोजन कर सुनहरे सपनों में खो गया.

वी.वी. झा
क्षेत्रीय प्रमुख, कूचबिहार

समय के माध्यम से एक यात्रा : सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया का 112-वर्षीय गौरवमयी इतिहास

औपनिवेशिक भारत के अंगारों में जन्मे हमारे बैंक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने स्वदेशी, नवाचार, लचीलेपन और राष्ट्रीय सेवा का ताना-बाना बुना है, इसके धागे 1911 तक फैले हुए हैं. यह कथा महज वित्तीय आंकड़ों से परे है. यह एक बैंकिंग संस्थान के विकास भारतीय वित्तीय परिदृश्य में एक नवजात सपने से लेकर विशाल वट वृक्ष तक के विकास को दर्शाती है.

दृष्टि से वास्तविकता तक: स्वतंत्रता की चिंगारी (1911-1920)

दूरदर्शी उद्योगपति सर सोराबजी पोचखानवाला ने भारतीय बैंकिंग परिदृश्य में एक शून्य देखा : भारतीयों द्वारा स्वामित्व और प्रबंधित संस्थानों की कमी. इस दृष्टिकोण से प्रेरित होकर, उन्होंने 21 दिसंबर, 1911 को सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की चिंगारी प्रज्वलित की. प्रतिष्ठित सर फ़िरोज़शाह मेहता के नेतृत्व में नवोदित बैंक को एक कठिन लड़ाई का सामना करना पड़ा. इसने ब्रिटिश स्वामित्व वाले बैंकों के आधिपत्य को चुनौती दी, कलकत्ता क्लियरिंग हाउस की बाधाओं को तोड़ दिया और अपना रास्ता बनाया.

प्रारंभ में, हमारे बैंक ने नवप्रवर्तन को अपनाया. 1920 में, यह एक समर्पित जनसंपर्क अधिकारी नियुक्त करने वाला पहला भारतीय बैंक बन गया, एक साहसिक कदम जिसने पारदर्शिता और सार्वजनिक जुड़ाव के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित किया. संचार पर यह ध्यान अमूल्य साबित हुआ, जिससे ग्राहकों के बीच विश्वास बढ़ा और एक मजबूत प्रतिष्ठा बनी.

विस्तार और उथल-पुथल: समय से प्रभावित एक बैंक (1920-1940)

1920 के दशक में हमारे बैंक के पंख खुल गए. इसने सक्रिय रूप से अपने शाखा नेटवर्क का विस्तार किया, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, वित्तीय समावेशन में अग्रणी बन गया. इस कार्यशैली ने शहरी और ग्रामीण भारत के बीच अंतर को पाटने और अधिक न्यायसंगत वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

हालाँकि, यह यात्रा तूफानों से रहित नहीं थी. महामंदी, एक वैश्विक आर्थिक संकट, ने युवा बैंक को अपनी चपेट में लेने का खतरा पैदा कर दिया. फिर भी, हमारे बैंक ने उल्लेखनीय लचीलेपन का प्रदर्शन किया. इसने वित्तीय उथल-पुथल का सामना किया, अपनी रणनीतियों को अपनाया और कठिनाई के दौरान अपने ग्राहकों का समर्थन किया. द्वितीय विश्व युद्ध, विशाल वैश्वि उथल-पुथल का एक और दौर, जिसने बैंक की क्षमता का और अधिक परीक्षण किया. युद्ध के प्रयासों के वित्तपोषण और कठिन अवधि के दौरान आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए, हमारी बैंक एक बार फिर चुनौती पर उठ खड़ी हुई.

स्वतंत्रता की सुबह और राष्ट्रीयकरण: भारत की नियति के अनुरूप एक बैंक (1950-1960)

1947 में भारत की आज़ादी ने हमारे बैंक के लिए एक नया अध्याय शुरू किया. बैंक देश के विकास का एक महत्वपूर्ण इंजन बन गया. इसने कृषि से लेकर इस्पात तक विभिन्न उद्योगों को सक्रिय रूप से वित्तपोषित किया, जिससे देश की आर्थिक वृद्धि को गति मिली. राष्ट्रीय विकास के प्रति हमारे बैंक की प्रतिबद्धता महज़ वित्तीय सहायता से भी आगे तक फैली हुई है. इसने खुद को नए स्वतंत्र भारत की आकांक्षाओं के साथ जोड़ते हुए, सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों और पहलों का सक्रिय रूप से समर्थन किया.

1969 में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ. भारत सरकार ने हमारे बैंक का राष्ट्रीयकरण कर इसे सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकिंग प्रणाली के अंतर्गत ला दिया. इस कदम का उद्देश्य व्यापक वित्तीय पहुंच सुनिश्चित करना और बैंक को देश के विकास लक्ष्यों के साथ अधिक निकटता से एकीकृत करना है. जहाँ राष्ट्रीयकरण ने चुनौतियाँ लायीं, वहीं इसने लोगों के लिए विकास और सेवा के नए रास्ते भी खोले.

आधुनिकीकरण और वैश्विक आकांक्षाएँ: समय के साथ विकसित होता एक बैंक (1970-वर्तमान)

हमारे बैंक ने बदलाव की बयार को स्वीकार कर लिया. जैसे-जैसे

प्रौद्योगिकी ने वित्तीय परिदृश्य में क्रांति ला दी, बैंक ने भी इसे अपना लिया. इसने एटीएम, इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग की शुरुआत की, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि इसकी सेवाएं ग्राहकों के लिए सुलभ और सुविधाजनक बनी रहें. इस डिजिटल परिवर्तन ने न केवल ग्राहक अनुभव को बढ़ाया बल्कि हमारे बैंक को भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में अग्रणी के रूप में स्थापित किया.

बैंक की महत्वाकांक्षा उसकी सीमाओं से परे तक फैली हुई थी. इसने विदेशी शाखाएं और सहायक कंपनियां स्थापित कीं, अपने वैश्विक पदचिह्न का विस्तार किया और दुनिया के साथ भारत के आर्थिक एकीकरण में भूमिका निभाई. हमारे बैंक की अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति ने न केवल उसके ब्रांड को मजबूत किया, बल्कि वैश्विक वित्तीय रुझानों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि भी प्रदान की, जिससे उसे आगे अनुकूलन और नवाचार करने की अनुमति मिली.

सेवा और विकास की विरासत: हमारे बैंक का स्थायी प्रभाव

आज, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया दूरदर्शिता, लचीलेपन और सेवा के प्रति प्रतिबद्धता की शक्ति के प्रमाण के रूप में खड़ा है. इसने लाखों भारतीयों के लिए वित्तीय जीवनरेखा के रूप में काम किया है, व्यक्तियों और व्यवसायों को समान रूप से सशक्त बनाया है. हमारे बैंक की यात्रा भारत की आर्थिक वृद्धि, राष्ट्रीय विकास के प्रति इसकी प्रतिबद्धता और अधिक समावेशी और समृद्ध भविष्य के लिए इसकी आकांक्षाओं की कहानी से जुड़ी हुई है.

जैसे-जैसे बैंक भविष्य की ओर देखता है, इसकी विरासत एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है. हमारे बैंक अपने संस्थापकों की अटूट भावना और अपने ग्राहकों और राष्ट्र की भलाई के प्रति गहरी प्रतिबद्धता से प्रेरित होकर नवाचार, अनुकूलन और सेवा करना जारी रखती है. 112 साल की इस यात्रा का अगला अध्याय निरंतर विकास, सेवा और नवाचार में से एक होने का वादा करता है, जो भारत के वित्तीय परिदृश्य के एक स्तंभ के रूप में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के स्थान की पुष्टि करता है.

देश में प्रथम :

यह कथा हमारे बैंक की समृद्ध छवि की एक झलक मात्र है. भारतीय बैंकिंग उद्योग में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने कई महत्वपूर्ण योजनाओं का बीड़ा उठाया है, जिनमें से कुछ ने देश के वित्तीय परिदृश्य को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. यहाँ कुछ ऐसी योजनाओं की चर्चा है जो हमारे बैंक द्वारा पहली बार शुरू की गई थीं:

1. गृह बचत सुरक्षा योजना (1911): यह योजना बचत की आदत विकसित करने के उद्देश्य से शुरू की गई थी, विशेष रूप से ग्रामीण और निम्न आय वाले वर्गों के लिए. इसमें घर पर एक लौह तिजोरी रखने की सुविधा शामिल थी, जो बचत को सुरक्षित और सुलभ बनाती थी.
2. महिला विभाग (1920): हमारा बैंक उस समय के समाज में महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए सबसे पहले एक अलग महिला विभाग स्थापित करने वाला बैंक था. यह विभाग महिलाओं को बैंकिंग सेवाओं तक आसान पहुंच प्रदान करता था और उनकी वित्तीय साक्षरता बढ़ाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करता था.
3. सार्वजनिक जनसंपर्क अधिकारी (1920): हमारा बैंक भारतीय बैंकिंग उद्योग में सार्वजनिक जनसंपर्क अधिकारी की नियुक्ति करने वाला पहला बैंक था. यह एक दूरदर्शी कदम था जिसने बैंक और उसके ग्राहकों के बीच पारदर्शिता और विश्वास को बढ़ावा दिया.
4. ग्रामीण शाखा विस्तार (1920): हमारे बैंक ने ग्रामीण क्षेत्रों में शाखाओं का एक व्यापक नेटवर्क स्थापित कर वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई. इससे ग्रामीण आबादी को बैंकिंग सेवाओं तक आसान पहुंच मिली और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली.
5. सेंट्रल कार्ड (1960): हमारे बैंक ने भारत में अपना खुद का क्रेडिट कार्ड, सेन्ट्रल कार्ड, जारी करने वाला पहला भारतीय बैंक था. इसने देश में उपभोक्ता वित्त के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया और बैंकिंग सेवाओं के दायरे को बढ़ाया.

ये कुछ ऐसी योजनाएं हैं जिन्हें हमारे बैंक ने भारतीय बैंकिंग उद्योग में पहली बार शुरू किया था. इन योजनाओं ने न केवल बैंक के लिए बल्कि पूरे देश के लिए भी महत्वपूर्ण लाभ लाए हैं. हमारे बैंक ने नवाचार और विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को लगातार जारी रखा है और आने वाले वर्षों में भी भारतीय बैंकिंग उद्योग में अग्रणी भूमिका निभाने की उम्मीद है.

ऋषि मोहन
वरिष्ठ प्रबंधक(वसूली)
क्षेत्रीय कार्यालय, ग्वालियर

दिनांक 21.12.2023 को केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित बैंक के 113वें स्थापना दिवस की कुछ झलकियां

जो व्यक्ति अपने मार्ग से भटक जाता है, वह विनाश के रास्ते पर निकल जाता है.

सतर्कता जागरुकता सप्ताह

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत दिनांक 30.10.2023 को आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद में आयोजित विचार गोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करती हुई अंचल प्रमुख सुश्री कविता ठाकुर..

आंचलिक कार्यालय चंडीगढ़ द्वारा सतर्कता जागरुगता सप्ताह मनाया गया. इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री शीशराम तुन्दवाल तथा अन्य स्टाफ सदस्यों द्वारा जागरुकता रैली निकाली गई.

मुंबई में आयोजित सतर्कता जागरूकता कार्यक्रम में मंच पर श्री सुनील अरोड़ा, सीवीओ; श्री संजय भाटिया, उप लोकायुक्त, महाराष्ट्र राज्य; श्री अश्वनी धींगड़ा, अंचल प्रमुख, एमएमज़ेडओ तथा कार्यक्रम का संचालन करते हुए सुश्री छाया पुराणिक, मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा).

सतर्कता जागरूकता के अवसर पर आंचलिक कार्यालय चेन्नई द्वारा दिनांक 02.11.2023 को वाकथन का आयोजन किया गया. इसमें श्री अरविंद कुमार, अंचल प्रमुख, श्री एस के श्रीवास्तव, क्षेत्रीय प्रमुख, श्री धर्मेंद्र कुमार, सहायक महाप्रबंधक, श्री प्रदीप पाटील, सहायक महाप्रबंधक एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

आंचलिक कार्यालय भोपाल द्वारा आमजनों को सतर्कता के प्रति जागरुक करने के लिए सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन किया गया.

सतर्कता जागरुकता सप्ताह के दौरान आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा आमजनों को सतर्कता के प्रति जागरुक करने के लिए अंचल के स्टाफ सदस्यों द्वारा वाकथन कार्यक्रम का आयोजन किया गया.

दिनांक 30.10.2023 से 05.10.2023 तक हैदराबाद अंचल में सतर्कता सप्ताह मनाया गया. ग्राहकों तथा जनता में सतर्कता के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से रैली निकाली गई तथा स्टाफ सदस्यों को सतर्कता संबंधी की जानकारी दी गई.

आंचलिक कार्यालय दिल्ली में आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर अंचल प्रमुख श्री जे एस साहनी, सेंट्रलाइट्स को शपथ दिखाते हुए। उनके साथ दिखाई दे रहे हैं सतर्कता अधिकारी श्री आर एन दुबे, उप अंचल प्रमुख श्री पी के समांतराय, उप महाप्रबंधक श्री के के कला, सहायक महाप्रबंधक श्रीमती मनीषा कौशिक एवम अन्य अधिकारीगण.

'आंचलिक कार्यालय लखनऊ द्वारा दिनांक 30 अक्तूबर 2023 से 05 नवम्बर 2023 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया. इस दौरान जन सामान्य की सतर्कता जागरूकता के लिए अंचल प्रमुख श्री ए. के. खन्ना के नेतृत्व में स्टाफ सदस्यों द्वारा हजरतगंज, लखनऊ में एक रैली निकाली गई.

दिनांक 10.10.2023 को पटना में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर टाउन हॉल बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर, मुख्य अतिथि, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री सुनील अरोड़ा, अंचल प्रमुख श्री डी पी खुराना , सीआइए, श्री दिनेश पंत, क्षेत्रीय प्रमुख, श्री आर आर सिन्हा एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

आंचलिक कार्यालय कोलकाता द्वारा सतर्कता जागरुगता सप्ताह मनाया गया. इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री अजय कुमार सिंह द्वारा सभी स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया गया.

आंचलिक कार्यालय पुणे द्वारा सतर्कता जागरुगता सप्ताह मनाया गया. इस अवसर पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया.

विद्वानों की संगति जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है - रामतीर्थ

अन्य गतिविधियाँ

दिनांक 21 दिसम्बर 2023 को बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर आंचलिक कार्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव. दिल्ली अंचल प्रमुख श्री जे एस साहनी एवं श्री पी के सामंतराय, उप अंचल प्रमुख.

आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़ में स्टाफ सदस्यों के साथ बैठक में सहभागिता करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही.

अहमदाबाद अंचल प्रमुख सुश्री कविता ठाकुर द्वारा मेरी माटी मेरा देश अभियान के अंतर्गत एशिया के सबसे बड़े सिविल अस्पताल के सर्जिकल ऑनकोलोजी के प्रमुख एवं प्राध्यापक डाक्टर शशांक जे.पंडया जी का सम्मान किया गया.

स्वच्छता पखवाड़ा 2023 के अंतर्गत आंचलिक कार्यालय चेन्नई के तत्वावधान में मरीना बीच पर अंचल प्रमुख श्री अरविंद कुमार के नेतृत्व में सफाई अभियान का आयोजन किया गया. इसमें सभी स्टाफ सदस्यों ने बढ़ चढ़कर सहभागिता किया.

दिनांक 01.10.2023 को आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा स्वच्छता अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम के द्वारा गुवाहाटी नगर में स्वच्छता कार्य के साथ-साथ आमजनों को स्वच्छता के प्रति जागरुक भी किया गया.

आँचलिक कार्यालय हैदराबाद से दिनांक 26.11.2023 को संविधान दिवस के अवसर पर स्टाफ सदस्यों के द्वारा शपथ ग्रहण की गयी.

बैंक के 113वें स्थापना दिवस के अवसर पर मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए अंचल प्रमुख श्री अश्वनी धींगड़ा.

113वें स्थापना दिवस के अवसर पर कोलकाता के अंचल प्रमुख श्री अजय कुमार सिंह एवं अन्य.

आंचलिक कार्यालय, पटना द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत बैंक के स्वच्छता दूत को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर अंचल प्रमुख, श्री डी.पी. खुराना, क्षेत्रीय प्रमुख, श्री आर.आर. सिन्हा तथा अन्य स्टाफ सदस्य.

दिनांक 19.12.2023 को स्टाफ सदस्यों के सहयोग से लखनऊ में 'सीरोज हेंगआऊट' के माध्यम से जरूरतमंदो के लिए वस्त्रों का वितरण किया गया. चित्र में श्री ए.के. खन्ना, अंचल प्रमुख एवं श्री आर.के. केरकेट्टा, स.म.प्र. एवं अन्य बैंक अधिकारियों के साथ एवं 'सीरोज हेंगआउट कैफे लखनऊ के प्रबंधक श्री प्रमोद कुमार एवं अन्य.

आंचलिक कार्यालय पुणे द्वारा बैंक के 113वें स्थापना दिवस के अवसर पर जरुरतमंदों के लिए वस्त्र वितरण किया गया.

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है.

राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023-24 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 100%	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 90%	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55% 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	50%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	 वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए		

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "सेंट्रल" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सत्यमेव जयते

हमारा संविधान एक जीवंत दस्तावेज़ है, जो स्वतंत्रता, न्याय और समानता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता की निरंतर याद दिलाता है।

आइए हम इसके सिद्धांतों की रक्षा करें और उन्हें बनाए रखें

www.centralbankindia.co.in